बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका

बालप्रहरी

जनवरी – मार्च, 2021

मूल्य 25 रुपए

होली आई

होली आई

● डॉ. शमीम देवबंदी

होली आई होली आई
रंग बिरंगी होली आई।
काले पीले चेहरे लेकर,
हुड़दंगों की टोली आई।
सबको रंगा एक रंग में,
गुलाल लेकर भोली आई।
रंग बिरंगा शोर शराबा
पिचकारी की गोली आई।
पकवान पकौड़े और गुजिया
लेकर भरकर झोली आई।
सब बच्चों की टोली आई,
बुरा न मानो होली आई

- 326/5 लाल मस्जिद देवबंद,
उ.प्र.- 347554
मोबाइल - 9219767560

होली है बोलो होली खेलो

● ओम उपाध्याय

रंगों का अपना रंग है,
रंगों का अपना ढंग है।
होली है बोलो, होली खेलो,
अपनी उमर वालों से खेलो।
रंग बिरंगे रंगों से खेलो,
होली है, बोलो, होली खेलो।
जबरन ना रंग लगाओ,
रंग लगा, गले लग जाओ,
होली है, बोलो, होली खेलो।
मेल मिलाप का त्यौहार,
प्रेम प्यार इसका आधार।
होली है, बोलो, होली खेलो।

- बी-107, प्रथम तल, स्टर्लिंग स्काय लाइन, इंदौर, म.प्र.,मो.- 9407515174

आई है भइया होली रे!

● राजेंद्र निशेश

हल्ला-गुल्ला धूम मचाती,
रंगों की बौछारें लाती,
आई है भइया होली रे!
आओ रामू, आओ श्यामू,
खूब मजे से गाओ मिलकर,
रंग उड़ाओ, गले लगाओ,
सब को तुम अपनाओ मिलकर।
वैर-द्वेष का भाव मिटाती,
खुशियों की सौगातें लाती,
आई है भइया होली रे!
कीचड़ मत फेंको तुम भाई,
अच्छे बच्चे तुम सारे हो,
नन्हें-मुन्ने थोड़े नटखट,
मां की आंखों के तारे हो।
मीठे-मीठे सपने जगाती,
सब के मन को भा-भा जाती,
आई है भइया होली रे।

- 2698, सैक्टर 40-सी, चंडीगढ़
मो.- 9417108632

फिर आई होली

● डॉ. ब्रजनंदन वर्मा

प्रेम - मुहब्बत बना रहे,
ये ही जीवन का है सार,
फिर आई होली इस बार।
रंग भरे गुब्बारे चलते,
लाल, पीली, रंगों की धार।
एक दूसरे से गले मिलते,
बढ़ते आपस के हैं प्यार।
इस बार बच्चो तुम कर दो,
खेलना कीचड़ से इंकार।
फिर आई होली इस बार।
मन के सारे द्वेष भुलाकर,
रंग उड़ाओ बेसुमार।
गाल - गाल गुलाल लगाओ।
रंगों का आया है त्यौहार।
बच्चो तुम कभी ना भूलो,
अपने जीवन में शिष्टाचार।
फिर आई होली इस बार।

- जगदीशपुरी, लेन 3 रमना, मुजफ्फरपुर (बिहार)
मो.- 9470815324

रंग-बिरंगी दुनिया

● डॉ. अल्का अग्रवाल

तितली इतनी रंग - बिरंगी,
कोयल इतनी काली।
हरे-हरे पत्तों से देखो
लदी हुई हर डाली।
लाल-गुलाबी, नीले-पीले,
फूल खिल रहे हैं बागों में।
घास हरी है नीला पानी,
झील, नदी, कुओं तालों में।
सूरज की है धूप सुनहरी,
नभ का नीला-नीला रंग।
इंद्रधनुष में तो होते हैं,
अद्भुत पूरे सातों रंग।
पूरी दुनिया सजी हुई है,
सुंदर-सुंदर रंगों से।
रंग भरे कैसे किसने,
मैं सोच रही हूं बरसों से।

- जानकी बिहार अपार्टमेंट, शिव मार्ग जयपुर (राज.)
मो.- 9314114543

RNII UTTHIN/2004/18604

वर्ष-17 जनवरी-मार्च, 2021 अंक-01

संरक्षक :
डॉ. सरस्वती बाली
डॉ. भैरूंलाल गर्ग
श्री नवीन पाठक
श्री विपिनचंद्र जोशी
डॉ. जे.एस. मेहता
श्रीमती मंजू पांडे 'उदिता'
श्री सुरेंद्रसिंह नेगी
श्री मोहनलाल टम्टा
डॉ. सुनीता रतूड़ी
डॉ. आर.सी.रस्तोगी
डॉ. बी.पी. साह
श्री राजकुमार जैन 'राजन'
श्री के.पी.एस.अधिकारी
डॉ. सलमा जमाल
श्रीमती श्यामा माहेश्वरी
डॉ. दीपा कांडपाल
श्री रतनसिंह किरमोलिया
श्री नीरज पंत
श्री प्रकाश जोशी
सुश्री विनीता जोशी
श्रीमती विमला जोशी 'विभा'
डॉ. कामना सिंह
श्री महेन्द्र सिंह राणा
सुश्री प्रभा किरण जैन
सुश्री कमला मेनन
डॉ. दीक्षा बिष्ट
डॉ.(मेजर) शक्ति राज
श्री दयानंद आर्य
श्रीमती पुष्पा पाल
श्री रविकांत खंडेलवाल
श्री संजय प्रजापति
श्री श्याम पलट पांडेय
श्री हेमचंद्र पंत

संपादक : उदय किरौला

संपादकीय सहयोग: • प्रमोद तिवारी • संतोष किरौला

मुखपृष्ठ : विजय कुमार, हर्षिल

कला पक्ष : मनोज विनवाल

इंटरनेट संस्करण: वेद प्रकाश

सदस्यता शुल्क

संरक्षक सदस्यता	:	5,000 रु.
आजीवन सदस्यता	:	2,000 रु.
3 वर्ष का शुल्क	:	300 रु.
एक प्रति	:	25 रु.

बालप्रहरी खाता संख्या : 0962000101357002
आई.एफ.सी कोड : पी.यू.एन.बी. 0096200
बैंक नाम : पंजाब नेशनल बैंक, अल्मोड़ा

संपर्क : संपादक बालप्रहरी : दरबारीनगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601
मो.9412162950, 9557619107

E-mail. : balprahri@gmail.com
Web.: www.balprahri.com
Face book- udai kiroula balprahri
Whats App - 9412162950

बच्चों के नाम पाती 02
आपके पत्र 03
बच्चों की कलम से 05

कहानी :
गिरगिट और चार चक्र — पूर्णिमा पांडेय 23
यही मुझे दे दो — डॉ. शकुंतला कालरा 27
गुड़िया की समझदारी — मोतीप्रसाद साहू 29
कक्षा में प्रथम — हरदान हर्ष 33
रागिनी की बुद्धिमानी — डॉ. हरिसिंह पाल 36
ईमानदारी का इनाम — रामलखन प्रजापति 'प्रतापगढ़ी' 37
शानदार पेंटिग — भगवतप्रसाद पांडेय 39
लौट आई हरियाली — डॉ. दर्शनसिंह आशट 41
नन्हा वैज्ञानिक — डॉ. रमेश आनंद 45

कविता :
कुमाउनी/गढ़वाली कविता — डॉ.विष्णुदत्त शास्त्री/प्रीतम अपछ्याण 21
पर्यावरण/सूरज दादा/मेरा भाई — हंसा बिष्ट/मीरासिंह 'मीरा'/घनानंद पांडेय 'मेघ' 26
नई सोच/सूरजदादा/एक पहेली — डॉ.सुरेंद्र सेमल्टी/श्यामपलट पांडेय/राजपालसिंह गुलिया 31
लाल टमाटर/सरकस/बंदर राजा — लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'/शकुंतला शर्मा/प्रेमसिंह पापड़ा 32
टेलीविजन/फूल — अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'/सुरेशचंद्र सर्वहारा 40
सूरज/मेरी मां/किसान — मनमोहन अभिलाषी/प्रदीप बहराइची/कौशल पांडेय 40
सुनो रे भाई/बंदर बोला — डॉ. दलजीत कौर/हितेशकुमार शर्मा 46
बारिश/मेरे दादाजी/गणतंत्र — प्रज्ञा गुप्ता/डॉ.राजेंद्रप्रसाद 'मधुबनी' 46
आया बसंत/गणतंत्र — डॉ. रामनिवास 'मानव'/अरशद परवेज 46

जानकारी :
बालसाहित्य की थाती : श्री शिवअवतार रस्तोगी 'सरस'- श्रीमती हेमा तिवारी 04
इंजीनियर होती है दीमक — कृपालसिंह शीला 26
संवाद : बोलो देवीदा — देवेंद्र मेवाड़ी 30
चंद्रशेखर आजाद — संतोष किरौला 38
पक्षी जो उड़ नहीं सकता — डॉ. महेंद्रप्रताप पांडेय 'नंद' 38
ऐसा क्यों होता है? — डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल 43
टमाटर की कहानी — डॉ. हेमंत कुमार 45

प्रतियोगिताएं:
निबंध प्रतियोगिता-37 15
सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-66 18
कविता लिखो प्रतियोगिता-64 16
कहानी लिखो प्रतियोगिता-64 19

अन्य:
सुडोकू 16
क्या आप जानते हैं? 18
आप कितने सूक्ष्मदर्शी है 20
अंक पहेली 36
बालप्रहरी समाचार 47
चुटकुले 17
पहेलियां/अनमोल वचन 20
पुस्तक समीक्षा 22
रंग भरो 42
पुस्तक प्राप्ति/खोजबीन 48

बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा की ओर से प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक उदय किरौला द्वारा प्रकाश पब्लिकेशन, हल्द्वानी, उत्तराखंड से मुद्रित तथा दरबारी नगर, पूर्वी पोखरखाली, अल्मोड़ा (उत्तराखंड) से प्रकाशित। संपादक - उदय किरौला

बच्चों के नाम पाती

दोस्तो,

गांव के बच्चे गोलदराणी पूज रहे थे। सारे बच्चे अपने-अपने घरों से आटा, तेल, गुड़ व अन्य सारा सामान ले गए थे। जैसे बड़े लोग मंदिरों में पूजा करते हैं। उसी तरह बच्चे भी गोलदराणी पूजते हैं। बड़े लोग पूजा के समय बलि बकरे और मुर्गी की बलि देते हैं। बच्चे किसी चिड़िया को पकड़कर उसकी बलि देते हैं। मान्यता है कि गोलदराणी पूजने से बारिश होती है। इसलिए इस पूजा में घर के बड़े लोग भी बच्चों की मदद करते हैं।

लेकिन इस बार गोलदराणी पूजने के बाद भी बारिश नहीं हुई। गरमी में पानी के लिए हाहाकार मच गया था। पीने के लिए तक पानी दूर से लाना पड़ रहा था। खेत व क्यारियों की क्या कहें जानवरों के पीने तक पानी नहीं मिल पा रहा था। सरकारी नल में भी पानी नहीं आ रहा था। नल में भी पानी कहां से आए। मूल जल स्रोत यानी नदी में भी पानी नहीं था।

पानी की समस्या को लेकर प्रधान देवीदत्त ने बैठक बुलाई। सबसे बुजुर्ग किशन काका ने कहा, "सब लोग खाली बरतन लेकर पानी के दफ्तर का घेराव करो। तब भी पानी नहीं आता है तो डी.एम. आफिस चलो। सरकार कुछ न कुछ तो जरूर करेगी।"

स्कूल के प्रधानाध्यापक भूपालसिंह मास्साब ने कहा, "पानी वाला विभाग हो या डी.एम. साहब। यहां कोई पानी नहीं ला सकता है। जब पानी का स्रोत ही सूख गया है। तब पानी कहां से आएगा। डी.एम. साहब के पास जाओगे। तो वे कह सकते हैं कि चलो गगास नदी से टेंकर से पानी पहुंचा दो। सड़क तक पानी आ भी गया। सड़क से तीन किलोमीटर दूर पानी हमारे गांव में कौन ला सकता है।

भूपालसिंह मास्साब ने कहा, "आज हमारे गांव में पानी नहीं है। इस सबके लिए हम जिम्मेदार हैं। नौले व जल स्रोत के पास बांज व उत्तीस दूसरी चौड़ी पत्ती वाले पेड़ थे। हम सबने इन पेड़ों को काट दिया है।"

"अरे ये मास्टर सठिया गया है। नेतागिरी कर रहा है। अगले साल रिटायर होने के बाद सभापति बनना चाह रहा है। इसलिए भाषणबाजी कर रहा है। यहां पानी के लिए हाहाकार मचा है। ये गड़े मुर्दे उखाड़ रहा है। पेड़ कट गए तो कट गए। भाषण से तो पानी नहीं आएगा न।" गांव के पुराने सभापति मदन लाल ने कहा।

प्रधान देवीदत्त ने कहा, "भूपालसिंह मास्साब ठीक कह रहे हैं। देखो हमारे सामने वाले गांव में इस गरमी में भी पानी है। वहां के लोग हर साल गधेरे में पेड़ लगाते हैं। जहां पेड़ होते हैं। वहां की धरती बारिश के समय पानी को जमीन के अंदर सोख लेती है। जहां पेड़ नहीं होते वहां बारिश का पानी सीधे बह जाता है।"

भूपालसिंह मास्साब ने हंसते हुए कहा, "हंसी मजाक की बात नहीं है। हमारे पूर्वज बताते थे कि पहले बरसात तथा जाड़े में कई दिनों तक बारिश होती थी। अब सड़क निर्माण तथा दूसरे विकास कार्यों में पेड़ों का अंधाधुंध कटान हो रहा है। पेड़ नहीं होने से पर्यावरण दूषित हो रहा है। मौसम परिवर्तन हो रहा है। अब भी समय है। हमें जागना होगा। पेड़ लगाने होंगे। पेड़ लगाने के साथ ही उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी भी लेनी होगी।"

कक्षा 8 में पढ़ने वाला दीपक बोला, "ताऊ जी! हमने गोलदराणी भी पूज दी। उसके बाद भी बारिश नहीं हुई है।"

भूपालसिंह मास्साब ने कहा, "दीपक बेटा! मुझे गर्व है कि मेरे गांव के बच्चे एकजुट होकर रास्तों की सफाई करते है। क्रिकेट टूर्नामेंट कराते हैं। दूसरे गांव के बच्चे जहां नशा करते हैं। व्यसनों के लिए एकजुट होते हैं। तुम लोग गांव में शौचालय बनाने के लिए भी डी.एम. से मिले। मुझे बहुत अच्छा लगा। परंतु पानी का एक ही विकल्प है कि हमें पेड़ लगाने होंगे। जल स्रोतों के संवर्धन के लिए कार्य करना होगा। अन्यथा आने वाली पीढ़ी हमें माफ नहीं करेगी।"

प्रधान ने कहा कि इस बार बरसात में गांव के गधेरों में मनरेगा के तहत चौड़ी पत्ती के पेड़ों का रोपण किया जाएगा। दीपक ने कहा, "यदि पेड़ लगते हैं तो गांव के सारे बच्चे बकरी तथा दूसरे जानवरों से पेड़ों को बचाने के लिए काम करेंगे। गांववालों ने मिलकर पेड़ लगाने का कार्य किया। गांव के बच्चों ने पेड़ों की सुरक्षा की जिम्मेदारी ली। देखते-देखते कुछ ही साल में गांव हरा-भरा हो गया। गांव की जागरूकता के रहते गांव सड़क से भी जुड़ गया। गांववालों ने बारिश के पानी को खाल बनाकर भी संरक्षित किया। प्रधान ने गांव के बच्चों की बहुत तारीफ की। बच्चे भी अब खुश हैं।

बालप्रहरी का यह अंक तुम्हें कैसा लगा, जरूर लिखना। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा करूंगा।

- तुम्हारा दोस्त
उदय किरौला

बालप्रहरी पत्रिका ने बच्चों को साहित्य की एक दुनिया प्रदान की है। इसमें बच्चों की रचनाएं प्रकाशित होती हैं। कोरोना काल में बहुत से बच्चे बालप्रहरी से ऑनलाइन जुड़े हैं। बच्चे बड़े साहित्यकारों से कहानियां तथा कविताएं सुन रहे हैं। बच्चे ऑनलाइन अपनी आंचलिक भाषा के गीत प्रस्तुत कर रहे हैं। एक दूसरे की भाषा के गीत सुन रहे हैं। बच्चों को पत्र लेखन की जानकारी दी गई। बच्चों ने अपने पारिवारिक जनों को पत्र लिखकर ऑनलाइन कार्यशाला में अपने पत्रों का वाचन किया। मेरा सभी दोस्तों से निवेदन है कि बालप्रहरी के लिए अपनी मौलिक कविता, ड्राइंग आदि जरूर भिजवाएं।

– अरूणा साह, कक्षा 12
रा.इ.कालेज नौकुचियाताल, नैनीताल

आपके पत्र

मैं कई पुस्तकें तथा पत्रिकाएं पढ़ती हूं। बालप्रहरी पढ़ने का अपना अलग ही आनंद है। लगता है मानो स्वयं की लिखी पुस्तक पढ़ रही हूं। मुझे इसमें पहेलियां, सुडोकू तथा प्रतियोगिताएं अच्छी लगती हैं। कोरोना काल में हम अब बालप्रहरी पत्रिका पढ़ने के साथ ही बालप्रहरी के ऑनलाइन कार्यक्रम में जुड़ रहे हैं। अब बच्चे बालप्रहरी पढ़ते हैं। लिखते हैं। वह बालप्रहरी में छपता भी है तथा ऑनलाइन सबके सामने वाचन करने का समय भी बच्चों को मिलता है। मुझे पहले बोलने में घबराहट होती थी। अब ऑनलाइन बोलने से मेरा आत्मविश्वास बढ़ रहा है।

– शिवांशी जोशी, कक्षा 5
रा. प्रा. विद्यालय सेलाबगड़, गरूड़, बागेश्वर

मैं जब बहुत छोटी थी। तब से बालप्रहरी पढ़ती हूं। मेरे पूजनीय नाना श्री चंदप्रकाश पटसारिया जी की कविताएं भी इसमें छपती हैं। उनकी कविताओं को मैं ध्यान से पढ़ती हूं। मुझे बालप्रहरी में कहानी तथा कविताएं व पहेलियां अच्छी लगती हैं। जल्दी ही मैं भी कुछ लिखकर भेजूंगी। अपनी फोटो बालप्रहरी के लिए भेज रही हूं।

– सुविज्ञा शर्मा, कक्षा 6
रानी लक्ष्मीबाई पब्लिक स्कूल दतिया, म.प्र.

*

बालप्रहरी पत्रिका मुझे बहुत अच्छी लगती है। क्योंकि इसमें बच्चों के लिए कहानी कविता व पहेली के साथ ही काफी कुछ होता है। बाल क्लब में हमारी फोटो भी रहती है। इससे लगता है कि हम इसके सदस्य हैं। इस पत्रिका में हमारे बनाए चित्र भी प्रकाशित होते हैं। मुझे बालप्रहरी के हर नए अंक की प्रतीक्षा रहती है।

– देवयानी जोशी, कक्षा 5
सेंट मे.कां.से.स्कूल तितरड़ी, उदयपुर, (राज.)

*

बालप्रहरी कविता लिखो प्रतियोगिता – 64 में मिली पत्रिकाएं अपने दोस्तों तथा रिश्तेदारों को दी। बालप्रहरी मे मुझे कहानियां, कविताएं तथा पहेलियां अच्छी लगती हैं।

– दिव्यम तिवारी, कक्षा 4
डी पी एस लामाचौड़, हल्द्वानी

*

बालप्रहरी पत्रिका मुझे बहुत पसंद है। बालप्रहरी की ऑनलाइन कार्यशाला में भी मैंने कहानी वाचन, कविता वाचन, पत्र वाचन आदि में भाग लिया है। हमें ऑनलाइन भी अपने विचार प्रकट करने का अवसर मिल रहा है। हमें अपनी ड्राइंग कविता आदि भेजने के लिए भी मंच मिल रहा है।

– कार्तिक अग्रवाल, कक्षा 4
नोजगे पब्लिक स्कूल खटीमा,ऊधमसिंहनगर

*

बालप्रहरी पत्रिका के लिए सुझाव

जैसा कि हम सब जानते हैं कि बालप्रहरी नामक पत्रिका हम बच्चों के लिए त्रैमासिक आती है। छोटे-छोटे बच्चों की कलाकृतियां, तितली, फल, फूल, मम्मी, फौजी आदि पर बच्चों की स्वरचित कविताएं, चुटकुले व पहेलियां पढ़ने को हमें बालप्रहरी में मिलती हैं। जब मैं 6-7 साल की थी। तब से बालप्रहरी पढ़ती हूं। अब मैं लगभग 12 साल की हो गई हूं। अब मैं बालप्रहरी के लिए कहानियां, कविताएं तथा ड्राइंग आदि भेजती हूं।

बालप्रहरी को और अच्छा कैसे बनाया जा सकता है। इस पर मैं अपने सुझाव लिख कर भेज रही हूं। बालप्रहरी में चित्र देखकर कहानी व कविता बनाने की प्रतियोगिता है। मेरा सुझाव है कि इसमें अधूरी कहानी को पूरा करो जैसी प्रतियोगिता या गतिवधि भी होनी चाहिए इससे हम अपनी मानसिकता के अनुसार कहानी को आगे बढ़ा सकते हैं। हर कोई जानता है कि बच्चे हर कुछ जानने के लिए जिज्ञासु होते हैं। हम सबके मन में बहुत सारे प्रश्न भी होते हैं। जैसे कि वह क्यों होता है? यह कैसे होता है? यह अच्छा होगा कि बच्चे आपको सवाल भेजें और बालप्रहरी में उसका उत्तर बच्चों के नाम से छपे। अभी पिछले अंक में गांधी जी के बारे में जानकारी आई थी। मेरा सुझाव है कि जब भी कोई जयंती आए। तो उस महापुरूष की जीवन की कोई घटना बालप्रहरी में प्रकाशित हो। जिससे हमें नई जानकारी तथा कुछ सीख मिले।

– अर्जरागिनी सारस्वत, कक्षा 6
प्रिल्यूड पब्लिक स्कूल आगरा,उ.प्र.

बालसाहित्य की थाती :

बालसाहित्यकार : शिवअवतार रस्तोगी 'सरस'

स्कूलों में जाकर बच्चों को साहित्य से जोड़ने के लिए प्रयासरत बालसाहित्यकार रचनाकार शिव अवतार रस्तोगी 'सरस' का जन्म 4 जनवरी, 1939 को संभल, उ.प्र. में हुआ था। 'सरस बालगीत माला' सहित उनकी लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हैं। मुरादाबाद में उन्होंने बच्चों की लेखन कार्यशाला का आयोजन किया। बालप्रहरी की राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठियों में उनकी सक्रिय भागीदारी रहती थी। 2 फरवरी, 2021 को उनका निधन हो गया। बालसाहित्य के पुरोधा को शत-शत नमन। यहां उनकी कुछ रचनाएं दी जा रही हैं।

-संपादक

बंदर मामा

बंदर मामा चले सैर को,
लेकर लंबी एक छड़ी।
पेंट शर्ट पर बंधी टाई थी,
हाथ कलाई एक घड़ी।
मिली लोमड़ी उसे मार्ग में,
सचमुच थी चालाक बड़ी।
बीच मार्ग पर आकर फौरन,
उसे देखकर छींक पड़ी।

बादल

अब तो जल बरसाओ बादल,
अधिक न अब तरसाओ बादल।
मछली मेढ़क मोर दुखी हैं,
सूखे चंपा सूर्यमुखी हैं।
ताल तलैया पोखर सूखे,
सूखे से सब महादुखी हैं।
जीवन दे हरसाओ बादल,
अधिक न अब तरसाओ बादल।

रेल

रेल चली भई रेल चली,
करती रेलम पेल चली।
धूल उड़ाती छुक-छुक करती,
पीकर डीजल तेल चलती।
लोहे लकड़ी से निर्मित तन,
लोहे की पटरी पर जीवन।
चौबीस घंटे चलते रहती,
जयपुर-जैसलमेर चली।
माल सवारी सब्जी ढोती,
बीज एकता की यह बोती।
भिन्न भेष-भाषा-भाषी में,
करवाती ये मेल चली।
नए-नए यह दृश्य दिखाती,
सभी दिशा में आती-जाती।
सर्दी गरमी या वर्षा हो,
सबको तन पर झेल चली।
मिले मार्ग में पुल नद नाले,
पशु पक्षी गोरे या काले।
बहुत तेज है चाल निराली,
सबको पीछे ठेल चली।

तितली

रंग-बिरंगी तितली प्यारी,
फूलों पर जाती बलिहारी।
कलियों के कानों में कहती,
कैसी शोभा पाई न्यारी।
सब बच्चों के मन को भाती,
हाथ नहीं यह फिर भी आती।
अगर पकड़ना चाहो इसको,
फुर्र-फुर्र से ये उड़ जाती।

बंदर

आओ आओ बंदर जी,
तुम हो मस्त कलंदर जी।
धमा चौकड़ी खूब मचाते,
खाकर सेब चुकंदर जी।
घर हो चाहे हो जंगल,
या सरकस के अंदर जी,
धोती कुर्ता पहन समझते,
खुद को सदा सिकंदर जी।

संकलन :श्रीमती हेमा तिवारी, मुरादाबाद, उ.प्र.

32 बच्चों को मिला प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 2021

नई दिल्ली। गणतंत्र दिवस 2021 के अवसर पर देश भर के 32 बच्चों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार 2021 से सम्मानित किया गया है। कला और संस्कृति के क्षेत्र में कार्य करने के लिए 7, नवाचार के लिए 9, शैक्षिक उपलब्धि के लिए 5, खेल के लिए 7, बहादुरी के लिए 3 तथा समाज सेवा के लिए एक बच्चे का चयन देश के 21 राज्यों से किया गया है। इनमें अमेया लगुडू (आंध प्रदेश), व्योम आहूजा (उ.प्र.) हृदया आर कृष्णन (केरल), अनुराग अमोला (उत्तराखंड), तनुज समुददर (असम), वेनिश कीसम (मणीपुर), सोहरिदा डी (पं.बगांल), ज्योति कुमारी (बिहार), कुंवर दिव्यांश सिंह (उ.प्र.), कामेश्वर जगन्नाथ वाघमारे (महाराष्ट्र), राकेश कृष्ण के (कर्नाटक), श्रीनभ मौजेश अग्रवाल (महाराष्ट्र), वीर कश्यप (कर्नाटक), नाम्या जोशी (पंजाब), अर्चित राहुल पाटिल (महाराष्ट्र), आयुष रंजन (सिक्किम), हेमेश चंल्दावाड़ा (तेलंगाना), चिराग भंसाली (उ.प्र.), हरमन जोत सिंह (जम्मू कश्मीर), तथा मोहम्मद शादाब (उ.प्र.), आनंद (राजस्थन), अनुवेश शुभम प्रधान (उड़ीसा), अनुज जैन (म.प्र.), सोनित सिसोलेकर(महाराष्ट्र), परिधि सिंह (तमिलनाडू), सविता कुमारी (झारखंड), अर्शिया दास (त्रिपुरा) व पलक शर्मा (म.प्र.), मोहम्मद रफी (उ.प्र.), कामा कार्तिकेयन (महाराष्ट्र), खुशी चिराग पटेल (गुजरात) तथा मंत्र जितेंद्र हरखानी (गुजारात) का नाम शामिल है। कोरोना काल में बच्चों को इस बार गणतंत्र दिवस समारोह दिल्ली में नहीं बुलाया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कांफ्रेसिंग के द्वारा बच्चों से संवाद किया।

बच्चों की कलम से :

स्वच्छता

घर हमेशा साफ रहे,
सबको ये बतलाना है।
तभी हम स्वस्थ रहेंगे,
सबको ये समझाना है।
अपना घर सब साफ रखें,
यही स्वच्छता अभियान है।
गंदगी कहीं न रहे,
सबको ये बतलाना है।

- सीया रावत , कक्षा - 12
कस्तूरबा गां.आ.बा.वि.खरसाड़ी, उत्तरकाशी

तितली

आंगन के फूलों पर देखो,
रंग बिरंगी तितली आई।
बच्चे इसे पकड़ना चाहें,
नहीं किसी के हाथ आई।
काश मैं भी तितली होती,
आसमान की सैर कर आती।
होमवर्क न करना होता,
बस इधर उधर ही मंडराती।

- रिद्धि, कक्षा - 8
जी.डी. गोयनका पब्लिक स्कूल सिरसा, हरियाणा

रंगोली

रंगोली है मेरा नाम,
घर सजाना मेरा काम।
रंगों से मैं सजी हुई,
फूलों से मैं घिरी हुई।
हर जन कहता इसे बनाऊं,
हर किसी को मैं हरषाऊं।

- तनूजा अल्मियां, कक्षा -10
राजकीय इंटर कालेज नाई, अल्मोड़ा

फूलदेई का त्यौहार

उत्तराखंड में कई त्यौहार मनाए जाते हैं। जिसमें से फूलदेई का त्यौहार भी प्रमुख है। फूलदेई का त्यौहार चैत्र माह की एक गते (14 या 15 मार्च।) को मनाया जाता है। यह त्यौहार मुख्यतया बच्चों का त्यौहार है। इस दिन बच्चे गांव के सभी घरों के (देई या देली) दरवाजे पर फूल डालते हुए उस घर की कामना के लिए इस गीत को गाते हैं:-

फूल देई छम्मा देई,
हमरा टुपरा भरि जैं
तुमरा भकार भरि जै।

बच्चे अपने-अपने घरों से बांस के बने टुपरे में फूल लेकर चलते हैं। उस टुपरे से फूल घर के दरवाजे पर फूल डालते हुए कहते हैं कि हमारा ये टुपरा (टोकरी) भर जाए और आपके घर के भकार यानी भंडार भरा रहे। जिस घर के दरवाजे पर बच्चे फूल डालते हैं उस घर से बच्चों को चावल दिया जाता है। वर्तमान में चावल के बजाय पैसे, गुड़, टॉफी तथा बिस्कूट आदि भी बच्चों को दिए जा रहे हैं। अब टोकरी के बजाय थाली प्लेट बच्चे ले जा रहे हैं। कुछ बच्चे तो अब बैग लेकर भी जाते हैं।

सारे गांव से जमा चावल बच्चा जब घर में अपने माता-पिता को सौंपता है तो घर के लोग काफी खुश होते हैं। इस चावल को भिगोकर रात को मीठा खाजा बनाया जाता है। कहीं-कहीं चावल को पीसकर साई बनाई जाती है। इस खाजे या साई को मंदिर में चढ़ाया जाता है। प्रसाद के तौर पर परिवार या इष्ट मितुरों को दिया जाता है। कुमाऊं में यह त्यौहार केवल एक दिन मनाया जाता है। परंतु गढ़वाल के कुछ क्षेत्रों में इसे कई दिनों तक मनाया जाता है।

- लक्षिता बिष्ट, कक्षा 9
राजकीय इंटर कालेज गैरखेत, अल्मोड़ा

चंदामामा

चंदामामा को बुला दो,
कोई तो मेरे गांव में।
आपस में हम बात करेंगे,
ठंडी हवा और छांव में।
घूमा करता चांद यहां,
पर भेंट नहीं हो पाती है।
कैसे जाऊं पास में उसके,
समझ नहीं कुछ पाती हूं।

- निकिता, कक्षा 8
राजीव गां.न.विद्यालय चौनलिया, अल्मोड़ा

होमवर्क

जो पढ़ाया स्कूल में जाता,
घर जाकर दोहराया करो।
काम स्कूल से मिले न मिले,
हर विषय को पढ़ा करो।
होमवर्क को बोझ न समझो,
मेरा तो ये कहना है।
पाठ अपना रोज पढ़ो,
यदि जीवन में बढ़ना है।

- कविता तिवारी, कक्षा 8
राजकीय इंटर कालेज खूंट, अल्मोड़ा

मां

मां ने जनम दिया मुझे,
मां का मुझ पर है उपकार।
मेरे लिए भगवान वह है,
शत शत नमन बारंबार।
बच्चों के लिए पीड़ा सहती,
मां सबके लिए पहेली है।
मेरी मां है बहुत सुंदर,
मां मेरी सहेली है।

- सिद्धिका चौहान, कक्षा - 9
राजकीय इंटर कालेज नागथात, देहरादून

बच्चों की कलम से :

होली

रंगों का त्यौहार है होली,
मिलकर इसे मनाएंगे।
घर में ही हम रंग बनाएं,
गुजिया सबको खिलाएंगे।
पिचकारी की शान निराली,
हम सब रंग बरसाएंगे।
कड़वे शब्द कोई न बोले,
बात सभी को बतलाएंगे।

- उपासना बिष्ट, कक्षा 8
रेनेसा नर्सरी एंड स्कूल गंगोलीहाट, पिथौरागढ़

होली

होली आई होली आई,
रंगों की बौछारें लाई।
अबीर गुलाल रंग लेकर,
मेरे घर पिचकारी आई।
हुड़दंग कोई न मचाए,
नाचो गाओ मस्ती में।
रंगों का त्यौहार है होली,
मिलने जाओ बस्ती में।

- लता बधानी, कक्षा 5
राजकीय प्रा. विद्यालय तलिया, ताड़ीखेत

त्यौहार

भारत सुंदर देश हमारा,
कितना अनुपम कितना प्यारा।
लोहड़ी, वैशाखी ईद दीवाली,
होली की खुशियां मतवाली।
हिंदू मुस्लिम सिख इसाई,
मिलकर रहते भाई-भाई।
मेरा प्यारा देश महान,
भाईचारा इसकी पहचान।
क्रिसमस में मिलते उपहार,
आओ मिलकर मनाएं त्यौहार

- वर्णिका जोशी, कक्षा 5
केंद्रीय विद्यालय नोएडा, उ.प्र.

होली

इस बार की होली में,
घर में रंग बनाएंगे।
गुजिया मिठाई खाकर हम,
अबीर गुलाल लगाएंगे।
चीनू मीनू संग में होंगी,
खूब ऊधम मचाएंगे।
होली है रंगों का त्यौहार,
हम सब पर रंग लगाएंगे।

- आयुषी बिष्ट, कक्षा - 5
रेनेसा नर्सरी एंड स्कूल गंगोलीहाट, पिथौरागढ़

होली

एक साल के बाद देखो,
होली आई होली आई।
बसंत ऋतु के रंगों संग
रंगों का त्यौहार है लाई।
सारे बच्चे बना रहे हैं,
अलग-अलग से रंग।
भाभियों को खूब भिगाएंगे,
अपने दोस्तों के संग।

- आयुषी बिष्ट, कक्षा 5
रेनेसा नर्सरी स्कूल गंगोलीहाट, पिथौरागढ़

होली की मस्ती

होली रंगों का त्यौहार है। कुमाऊं में पूस के रविवार से होली गायन प्रारंभ हो जाता है। होली में यहां लगभग एक सप्ताह तक गांवों में होलियां गाई जाती है। गांव में लोग ढोल एवं बाजे-गाजे के साथ लगभग सभी घरों में होली गायन के लिए समूह में जाते हैं। चतुर्दशी के दिन स्थानीय शिवालय तथा अन्य मंदिरों में होली गाई जाती है। अंतिम दिन घुले रंगों से होली खेली जाती है। जिसे छलड़ी कहा जाता है।

आजकल पुरूषों की तरह ही महिलाओं की होलियां भी गांवों में हो रही हैं। महिलाओं की टोली गांव में एक दूसरे के यहां होली गायन में जाती हैं। जिनके घर में शादी विवाह या अन्य कोई शुभ कार्य साल में होता है। वे लोग प्रांय: अपने घर में सामूहिक होली का आयोजन करते हैं।

हमारे दुगालखोला में भी महिलाओं की होती है। महिलाओं की होली में मैं भी अपने दोस्तो के साथ जाती हूं। अबीर गुलाल एक दूसरे को लगाते हैं। आलू के गुटके, गुजिया आदि कई चीजें खाने को मिलती हैं। खूब देर तक होली के गीत महिलाएं गाती हैं। खूब नाच भी होता है।

पिछले साल मैंने अपने घर में होली में खूब मस्ती की। होली की छलड़ी में तो लगभग सभी लोग एक दूसरे के घर होली मिलने जाते हैं। हमने अपने घर में सभी का स्वागत किया। मैंने अपनी दीदी के साथ कई लोगों को होली में भिगाया।

- लक्षिका शर्मा, कक्षा 7
शारदा पब्लिक स्कूल अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

खेल

आओ भाई खेलें खेल,
तभी बढ़े आपस में मेल।
बहनें मिलकर खेलेंगी,
नहीं करेंगी ठेलम ठेल।
जीत हार पर झगड़ा न हो,
खेल भावना जरूरी है।
तन मन की स्वच्छता हेतु,
खेल खेलना जरूरी है।

- भावना शर्मा, कक्षा-9
रा.कन्या हाईस्कूल बांगीधार, सल्ट, अल्मोड़ा

मां

मां होती है पालनहार,
दुनिया हमें दिखाती है।
मां न जैसा कोई,
जीने का पाठ पढ़ाती है।
दुख दर्द सहकर मां,
बच्चों को सुख देती है।
भूखे पेट रहकर मां,
बच्चों को भोजन कराती है।

- भूमिका फुलोरिया, कक्षा-8
रामगंगा वैली स्कूल मासी, अल्मोड़ा

अनुशासन

अनुशासन में सब रहें,
ये देश को महान बनाता है।
नियमित अपने काम करें जो,
मंजिल वह ही पाता है।
अपनेनियम स्वयं बनाओ,
नियम पालन भी करना है।
आज से ही करो तैयारी,
अनुशासन का पाठ पढ़ना है।

- पलक, कक्षा-10, कस्तूरबा गां.आ.बा.वि.
चिन्यालीसौड़, उत्तरकाशी

जीने का अधिकार

मां मुझको मत मारो,
जीने का दो मुझे अधिकार।
भ्रूण हत्या पाप है मां,
मैं कहती हूं बारंबार।
चांद पर चढ़ गई बेटियां,
मुझे तो धरती पर आना है।
बेटियां नहीं कम किसी से,
दुनिया को ये बताना है।

- कृतिका नौटियाल, कक्षा-10
कस्तूरबा गां.आ.बा.वि.तरपालीसैण, पौड़ी

गरीब बच्चों की भी सुनो

वैसे तो सभी बच्चे एक समान होते हैं। इसलिए सभी बच्चों को एक जैसी सुविधाएं मिलनी चाहिए। मगर हमारे देश में गरीब बच्चों की संख्या बहुत ज्यादा है। जिन्हें अच्छी सुविधाएं नहीं मिलती हैं।

गरीब बच्चों को अच्छे घर, अच्छे कपड़े और खाना नहीं मिल पाता है। जहां अमीर बच्चे खाना बरबाद करते हैं। वहीं गरीब बच्चे खाने के लिए तरसते हैं। अमीर बच्चे नए-नए कपड़े पहनने के लिए नखरे करते हैं। जबकि गरीब बच्चों को अच्छे कपड़े ही नहीं मिल पाते हैं। अमीर बच्चे बड़े-बड़े बंगलों में रहते हैं। गरीब बच्चे झोपड़ी में रहते हैं। गरीब बच्चों को अच्छे स्कूल, पुस्तकें, कंप्यूटर, स्मार्टफोन आदि नहीं मिल पाते हैं। गरीब बच्चों को भी अच्छा खाना, अच्छे कपड़े तथा अच्छा घर चाहिए। परंतु उनके सपने पूरे नहीं हो पाते। कई अमीर घर के बच्चे जहां सैर सपाटा व मौज मस्ती से आगे नहीं बढ़ पाते। वहीं कई गरीब बच्चे अपना सपना पूरा करने के लिए दिन रात मेहनत करके अपना लक्ष्य प्राप्त करते हैं।

गरीब बच्चों के लिए यद्यपि कई सुविधाएं सरकार ने दी हैं परंतु इन सुविधाओं का लाभ पढ़े-लिखे व जागरूक लोग उठाते हैं। गरीब के बच्चे तक वे सुविधाएं नहीं पहुंच पाती हैं। हमारी सरकार को वास्तविक गरीब बच्चों की समस्या पर ध्यान देना चाहिए।

- प्रखर बहुगुणा, कक्षा-6
टच वुड स्कूल देहरादून

मोबाइल

मोबाइल व कंप्यूटर पर,
सारी दुनिया आ गई।
ढूंढो इसमें मिल जाता है,
मुझे बात ये भा गई।
समझो सच्चे दोस्त हैं,
इनका सब सदुपयोग करो।
आदी नहीं बनना है इनका,
इनका न दुरूपयोग करो।
बिजली पानी का बिल अब,
मोबाइल से जमा होता है।
मोबाइल है मिनी कंप्यूटर,
ये बहुत काम का होता है।

- अनामिका प्रजापति, कक्षा-10
सेमस्टार ग्लोबल स्कूल नैनी, प्रयागराज, उ.प्र.

मोबाइल

मोबाइल फोन है काम का,
बात हमारी कराता है।
ये घर पहुंचाता है शिकायत,
हर पल हमें डराता है।
बहुत काम का होता ये,
सीखना इसे जरूरी है।
आदी नहीं बनना इसका,
चाहे कोई भी मजबूरी हो।
देर तक देखने पर इसको,
आंखें खराब हो जाती हैं।
कुछ लोग तो इसके दीवाने ,
उन्हें इसकी लत लग जाती है।

- सानिया अंसारी, कक्षा 10
एम के पी इंटर कालेज देहरादून

बच्चों की कलम से :

पानी

पानी बिन हम जी न पाएं,
फिर पानी क्यों व्यर्थ बहाएं।
नल में खुला न छोड़ो पानी,
कभी न करें ऐसी नादानी।
पानी बिना जीवन बेकार,
यही मेरी बातों का सार।
रोको पानी की बरबादी,
खुश रहे तब सब आबादी।

– फरदीन, कक्षा-10
रा.उ.मा.वि.बिझौली, हरिद्वार

कोरोना

घर से निकलें जब भी,
मास्क सब लगाया करें।
दूरी बनाना भी जरूरी,
बात सब को बताया करें।
नियमों का होगा पालन,
कोराना भाग जाएगा।
जो धोएगा हाथों को,
अपने को स्वस्थ पाएगा।

– चांदनी, कक्षा - 3
नोजगे पब्लिक स्कूल खटीमा, ऊधमसिंहनगर

पुस्तक

किताब पुस्तक अनेक हैं नाम,
राह हमें दिखाती है।
सच्ची दोस्त हमारी होती,
ये हमारा मान बढ़ाती है।
दोस्ती करोगे पुस्तक से तो,
जीवन में मान दिलाएगी।
सच्चे दोस्त की तरह,
तुमको राह दिखाएगी।

– रिया, कक्षा - 8
डी.ए.वी.सी.पी. स्कूल सिरसा, हरियाणा

बेटियां

लड़की पढ़ती है स्कूल,
मां घर का काम कराती है।
जाना है तूझे ससुराल,
हर बार यही दोहराती है।
पापा कहते पढ़ा लिखाकर,
बेटी को आगे बढ़ाएंगे।
बेटियां नहीं होती हैं कम,
सबको ये बतलाएंगे।

– समीक्षा, कक्षा-5
रा. प्रा. विद्यालय गुमदिड़गांव, उत्तरकाशी

जल

जल ही जीवन है,
जल बिन सूना इंसान है।
ये धरती जल के बिना,
सूना ज्यों रेगिस्तान है।
पेड़ हैं जल के आधार,
हमको पेड़ लगाने हैं।
पेड़ों के लाभ हमें,
सभी को बताने हैं।

– आकृति भाकुनी, कक्षा-5
रामगंगा वैली स्कूल मासी, अल्मोड़ा

बादल

आसमान में छाए बादल,
बदल देते ये अपना रूप।
काला बादल होता डरावना,
मुझे लगता है ये कुरूप।
जाड़े में सूरज को ढकता,
आसमान में काला बादल।
बच्चों को बिल्कुल न भाए,
जाड़े के दिनों में बादल।

– पूजा जोशी, कक्षा - 10
राजकीय इंटर कालेज खूंट, अल्मोड़ा

मेरे जीवन की घटना

कुछ साल पहले की बात है। मैं गरमी की छुट्टी में अपनी बुआ के घर नेपाल गई थी। बुआ के घर के पास ही एक नहर थी। मेरी बुआ और मेरी मां ने मुझे नहर के नजदीक नहीं जाने को कहा था। परंतु मैं नहर की ओर जाने को उत्सुक थी। मैं बगैर किसी को बताए नहर की ओर चली गई। बहते हुए साफ पानी को देखकर मैं बहुत खुश हो गई।

अचानक मेरा पैर नहर में फिसल गया। मैं उस नहर में गिर गई। मुझे लगा कि आज मेरा जीवन संकट में है। किंतु मेरे मन ने मुझे हौसला दिया। मैंने मन ही मन सोचा ऊंची आवाज में रोने की आवाज सुनकर कोई न कोई इधर आ जाएगा। मैंने हिम्मत नहीं हारी। किसी तरह नहर से बाहर निकलने का प्रयास किया। मैं अपने प्रयास में सफल हो गई। मुझे लगा कि मुझे नया जीवन मिल गया है। बाद में मैंने घर वालों को घटना की जानकारी दी। तो सभी ने मुझे डांठा।

मुझे लगा कि माता-पिता या बड़े लोग बच्चों के हित के लिए ही प्रतिबंध लगाते हैं। परंतु बच्चे वहीं करना चाहते हैं जो उन्हें मना किया जाए। बहरहाल तब से मैं अब बगैर घर वालों को बताए कहीं नहीं जाती। मैं इस घटना को कई बार अपने मित्रों व रिश्तेदारों को भी शेयर करती हूं।

– ऊर्जा जाशी, कक्षा-8
ड्रीम्स इंडिया प.स्कूल सिंगाही, खीरी, उ.प्र.

बच्चों की कलम से :

गर्मी

गरमी जाड़ा और बरसात,
मौसम आते जाते हैं।
कोई कहता जाड़ा अच्छा,
गरमी में मच्छर खाते हैं।
बरसात में आती बाढ़,
रास्ते बंद हो जाते हैं।
बसंत की तो बात निराली,
फूल सभी खिल जाते हैं।

- चेतना प्रहरी, कक्षा-9
राजकीय बालिका इं.कालेज स्याल्दे, अल्मोड़ा

चिड़िया

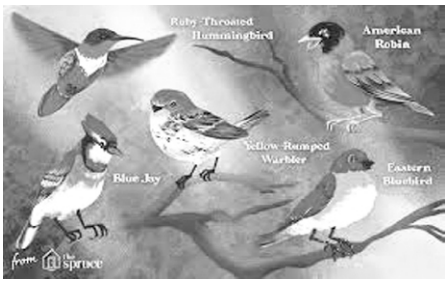

चिड़िया रानी आ गई,
देखो कितनी प्यारी है।
फुदक फुदक कर नाच रही,
सचमुच ये तो न्यारी है।
बिखरे दाने आंगन के,
चुन-चुन कर ये खाती है।
हम सबकी ये दोस्त,
रोज सुबह ही आती है।

- प्रतीक चौधरी, कक्षा-8
द्रोण पब्लिक स्कूल पूजाखेत, द्वाराहाट

पानी

बरबाद न करो पानी को,
पानी है अनमोल।
पानी से ही जीवन है,
ये जीवन है अनमोल।
पानी बिना नहीं है जीवन,
पानी हमें बचाना है।
पानी से संसार चले,
सबको ये बताना है।

- मुस्कान, कक्षा-9
आर्य कन्या इंटर कालेज कोटद्वार, पौड़ी

चनुली सरपट्टा का गिरै कौतिक

मकर संक्रांति के दिन कई धार्मिक मेले लगते हैं। परंतु अल्मोड़ा जनपद के चनुली सरपटा (भिक्यिासैण) में मकर संक्रांति को गिर का मेला लगता है। गांव के पुराने लोग बताते हैं कि यहां बहुत पहले से गिरै का कौतिक लगता था। उन दिनों आज की तरह क्रिकेट व दूसरे खेल नहीं थे।

गांवों में लोग हॉकी की तरह एक खेल खेला करते थे। उस खेल का नाम गिर कहा जाता था। इस खेल में हॉकी की छड़ी की तरह गांव के मेहल, धिंधारू आदि की लकड़ी का प्रयोग होता था। गेंद के लिए धिधारू की जड़ की लकड़ी को काटकर गेंद बनाई जाती थी। इस खेल के नियम भी लगभग हॉकी की तरह ही थे। ये खेल बच्चे स्कूल से आकर खेलते थे। उत्तरायणी पर्व के दिन पूरे इलाके का बड़ा खेल होता था। इस कारण इसने एक मेले का रूप ले लिया। इसे गिरै का कौतिक कहा जाने लगा। लगभग 50 साल तक ये कौतिक(मेला) बंद रहा। इधर कुछ वर्षों से यहां के जागरूक लोग यहां की संस्कृति को सरंक्षित करने के उद्देश्य से इस मेले को धूमधाम से आयोजित कर रहे हैं।

इस मेले के अध्यक्ष श्री कृपालसिंह शीला जी हम बच्चों को भी इस मेले में गीत,डांस तथा कविता आदि कहने का अवसर देते हैं। बच्चों को प्रमाण पत्र भी दिए जाते हैं। यहां मेले में दूर-दूर से सांस्कृतिक टीमें भी आती हैं। मेला बासोट बाजार से दूर गांव में लगता है। जहां एक भी दुकान नहीं है। परंतु मेले के दिन रामनगर, बासोट, भिकियासैण आदि से आकर यहां व्यापारी अपना सामान मेले में बेचते हैं।

- बबीता रावत, कक्षा - 6
आर.सी.एम.पब्लिक स्कूल बासोट, अल्मोड़ा

शिक्षक

राह दिखाते हमको शिक्षक,
शिक्षक है एक ऐसी मूरत।
अपने गुरू का ध्यान करें,
मानो ये भगवान की सूरत।
अच्छी राह दिखाते हमको,
हम उनका सम्मान करें।
सवाल जबाब करना सिखाते,
फिर क्यों हम उनसे डरें।

- डिंपल पाठक, कक्षा-7
द एशियन एकेडमी, पिथौरागढ़

स्वच्छता

गांव हमारे साफ रहें सब,
था गांधी जी का सपना।
साफ सफाई बनी रहे,
सुंदर भारत देश हो अपना।
स्वच्छ देश सलौना देश,
स्वच्छ इसे हम बनाएंगे।
सब लोग स्वस्थ रहें,
स्वच्छता अभियान चलाएंगे।

- श्वेता, कक्षा-10
लक्ष्मी आश्रम कौसानी, अल्मोड़ा

मेरी दादी

दादी सबको अच्छी लगती,
कहानी हमें सुनाती है।
बच्चों की दोस्त होती,
मार से भी बचाती है।
कहानी लोरी सुनाकर,
बच्चों को सुलाती है।
बच्चे खूब आगे बढ़ें,
उनको राह दिखाती है।

- प्रिया आर्या , कक्षा-8
राजकीय इंटर कालेज कौसानी, बागेश्वर

स्वच्छता अभियान

कूड़ा कूड़ेदान में डालो,
ऐसा नियम बनाना है।
अपना घर सब रखें साफ,
ऐसा अभियान चलाना है।
स्वच्छता अभियान का,
ज्ञान सबको कराना है।
कूड़ा कूड़ेदान में डालें,
ऐसा नियम बनाना है।

- मुस्कान, कक्षा-9
कस्तूरबा गां. आ.बा.वि. गंगाणी, उत्तरकाशी

बच्चों की कलम से :

सड़क सुरक्षा

चौड़ी-चौड़ी सड़क बनी है,
चलते इस पर वाहन।
हमेशा हैलमेट पहनना,
करती मैं आवाहन।
यातायात के नियम बने हैं,
पालन उनका करना है।
सुरक्षित तभी रहोगे,
मौत से भी डरना है।

- अस्मिता कांडपाल, कक्षा 8
गॉड ग्रेस अकादमी भिकियासैण, अल्मोड़ा

चंपावत

कुमाऊं की राजधानी रहा,
चंपावत सबसे प्यारा है।
राजा ग्वेल की धरती ये,
उत्तराखंड में न्यारा है।
सौंदर्य यहां का है निराला,
पर्यटक यहां पर आते हैं।
अपना नगर साफ रखो,
सर जी हमें बताते हैं।

- सुमन भट्ट, कक्षा 7
यू. जे आई सी चंपावत

चंदामामा

चंदामामा आए हैं,
तारे संग लाए हैं।
चंदा मामा गोल हैं,
हमारे लिए अनमोल हैं।
हम तो सब बच्चे हैं,
चंदामामा भी अच्छे हैं।
हम उन्हें देख हर्षाते हैं,
वे छोटे बड़े हो जाते हैं।

- रिद्धि जोशी कक्षा 8
राममंगा वैली स्कूल मासी,अल्मोड़ा

मेरा स्कूल

राम प्यारी स्कूल हमारा,
यहां से हमको मिलता ज्ञान।
सम्मान करें सब गुरू का,
तभी मिलेगा हमको मान।
सारे बच्चे मेरे स्कूल के,
अनुशासन में रहते हैं।
आपस में सब मिलकर रहें,
प्रधानाचार्य जी कहते हैं।

- जिया जोशी, कक्षा 10
राम प्यारी आर्य कन्या पा.इं.कालेज देहरादून

हॉस्टिल

विशेष आवासीय छात्रावास,
बच्चे खुश यहां रहते हैं।
लालढ़ांग हरिद्वार में ये,
हम अपना घर इसे कहते हैं।
सारे बच्चे हॉस्टिल के,
मस्ती खूब करते हैं।
पढ़ाई संग करते खेल,
गलत काम से डरते हैं।

- हितेश, कक्षा 5
विशेष आवासीय छात्रावास,लालढांग, हरिद्वार

डी. जे. और ध्वनि प्रदूषण

आजकल देश में प्रायः सभी उत्सवों और कार्यक्रमों में डी.जे. का उपयोग किया जा रहा है। डी जे का मतलब डिस्क जॉकी होता है जिसमें नए अथवा पुराने गानों के साथ नए तरीके का तेज आवाज वाला संगीत जोड़ दिया जाता है। जब यह डी जे बजता है तो बहुत तेज आवाज में गाने बजते हैं। संगीत भी कानफोडू होता है। यह नाचने उछलने के लिए आम जनों को प्रेरित करता है।

आजकल सभी धार्मिक कार्यों में, चल समारोहों में क्लबों,पार्टियों, शादी विवाहों लगभग सभी कार्यों में डी जे का जमकर उपयोग होता है। शोरगुल के बीच लोग नाचते उछलते दिखते हैं।

जहाँ तक खुशियां मनाने और उत्सव मनाने की बात हो वहां तक तो डी जे का उपयोग ठीक है लेकिन इसका अधिक और अनावश्यक उपयोग बहुत हानिकारक भी है। इसकी आवाज इतनी तेज होती है कि वातावरण में चारों तरफ ध्वनि प्रदूषण होने लगता है। इसका सीधा असर मन मस्तिष्क और कानों पर पड़ता है। धार्मिक उत्सवों और वैवाहिक उत्सवों तक में डी जे में बजने वाले गाने अश्लील रहते हैं और बच्चों के मन में विपरीत प्रभाव डालते हैं। डी जे की संस्कृति पूरे समाज में एक छुतही बीमारी की तरह फैल रही है। हर छोटे बड़े काम में डीजे का उपयोग होने लगा है। इधर बच्चों की परीक्षाएं सिर पर होती हैं और उधर उत्सवों में डीजे का शोर कान फोड़ने लगता है। बच्चों की पढ़ाई में व्यवधान तो होता ही है ध्वनि प्रदूषण भी वृद्ध जनों को शारीरिक मानसिक रूप से नुकसान पहुंचाता है। इस नुकसान को रोकने के लिए स्थानीय प्रशासन को डीजे बंद रखने के आदेश देने पड़ते हैं। कई राज्यों में रात को 10 बजे के बाद डी जे बंद करने का कानून है। उसके बाद भी रात देर तक डी जे बजता है। मैं कहना चाहूंगी कि डी जे का सीमित उपयोग ही ठीक है। इसका ज्यादा विस्तार बच्चों के लिए तो हानिकारक है ही बड़ों के लिए भी ठीक नहीं है।

- इशिता श्रीवास्तव, कक्षा-12
विद्या भूमि पब्लिक स्कूल छिंदवाड़ा, म.प्र.

बच्चों की कलम से :

बस्ता

बस्ता एक दिला दो मां,
मैं भी पढ़ने जाऊंगी।
बेटियां नहीं हैं कम,
नया कुछ कर दिखलाउंगी।
मेहनत खूब करूंगी मां,
सपना आपका पूरा होगा।
लड़कियां नहीं हैं कम,
मुझे ही बतलाना होगा।

- बीना भंडारी, कक्षा-12
कस्तूरबा गां.आ.बा.विद्यालय तरपालीसैण,

वर्षा

वर्षा जब भी आती है,
बच्चे खुश हो जाते हैं।
कागज की सब नाव बनाकर,
पानी में तैराते हैं।
जाड़े की वर्षा में,
बहुत ठंड लग जाती है।
गरमी में जब बारिश आए,
खूब मस्ती तब आती है।

- राकेश कुमार, कक्षा-10
रा.उ.मा.वि. घोटिया, बालोद,छत्तीसगढ़

मध्याह्न भोजन

हमारे स्कूल में रोज ही,
बच्चों का मिलता भोजन।
इसको खाने पर सबका,
खुश हो जाता मन।
खाने से पहले ही,
रोज हाथ हम धोते हैं।
शाम को खाने के बाद भी,
हम कुल्ला करके सोते हैं।

- गितेश बिष्ट, कक्षा - 5
रा.प्रा.वि.सौनजाला, उत्तरकाशी

कोरोना

कोरोना से हुआ हमारा,
देखो हाल बेहाल।
पढ़ाई सारी ठप्प हुई,
यों ही गया ये साल।
लॉकडाउन में बंद हुआ,
यहां सारा कारोबार।
कोरोना से नहीं मानते,
हम अभी तक हार।
मास्क लगाकर जाते हम,
दूरी भी बनाएंगे।
साफ सफाई का रखें ध्यान,
बात सभी को बताएंगे।

- माही अधिकारी, कक्षा-7
राजकीय जूनियर हाईस्कूल सीम, अल्मोड़ा

पेड़ लगाओ

चौड़ी पत्ती के पेड़ लगाओ,
पर्यावरण को स्वच्छ बनाओ।
पेड़ हैं जीवन के आधार,
पेड़ लगाओ बारंबार।
पेड़ों की रक्षा हम करेंगे,
पर्यावरण को स्वच्छ रखेंगे।
पेड़ लगाएं पेड़ बचाएं,
सभी को ही ये समझाएं।

- मनोज जोशी, कक्षा-8
रा.इ.का.आरासल्पड़, अल्मोड़ा

मेरे जीवन की घटना

सन् 2020 की बात है। कक्षा 10 वीं की बोर्ड में पहली परीक्षा थी-अंगरेजी की। वैसे तो मैंने पूरे साल मेहनत की थी। परंतु उस दिन में थोड़ा घबरा गई। मैंने परीक्षा में सभी प्रश्नों के उत्तर लिखे। घर आकर मैं अगले दिन होने वाली हिंदी की परीक्षा की तैयारी करने लगी। दूसरे दिन मैंने बहुत ही आत्म विश्वास के साथ परीक्षा दी। तीसरी परीक्षा विज्ञान की थी। जिसकी तैयारी करने में मेरे अध्यापक 'पवन सर' ने मेरी काफी सहायता की थी। उन्होंने पूरे साल बगैर शुल्क लिए मुझे गणित व विज्ञान पढ़ाया था।

परीक्षा की अच्छी तैयारी चल रही थी। इसी बीच मेरे पिताजी की पैर की हड्डी फ्रैक्चर हो गई। उन्हें आपरेशन के लिए बरेली जाना पड़ा। इस कारण मैं बहुत चिंतित हो गई। पढ़ाई से मेरा ध्यान भटकने लगा। अपने मन को समझाते हुए मैंने परीक्षाएं दी। इसी बीच ठंड के कारण मेरी तबियत भी खराब हो गई। उसके बाद भी मैंने परीक्षा को परीक्षा की तरह ही समझा। कोरोना के कारण हमारी आखिरी परीक्षा रद्द हो गई।

लॉकडाउन के कारण परीक्षा के परिणाम घोषित होने में काफी समय लग गया। मैं प्रतिदिन परीक्षा के परिणाम के बारे में ही सोचते रहती थी। आखिर परिणाम घोषित हो ही गए। मैं बहुत घबराई हुई थी। परीक्षाफल देखकर मैं बहुत खुश हुई। मैंने 98.4 अंकों के साथ पूरे अल्मोड़ा जिले की सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। मुझे प्रशन्नता हुई कि मेरी मेहनत सफल हुई। मैंने अपने माता-पिता तथा गुरूजनों का आशीर्वाद लिया। मेरे जीवन की यह महत्वपूर्ण घटना है।

- गरिमा जोशी, कक्षा-11
बीयरशिवा स्कूल अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

बालप्रहरी : ऑनलाइन गतिविधियां

कोविड के कारण सन् 2020 पूरे साल में हम सबकी जिंदगी थम सी गई। बालप्रहरी तथा बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा द्वारा ऑनलाइन चलाई गई गतिविधियां हम सब बच्चों के लिए एक वरदान सी सिद्ध हुई। घर पर रहकर ही हमने बाल कवि सम्मेलन में जहां कविता व कहानी बनाना सीखा। वहीं हर सप्ताह आयोजित बाल कवि सम्मेलन में हमें अपनी रचनात्मकता दिखाने को अवसर मिला। हमने देश के प्रसिद्ध कवियों की कविता वाचन करने के साथ ही प्रत्येक कवि का परिचय दिया। इस बहाने हम सब लोगों को कवियों की जानकारी भी प्राप्त हुई। हर सप्ताह देश के प्रतिष्ठित कहानीकार हमें कहानी सुनाते। उस कहानी पर हमें टिप्पणी करने के बहाने अपनी बात रखने का अवसर मिलता।

हमने पत्र लेखन का जहां अभ्यास किया। वहीं बम पटाखे और प्रदूषण, लड़कियां नहीं हैं कम, राष्ट्रीय एकता तथा डी जे संस्कृति विषय पर अपने-अपने पत्र लिखकर उनका ऑनलाइन वाचन किया। नव वर्ष पर जहां हमने ऑनलाइन ग्रीटिग कार्ड बनाना सीखा वहीं त्वरित दिए गए विषय पर भाषण बोलना हम सबके लिए नए अनुभव थे। ऑनलाइन गतिविधियों में भाग लेना मेरे लिए ये सुखद था कि अभी तक बालप्रहरी की 69 ऑनलाइन गतिविधियां हो चुकी हैं। लगभग सभी कार्यक्रमों का संचालन व अध्यक्षता बच्चों ने ही की। यह भी उल्लेखनीय है कि हर बार नए बच्चे को अध्यक्ष बनने तथा संचालन करने का अवसर मिला।

आंचलिक व देशभक्ति के गीतों को बच्चों ने स्वयं हारमोनियम व ढोलक के साथ प्रस्तुत किया। ये भी बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए अवसर ही था। कोरोना महामारी के चलते जब हम घरों में बैठे-बैठे ऊब चुके थे। निराश हो चुके थे। बालप्रहरी की ऑनलाइन कार्यशालाओं ने हमें घर बैठे-बैठे अपनी प्रतिभा दिखाने तथा अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया। संचालक व अध्यक्ष बनकर तथा त्वरित भाषण से हममें आत्मविश्वास बढ़ा है।

आशिमा शर्मा, कक्षा-12
गवर्नमेंट हा.सेकेंडरी स्कूल ज्यौड़िया, जम्मू

आंखें

आंखें कहती बहुत हैं,
बस समझने की देर है।
आंखें सहती बहुत हैं,
बस समझने की देर है।
आंखों में छिपे हैं राज,
बस समझने की देर है।
आंखें में खुशी व दर्द,
बस समझने की देर हैं।

- पूजा कफल्टिया, कक्षा 9
ए. पी.एस.लामाचौड़, हल्द्वानी

ऑनलाइन पढ़ाई

ऑनलाइन पढ़ाई में अब ,
बच्चों को मोबाइल मिल जाता है।
स्कूल से मिलता होमवर्क,
कभी तो समझ न आता है।
ऑनलाइन पढ़ाई के बहाने,
मोबाइल की जय जय कारी है।
पढ़ाई में नहीं लगता मन,
वीडियो गेम सब पर भारी है।
पहले मोबाइल नहीं मिलता था,
अब महंगा मोबाइल मिल रहा है।
मोबाइल के कारण बच्चों का,
अब चेहरा खिल रहा है।

- खुशी कड़ाकोटी, कक्षा-7
आर सी एम पब्लिक स्कूल बासोट,अल्मोड़ा

लड़कियां

लड़कियां हैं घर की शान,
इनको आगे बढ़ाना है।
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ,
अभियान ये चलाना है।
बेटियां आज बढ़ रही,
सभी ने ये जाना है।
बेटियों की प्रतिभा को,
सबने आज पहचाना है।

- वैष्णवी, कक्षा-7
राजीव गां. न. विद्यालय चौनलिया, अल्मोड़ा

भोजन की बरबादी

किसान उगाता है अनाज,
तभी हम जी पाते हैं।
हमें नहीं है ज्ञान यह,
हम भोजन फेंक कर आते हैं।
जितना खाना है तुमको,
उतना ही लो थाली में।
अन्न की कीमत को जानो,
मत गिराना तुम नाली में।

- अमीशकुमार कक्षा 12
यदुवंशी शिक्षा निकेतन, महेंद्रगढ़, हरियाणा

काफल

खट्टे मीठे काफल होते,
सबको ही ये भाते।
दूर देश से जो भी आते,
काफल संग ले जाते।
पहाड़ की सौगात है ये,
जंगल की शोभा बढ़ाते।
हमारे गांव के बच्चे तो,
ऊंचे पेड़ पर चढ़ जाते।

- अंजलि आर्या कक्षा 10
राजकीय इंटर कालेज अंडोली, अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

सृजन प्रजापति, कक्षा-6
नैनी, प्रयागराज, उ.प्र.

अंजली, कक्षा - 7
राजकीय जू.हा.हरमनी, चमोली

रीतिका बिष्ट, कक्षा - 9
रा.इ.का. दड़मियां, अल्मोड़ा

सुवर्णा जोशी, कक्षा - 3
रा.प्रा.वि. सेलाबगड़, गरूड़, बागेश्वर

दक्ष सोनकर, कक्षा- यू.के.जी.
टैगोर एकेडमी, खटीमा

एकता राना, कक्षा - 10
सिटी कांवेंट स्कूल, खटीमा

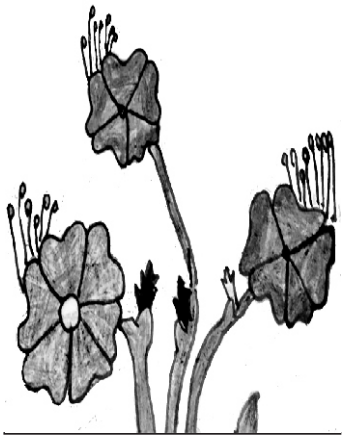

खुशी रावत, कक्षा-8
रा.उ.प्रा.वि. हरमनी, चमोली

मन्नत रावत, कक्षा -4
बी.एच.इ.एल., हरिद्वार

यथार्थ पंत, कक्षा - 5
ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल, अल्मोड़ा

आदित्य भट्ट, कक्षा - 5
मिनर्वा पब्लिक स्कूल, अल्मोड़ा

कार्तिक बिष्ट, कक्षा - 4
के.वी.एकेडमी, अल्मोड़ा

शिवांशी जोशी, कक्षा - 5
रा.प्रा.वि. सेलाबगड़, गरूड़, बागेश्वर

उत्तराखण्ड शासन

2021 नववर्ष

की समस्त प्रदेशवासियों को

हार्दिक शुभकामनाएं

प्रिय प्रदेशवासियों,
आप सभी को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। नया साल आपके और आपके परिवार के लिए सुखदायक एवं मंगलकारी हो, ऐसी प्रभु से कामना है। साथियों, कोरोना महामारी के इस दौर में आप सभी से प्रार्थना है कि नववर्ष अपने घरों में ही मनायें। क्योंकि कोरोना अभी खत्म नहीं हुआ है, हमें अभी और अधिक सावधानी बरतने की आवश्यकता है। आप सभी के सहयोग से ही हम जल्द ही कोरोना को हराने में सफल होंगे। एक बार आप सभी को पुनः नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

त्रिवेन्द्र सिंह रावत
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

2020 में जनहित में लिये गये प्रमुख फैसले

- गैरसैंण राजधानी परिक्षेत्र के अवस्थापना विकास के लिए अगले 10 वर्ष में ₹25 हजार करोड़ किये जायेंगे खर्च।
- चार धाम देवस्थानम बोर्ड का गठन।
- किसानों को ₹3 लाख तथा महिला सहायता समूह को ₹5 लाख तक का ऋण बिना ब्याज के।
- मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना प्रारम्भ।
- मुख्यमंत्री सौर स्वरोजगार योजना प्रारम्भ।
- जल जीवन मिशन में ग्रामीण क्षेत्रों में केवल ₹1 में कनेक्शन। शहरी क्षेत्रों में ₹100 में कनेक्शन।
- प्रत्येक ब्लॉक में 2-2 अटल उत्कृष्ट विद्यालय।
- दस हजार वनरक्षकों की तैनाती का निर्णय।
- महिलाओं को भूमिधरी हक देने का निर्णय।
- पर्यटन के तहत दस हजार मोटर बाईक उपलब्ध कराने का निर्णय, जिसपर 2 वर्ष का ब्याज देगी राज्य सरकार।

2020 की प्रमुख उपलब्धियां

- गैरसैंण ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाई गई। सचिवालय भवन का शिलान्यास।
- डोबराचांठी और जानकी सेतू पुल का लोकार्पण।
- सूर्यधार झील का लोकार्पण।
- ई-कैबिनेट, ई-ऑफिस का कार्य प्रारम्भ।
- हर न्याय पंचायत में ई-पंचायत सेवा का शुभारंभ।
- 106 रूरल ग्रोथ सेंटर स्वीकृत।
- गन्ना किसानों का 100 प्रतिशत भुगतान (सरकारी व सहकारी)।
- सभी जिलों में आईसीयू स्थापित। कोरोना काल में 476 डाक्टरों की नियुक्ति।
- केन्द्र की विभिन्न परियोजनाओं पर तेजी से कार्य गतिमान।
- 50 हजार आंगनबाड़ी, आशा कार्यकत्रियों व आशा फेसिलिटेटर को 2-2 हजार की सम्मान राशि दी गई।
- प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अन्तर्गत उत्तराखण्ड राज्य के लगभग 62 लाख व्यक्तियों को प्रति माह प्रति व्यक्ति 5 किलो चावल और प्रति परिवार 1 किलो दाल निःशुल्क उपलब्ध करायी गई।
- अटल आयुष्मान योजना में राज्य के सभी परिवारों को ₹5 लाख वार्षिक की निःशुल्क चिकित्सा सुविधा देने वाला उत्तराखण्ड, देश का पहला राज्य। लगभग 40 लाख लोगों के गोल्डन कार्ड बनाए गए और 2,25,530 मरीजों को योजना में निःशुल्क उपचार उपलब्ध कराया गया। जिसपर लगभग ₹233 करोड़ किये गए खर्च।

कोविड-19

**जब तक दवाई नहीं
तब तक ढिलाई नहीं**

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी | www.uttarainformation.gov.in UttarakhandDIPR DIPR_UK

महिला हेल्पलाइन नं. 1090 | किसान कॉल सेंटर नं. 1551 | सी.एम.हेल्पलाइन नं. 1905 | चाइल्ड हेल्पलाइन नं. 1098 | आयुष्मान उत्तराखण्ड हेल्पलाइन नं. 104 | आपदा कॉल सेन्टर नं. 1070

निबंध प्रतियोगिता – 37

निबंध प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे नि:शुल्क भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता के तहत 'घर में छोटा पुस्तकालय बनाएं' विषय पर लगभग 250 शब्दों का निबंध लिखकर भेजना है। चयनित निबंध को बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा के सौजन्य से 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जाएंगी। निबंध के साथ नाम/पता/कक्षा/स्कूल व घर का पूरा पता तथा टेलीफोन न. अवश्य लिखें। निबंध संपादक बालप्रहरी अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601 के पते पर दिनांक 15 अप्रैल, 2021 तक भेजें। निबंध प्रतियोगिता-36 में निम्न निबंध चयनित हुआ है। इन्हें उपहार में पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं। – संपादक

कोरोना काल में आनलाईन पढ़ाई

मार्च, 2020 में कोरोना के कारण सभी स्कूल बंद हो गए। बच्चे क्या किसी का भी घर से बाहर निकलना बंद ही हो गया। बच्चों की पढ़ाई क्या खेल के लिए भी घर से बाहर जाना बंद हो गया।

बड़े-बड़े संस्थानों में तो ऑनलाइन पढ़ाई पहले ही होती थी। लॉकडाउन में पहले पहल प्राइवेट स्कूलों ने ऑनलाइन पढ़ाई प्रारंभ हुई। बाद में सरकारी स्कूलों में भी ऑनलाइन पढ़ाई होने लगी। कोइ जूम एप पर तो कोई गूगल मीट पर बच्चों की कक्षाएं ऑनलाइन चलाने लगे। जहां नेटवर्क की परेशानी थी। वहां वाट्सअप पर बच्चों से संवाद होने लगा। टेलीविजन के कई चैनल भी स्कूली पाठ्यक्रम के लिए कार्यक्रम चला रहे हैं। सबसे अधिक परेशानी गरीब बच्चों को हुई। जिनके पास स्मार्टफोन तक नहीं था। किसी के पास स्मार्टफोन था भी तो वह दिन भर पापा के पास रहता था। पापा शाम को घर आते तभी बच्चे मोबाइल पर स्कूल का संदेश पढ़ पाते थे। जिन घरों में एक स्मार्टफोन था और दो-तीन भाई थे। उनमें भी मोबाइल के लिए झगड़ा होता था। गांवों में जिनके पास स्मार्टफोन था भी वहां नेटवर्क की वजह से बच्चे परेशान थे।

ऑनलाइन पढ़ाई में पहले-पहले तो अच्छा लगा। बाद में स्कूलों से बहुत अधिक होमवर्क मिलने लगा। इस कारण कई बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई से बचने के लिए बहाने ढूंढने लगे थे। ऑनलाइन पढ़ाई में देर तक मोबाइल के प्रयोग से बच्चों का सिरदर्द व आंखों में जलन होने लगी। कुछ गरीब अभिभावक मोबाइल में नेट प्लान के लिए पैसा नहीं जुटा पाते। सब लगाकर मजबूरी से ही सही बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई से जुड़ रहे हैं। क्योंकि कोरोना काल में पढ़ाई का यह एकमात्र विकल्प बना है। दूसरी ओर कुछ बच्चों के अभिभावकों ने महंगे मोबाइल तो खरीद लिए हैं। पर बच्चे उसका उपयोग गेम खेलने तथा अन्य एप देखने में कर रहे हैं। जो कि बिल्कुल भी सही नहीं है।

– देवरक्षिता नेगी,
बाल विकास विद्या मंदिर
भटकोट, चौखुटिया,अल्मोड़ा

(इसके अतिरिक्त दक्षता गुसाई (चमोली) सुवर्णा जोशी (सेलाबगड़), कार्तिक जोशी(खटीमा), इधांत जोशी (देवीधूरा), वेदमित ओझा(भीलवाड़ा), सोनाक्षी मेहरोत्रा (मेरठ) का निबंध भी प्रशंसनीय था।

– संपादक

सूचना

समाज कल्याण विभाग, अल्मोड़ा की ओर से सभी प्रदेशवासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

जनपद अल्मोड़ा के समस्त दिव्यांग जनों को सूचित किया जाता है कि वे अपना विशिष्ठ दिव्यांग जन प्रमाण पत्र (UDID) अनिवार्य रूप से बना लें। जिससे वे सरकार द्वारा दिव्यांग जनों हेतु चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ सुगमता से प्राप्त कर सकें।

Unique Disability ID (UDID) कार्ड बनाए जाने हेतु दिव्यांग जन स्वयं अथवा सी.एस.सी. सेंटर के माध्यम से htpp://www.swavlambancard.gov.in में आनलाईन आवेदन कर सकते हैं। अधिक जानकारी हेतु मुख्य चिकित्साधिकारी अल्मोड़ा/समस्त सहायक समाज कल्याण अधिकारियों एवं जिला दिव्यांग पुनर्वासन केंद्र (डी.डी.आर.सी.) बेस परिसर अल्मोड़ा से भी संपर्क किया जा सकता है।

(राजीव नयन)
जिला समाज कल्याण अधिकारी
अल्मोड़ा

कविता लिखो प्रतियोगिता-66

दाएं बने चित्र को ध्यान से देखो। चित्र को देखकर-विचारकर तुम्हें 8 पंक्ति की स्वरचित कविता 15 अप्रैल, 2021 तक संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा उत्तराखंड- 263601 के पते पर भेजनी है। प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे नि:शुल्क प्रतिभाग कर सकते हैं। कविता के नीचे अपना नाम, पता तथा उम्र तथा फोन नंबर लिखकर हस्ताक्षर करने हैं। सबसे अच्छी कविता को बालप्रहरी में प्रकाशित किया जाएगा। ग्रामीण समाज कल्याण समिति (ग्रास) तल्ला चीनाखान, अल्मोड़ा के सौजन्य से 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जाएंगी। कविता लिखो प्रतियोगिता-65 में निम्नलिखित कविता चयन की गई है। इन्हें पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जा रही हैं।

शांता क्लाज

उपहारों का थैला लेकर,
शांता क्लाज आए हैं।
चुन्नू मुन्नू खुश हैं सारे,
बच्चे सब हरषाए हैं।
लाल कपड़े पहनकर,
हर साल ही वे आते हैं।
बच्चे सारे खुश हो जाते,
उपहार देकर जाते हैं।

— सुष्मिता हरजानी, कक्षा 9
एम्मा थॉमसन स्कूल लखनऊ,उ.प्र.

इसके अतिरिक्त हितैषी तिवारी (हल्द्वानी), वेदवित ओझा, अवंतिका ओझा, (भीलवाड़ा), इंधात जोशी (देवीधूरा), रितिक पचौली (खटीमा), आयुष बिष्ट (बरेली) खीला बिष्ट (करूली), गुंजन शर्मा (बग्वालीपोखर), अंशिका कुशवाहा (रायपुर, छत्तीसगढ़) सोनी पांडे (चौसाला) काव्य पंत (नौलाकोट), शिवांशी जोशी (गरूड़) की कविताएं भी प्रशंसनीय थी। - संपादक

अल्मोड़ा से प्रकाशित कुमाउनी मासिक पत्रिका

पहरू

के लिए कुमाउंनी भाषा में कहानियां, कविताएं आदि रचनाएं सादर आमंत्रित हैं। आजीवन सदस्यता 1500 रुपए अथवा वार्षिक सदस्यता 200 रुपए भिजवाकर सहयोग करें।

- डॉ हयात सिंह रावत,
संपादक- पहरू
'इन्द्र सदन' सुनारीनौला, अल्मोड़ा, मोबा. 9412924897

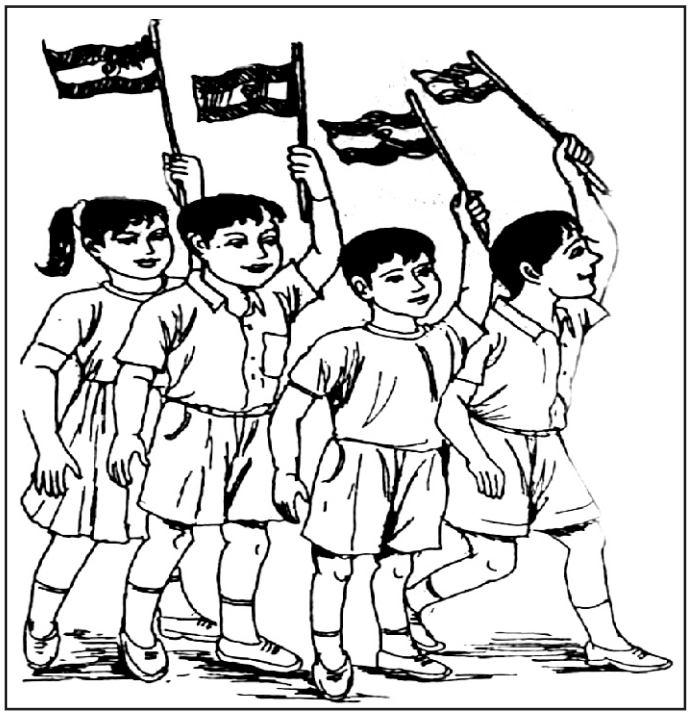

सुडोकू

सुडोकू 9×9 यानी 81 खानों का वर्ग है। यह 3×3 खानों के 9 छोटे खानों में बंटा होता है। पहेली सुलझाने के लिए खाली स्थान पर 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। ध्यान रखें आड़ी या खड़ी लाईन में एक संख्या केवल एक ही बार आए।

8		6		1	7			3
3			6	5				9
	5					6		
	8				2			
		3				2		
			3				8	
		7					4	
4				3	1			6
6			5	4		3		7

चुटकुले

भोलू - दोस्त! तुम स्कूल क्यों नहीं जाते हो?
गोलू - यार मैं जाता हूं पर टीचर मुझे कमरे में नहीं आने देते।
भोलू - तू कौन से स्कूल में जाता है?
गोलू - गर्ल्स स्कूल में ।

★ ★ ★

पिता- बेटा! आज दादी का जन्म दिन है। क्या उपहार दोगे?
चिंटू- मैं तो दादी को उपहार में फुटबाल दूंगा।
पिता- इस उम्र में वे फुटबाल का क्या करेंगी?
चिंटू- दादी जी ने भी तो मेरे जन्म दिन पर मुझे रामचरित मानस की पुस्तक दी थी न ..... इसलिए

★ ★ ★

शंटू- यार बंटू! तेरे कुत्ते ने मेरी किताब फाड़ दी।
बंटू- अभी रुक! उसे ऐसी सजा दूंगा, शैतानी भूल जाएगा।
शंटू- तुमसे पहले मैंने उसे सजा दे दी है।
बंटू- कैसी सजा दी तुमने?
शंटू - मैं उसकी कटोरी का सारा दूध पी गया।

★ ★ ★

टीचर- मोहन! तुम्हारी मां ने शिकायत की है कि तुमने सोनू के सिर में खौलता दूध डाल दिया। अच्छी बात नहीं है।
मोहन- सर जी! कल आपने बच्चों के झगड़े में सोनू से कहा कि तू कौन सा दूध का धुला है। आपकी बात सुनने के बाद ही मैंने उसे दूध से धोने का मन बनाया था।

★ ★ ★

दादाजी-रोहित! आज तुम स्कूल से भागकर आए हो। तुम्हारे स्कूल के सारे टीचर शिकायत करने आ रहे हैं।
रोहित- ओ दादाजी! आप कृपया घर के अंदर छिप जाइए। मैंने स्कूल में कहा था कि मेरे दादा मर गए हैं।

★ ★ ★

अध्यापक-खेल का शिक्षक हूं। सब जानता हूं। मुझे बॉलीबाल के बारे में सब कुछ जानकारी है। कुछ भी पूछ लो।
मोनू - हां तो सर बताइए कि नेट में कितने छेद होते हैं?

★ ★ ★

- **श्रीमन भट्ट, कक्षा 8**, केंद्रीय विद्यालय पौड़ी
- **फाल्गुनी शक्टा, कक्षा 7**, उदयन इंटरनेशनल स्कूल चंपावत
- **दिव्यांशी रावत, कक्षा 3** रा.प्रा.वि.गुड़म स्टेट थराली,चमोली
- **शिवसागर, कक्षा 8**, केंद्रीय विद्यालय देवगढ़, राजसमंद,राजस्थान
- **अभिषी गुप्ता, कक्षा 6**, आर्मी पब्लिक स्कूल रखमुट्ठी, जम्मू

शुभचिंतकों से

- बालप्रहरी केवल एक पत्रिका ही नहीं बच्चों के मन में वैज्ञानिक सोच जाग्रत करने, उन्हें साहित्यिक मंच प्रदान करने तथा रचनात्मक कार्यो व पठन-पाठन की संस्कृति से जोड़ने का एक सामूहिक प्रयास भी है।
- बालप्रहरी के लिए रचनाएं भिजवाकर सहयोग करें। पारिवारिक व परिचित बच्चों को बालप्रहरी के लिए रचनाएं लिखने के लिए प्रेरित कीजिएगा। एक कागज पर एक ही रचना लिखी हो।
- बार-बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिए आजीवन सदस्यता भिजवाएं। धनराशि पंजाब नेशनल बैंक अल्मोड़ा स्थित बालप्रहरी के खाता सं. 0962000101357002 (IFSC Code : PUNB 0096200) में सीधे भी जमा की जा सकती है। धनराशि बैंक में जमा करने पर कृपया सूचना एस.एम.एस./पोस्टकार्ड या पत्र से देकर सहयोग करें।
- बालप्रहरी के लिए शुल्क/ मनीआर्डर व रचना भेजते समय अपना नाम, पूरा पता एवं फोन न. अवश्य भेजें। पता बदलने तथा पत्रिका नियमित नहीं मिलने पर पोस्ट कार्ड /पत्र/एस.एम.एस. से सूचित करें।

बालप्रहरी को बालोपयोगी बनाने के लिए आप सबसे सहयोग एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा है। - संपादक

बालप्रहरी

(बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका)
संपादकीय कार्यालय
दरबारीनगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड - 263601
मो.: 9412162950

सदस्यता फार्म

मैं 'बालप्रहरी' की सरंक्षक सदस्यता 5000/-, आजीवन सदस्यता 2,000/-, 3 वर्ष का शुल्क 300/-रु. मनीआर्डर / ड्राफ्ट/चैक सं0 .....दिनांक .....द्वारा भेज रहा/रही हूं। कृपया मुझे पत्रिका की प्रति नियमित रूप से डाक से भिजवाएं।

नाम .....
पता .....
.....
.....
.....पिन.....
मोबाइल/ फोन .....

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-66

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर नीचे कूपन में गोला भरकर **15 अप्रैल, 2021** तक संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा-263601 उत्तराखंड के पते पर (कूपन काटकर) भेजना है। प्रतियोगिता में 14 साल तक के बच्चे भाग ले सकते हैं। अधिक बच्चों के सही उत्तर होने पर ड्रा से नाम निकाला जाएगा। सर्वोत्तम आने वाले बच्चे का नाम पत्रिका में छापा जाएगा। उपहार में 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी जाएंगी। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-65 में **श्री अभियश सिंह चौहान कक्षा 6, लेन 18 बंजारावाला, देहरादून** का चयन किया गया है। इन्हें पुरस्कार में पुस्तक/पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं।

1. भारत में हाथी को राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया?
(a) 15 अक्टूबर,1947 (b) 15 अक्टूबर, 2010
(c) 5 जून,1975 (d) इनमें से कोई नहीं

2. पेपर मैसी किस भाषा का शब्द है?
(a) फ्रांसीसी (b) उर्दू
(c) हिंदी (d) संस्कृत

3. इबोला रोग कब प्रारंभ हुआ?
(a) 2019 (b) 2020
(c) 1976 (d) 2002

4. हाथी एक समय में अधिकतम पानी पी सकता है?
(a) 500 लीटर (b) 100 लीटर
(c) 21 लीटर (d) 25 लीटर

5. साहित्यकार डॉ. शेरजंग गर्ग का जन्म स्थान है?
(a) गुड़गांव (b) देहरादून
(c) दिल्ली (d) गाजियाबाद

बालप्रहरी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-65 का सही उत्तर
1. (b), **2.** (b), **3.** (a), **4.** (c) **5.** (b)

बालप्रहरी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-66

नाम : ..... **कक्षा** .....
स्कूल : .....
.....

फोन (कोड सहित)..... **मो.** .....

	(a)	(b)	(c)	(d)
प्रश्न सं. 1	○	○	○	○
2	○	○	○	○
3	○	○	○	○
4	○	○	○	○
5	○	○	○	○

नोट : सही उत्तर वाले गोले को पेंसिल या काले पैन से (इस प्रकार (●) काला करना है।

क्या आप जानते हैं?

● विमला जोशी 'विभा'

अपने उत्तराखंड में एक जिले का नाम ऊधमसिंहनगर है। ऊधमसिंह के नाम से अन्य कई स्थानों के नाम भी हैं। चलिए आज जानते हैं कि आखिर ये ऊधमसिंह कौन थे।

ऊधमसिंह का जन्म पंजाब के सुनाम कस्बे में 26 दिसंबर,1899 को हुआ था। उनके पिता का नाम टहलसिंह कांबोज था। ये तब बच्चे ही थे। इनके माता-पिता दोनों का देहांत हो गया। तब इन्हें तथा इनके भाई को लोगों ने अमृतसर के एक अनाथालय में रखा। दसवीं तक पढ़ाई करने के बाद इन्होंने दस्तकारी सीखी।

भारत में अंगरेजों का शासन था। सन् 1919 में इनकी आयु लगभग 20 वर्ष रही होगी। ये 13 अप्रैल को बैसाखी के दिन जलियांवाला बाग में थे। मेले में आए लोगों पर पुलिस ने गोलियां चलाई। जिससे सैकड़ों लोग जिसमें बूढ़े व बच्चे भी शामिल थे, मर गए। इस नृशंस हत्याकांड को देखकर ऊधमसिंह का खून खौल उठा। उसने अपने साथियों से कहा यदि उसके पास रिवाल्वर होती तो वह पहले अंगरेजों को मारता उसके बाद स्वयं को गोली मार लेता। उसके बाद ऊधमसिंह ने क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेना शुरू कर दिया।

ऊधमसिंह ने प्रण कर लिया कि जलियांवाला नरसंहार के लिए जिम्मेदार गवर्नर माइकेल ओडायर से वह जरूर बदला लेगा। इसी बीच सरदार भगतसिंह तथा चंद्रशेखर आजाद के संपर्क में वे आए। उन्हें गिरफ्तार किया गया। चार साल तक वे जेल में रहे। उसके बाद अपने गांव में रहने लगे। देशप्रेम में अंगरेजों के खिलाफ उनका गुस्सा बरकरार था। अपना नाम मोहमम्द 'आजाद' रखकर वे इंग्लेंड चले गए। वहां उन्होंने ओडायर को 13 मार्च, 1940 को एक समारोह में गोलियों से भून दिया। 31 जुलाई,1940 को उन्हें लंदन की जेल में फांसी दी गई। अपने अंतिम बयान में उन्होंने कहा कि जलियांवाला बाग नरसंहार का बदला लेकर मैंने सिद्ध कर दिया है कि हिंदुस्तानी अब अधिक समय तक गुलाम रहने को तैयार नहीं हैं। फांसी पर चढ़ने से पहले उन्होंने कहा कि वृद्धावस्था तक कायरों की तरह रहने की अपेक्षा मात्भूमि की आजादी के लिए जवानी में फांसी चढ़ जाना। मैंने अपना राष्ट्रीय कर्तव्य समझकर ही प्रण लिया और उसे पूरा किया। आजादी के इस दीवाने को शत शत नमन

– नवाबी रोड, हल्द्वानी, नैनीताल

कहानी लिखो प्रतियोगिता – 66

दाएं बने चित्र को देखकर 14 वर्ष तक के बच्चे एक कहानी बनाकर संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा उत्तराखंड-263601 के पते पर 15 अप्रैल,2021तक भेज कर प्रतियोगिता में नि:शुल्क भाग ले सकते हैं। कहानी के नीचे अपना नाम व पता तथा उम्र लिखकर हस्ताक्षर करने हैं। सबसे अच्छी कहानी को बालप्रहरी में प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार में 200 रुपए की पुस्तकें भारत ज्ञान विज्ञान समिति अल्मोड़ा के सौजन्य से भेजी जाएंगी। कहानी लिखो प्रतियोगिता-65 के लिए निम्न कहानी का चयन किया गया। इन्हें पुरस्कार में पुस्तकें / पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं।

सच्ची सेवा

लॉकडाउन में सारा शहर बाजार बंद था। दिन में कुछ देर के लिए ही दुकानें खुलती थी। स्कूल भी सारे बंद थे। घर से कोई बाहर नहीं जा पा रहा था। घर में आजकल दिन भर टेलीविजन खुला रहता। सब लोग टेलीविजन देखते। कब दिन निकल गया। पता नहीं चलता था। पर बच्चे कहां इतनी देर तक एक जगह बैठने वाले थे। कोरोना काल में सबसे अधिक परेशान अमित और उसके साथी थे। बच्चों के सारे खेल बंद थे। अमित के पिताजी रेडक्रास सोसाइटी से जुड़े थे। कोरोना के कारण जिन गरीब लोगों को खाना नही मिल रहा था। वे रेडक्रास सोसाइटी के माध्यम से गरीबों की मदद कर रहे थे।

कोरोना महामारी अधिक न फैले। इसलिए कोई भी अपने बच्चों को घर से बाहर नहीं जाने देता। कुछ समय बाद सरकार न पूरे दिन बाजार खोलने का आदेश कर दिया।

एक दिन अमित ने कहा, ''पिताजी! बांकी तो सब ठीक है। पर दिन में बार-बार साबुन से हाथ धोना ये अच्छा नहीं लग रहा है। वैसे भी हमारे घर व गांव में तो कोरोना आने की कोई संभावना नहीं है।''

अमित के पिताजी ने कहा,'' कोरोना या कोई भी बीमारी बता कर नहीं आती। कोरोना बीमारी चले भी जाए। तब भी हमें साबुन से हाथ धोने की आदत तो डालनी ही चाहिए। कई बीमारी तो गंदगी से फैलती हैं। इसलिए केवल कोरोना के डर से नहीं हमें आगे भी साबुन से हाथ धोने की आदत डालनी होगी।'' ऐसा कहते हुए वे अपने काम के लिए निकल गए। अमित के स्कूल में भी ऑनलाइन पढ़ाई होने लगी। जहां सारे बच्चे घरों में थे। वहीं अखबार में कुछ नया काम करने वाले बच्चों की फोटो आने लगी। अमित को लगा कि उसे भी कुछ नया करना चाहिए। अमित ने मां से कहा, ''मां! दिन भर बैठे बोर हो जा रहे हैं। आज मैं खेत में हरिया धनिया तथा कुछ फूलों के पौधे लगाना चाहता हूं।''

मां ने कहा, '' ये तो तुमने बहुत अच्छा सोचा है। मैं भी तुम्हारी मदद करूंगी।'' कहकर मां ने अमित की पीठ थपथपाई। पहले दिन अमित ने सारे खेत की खुदाई की। दूसरे दिन वह खेत में धनिया बोने लगा। मां ने धनिया बोने तथा फूलों की जड़ें लगाने में मदद की। उसे लगा कि सारा काम तो मां कर रही है। मुझे खाली नहीं बैठना चाहिए। वह आंगन में झाड़ू लगाकर सफाई करने लगा। घर के कामों में अमित की भागीदारी से सब लोग खुश थे।

— शिवांशी जोशी, कक्षा 5
राजकीय प्राथमिक विद्यालय सेलाबगड़, गरूड़, बागेश्वर

इसके अतिरिक्त देवरक्षिता नेगी (चौखुटिया), महिमा तिवारी (अल्मोड़ा)हितैषी तिवारी (हल्द्वानी), कोमल रावत (हरमनी)वेदवित ओझा, (भीलवाड़ा), इंधात जोशी(देवीधूरा), कोमल खेतवाल (करूली),अवंतिका ओझा (भीलवाड़ा), रितिक पचौली(खटीमा), आयुष बिष्ट (बरेली), अंशिका कुशवाहा(रायपुर,छत्तीसगढ़) तनूजा राना (मल्ली मिरई) अभिश्री गुप्ता (जम्मू) की कविताएं भी प्रशंसनीय थी। -संपादक

अनमोल वचन

- हम दूसरों के गुणों की अपेक्षा उनकी गलतियों से अधिक सीख लेते हैं। - लोंग फैलो
- अपनी छाप गुणवान के रूप में डालनी चाहिए। रूपवान के रूप में नहीं। -महात्मा गांधी
- *एक वास्तविक शिक्षक का जिज्ञासु होना आवश्यक है।* - सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन
- *आप जितनी सख्ती अपने साथ दिखाएंगे। जीवन आपको उतना ही आसान लगेगा।* - *रोबिन शर्मा*

संकलन :

जी. आर.एस.यादव भाई, 28 प्रधानमंत्री सचिवालय अपार्टमेंट
विकासपुरी, नई दिल्ली- 11 00 28

पहेलियां

✦ सुधा जौहरी, ए-2 विजय पथ, तिलकनगर,जयपुर, राजस्थान

1. पोलो खेलूं रेस में दौडूं, मेरी अजब है शान,
तांगा और बग्घी भी खेंचूं, दूल्हा का मैं मान।
2. रोके तीखी सर्द हवाएं, भारत का है प्रहरी,
कही बर्फ कहीं नदियां, झरना कहीं घाटियां गहरी।
3. रंग तीन हैं लहराता है चक्र है उसकी शान,
वीर उसे न झुकने देते चाहे जाए जान।
4. सागर तट पर कितने ऊंचे लटक रहे अनगिनत फल,
ऊपर जटा जूट है लेकिन, अंदर मीठा शीतल जल।

उत्तर: 1. घोड़ा 2.हिमालय 3. भारत का तिरंगा झंडा 4.नारियल

आप कितने सूक्ष्मदर्शी हैं?

चांद मोहम्मद घोसी, नन्हा बाजार, मेडता सिटी (राज.)

नीचे चित्र दिखने में तो एक जैसे लगते हैं लेकिन एक से हैं नहीं। चित्रकार ने इनकी नकल करते समय भूल से दस गलतियां रख दी हैं। अब आप अपनी सूक्ष्म दृष्टि से सभी गलतियां ढुंढिए :-

कुमाउनी कविता :

एगो बसंत

● डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'

चैत-वैशाख ऐगो बसंत,
आब ठंडक है गो अंत।
रंगिल-चंगिल दिन ऐ गई,
रंग-रंगाक फूल खिलन पड़ गई।
खुश्बु फैल गे नई-नई,
तितली-भौर लै मंडरानई।
घुघुतिक घूर-घूर शुरू है गे,
कोयलकि मिठि-मिठि अवाज सुनींन फैगै।
वन-वन हंसणौ बुरांश,
चारों तरफ पलीन लागि रौ घास।
रूख-डावों में कौंल-कौंल पात,
मन कौंनौ देखनौ दिन-रात।

– 'सिद्धायन' भैरवां, चंपावत, उत्तराखंड
मोबाइल : 9411347934

गढ़वाली कविता :

घर बण डालि

● प्रीतम अपछ्याण

बांज बुरांस अंयार बणू मा,
खैरु उतीस तिलौंज बणू मा।
तेतर भत्मोया कोलु सतपुड़ा,
काफल भमोर रुयांस बणू मा।
भ्यूंलू खड़ीक तिमुला घरसारी,
गेंठि तूणि पय्यां घरसारी।
मेलु घिंघारू हिंसर कूंज छन,
रीठु गौंति सेमल घरसारी।

– राजकीय इंटर कालेज
अमस्यारी, गरूड़, बागेश्वर
मोबाइल- 9412924354

पहाड़ा ननां हाल–चाल

मितुरो,

पहाड़ा स्कूल आजि बंदै छन। ऑनलाइन पढ़ाई चलि रै। ऑनलाइन पढ़ाई क्ये चली। घर में सब ननां लिजी अलग-अलग स्मार्टफोन ऐ गयीं। कर्ज गाड़ि बे लै लोग ननां लिजी स्मार्ट फोन खरीदण रयीं। पढ़ाई-लिखाई तो क्ये हूंछ। दिन भर नांन-तिन मोबाइल परै ब्योमी रूनी।

मोबाइल कंपनी वालूं खूब चलि रै। क्ये करछा गौं पन सिगनलै नहां। कैकौ फोन लै आयौ तो नि सुणिन। फोन करण हूं लै उच्च धार में जाण पड़ूं। फोना वजैल ननां नींन लै हरै गे। आब आदु रात तक फोनै देखण में लागि रूनी। रतै बेरे उटि जाणी। नना हूं पूछौ तो बतौण रयीं कि मोबाइल पर स्कूलौ होमवर्क करण रयीं। स्कूल वालूल बहुत काम दि रौ बल। नान हर बखत मोबाइल परै होमवर्क करण रयीं। हमार समझ में क्ये नि उण रौय।

कोरोना बीमारी बाद पहाड़ा नान बखत-बखत पर सापुणैल हाथ धूण रयीं। मास्क तो सबूं पास छू। पर मास्क कैं सब गाउ में लटकै दिणीं। आज भोउ सब ननां ध्यान मोबाइल पर छू। या सब क्रिकेट खेलण में लागि रयीं। बांकि फिर लेखूल।

तुमर मितुर,
प. गुसाईराम आचार्य

पहाड़ के बच्चों के हाल–चाल

दोस्तो,

पहाड़ के स्कूल अभी बंद ही हैं। ऑनलाइन पढ़ाई चल रही है। ऑनलाइन पढ़ाई क्या चली। घर में सब बच्चों के लिए अलग-अलग स्मार्टफोन आगए हैं। कर्ज निकालकर भी लोग बच्चों के लिए स्मार्टफोन खरीद रहे हैं। पढ़ाई लिखाई तो क्या होती है। दिन भर बच्चे मोबाइल पर व्यस्त रहते हैं।

मोबाइल कंपनी वालों की खूब चल रही है। क्या करते हो गांव में तो सिगनल ही नहीं है। किसी को फोन भी आया तो सुनाई नहीं देता है। फोन करने के लिए भी ऊंची पहाड़ी पर जाना पड़ता है। फोन की वजह से बच्चों की नीद भी खो गई है। अब आधी रात तक फोन को ही देखते रहते हैं। सुबह जल्दी उठ जा रहे हैं। बच्चों से पूछा तो बताते हैं कि मोबाइल पर स्कूल का होमवर्क कर रहे हैं। स्कूल वालों ने बहुत काम दिया है बल। बच्चे हर समय मोबाइल पर होमवर्क कर रहे हैं। हमारी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।

कोरोना बीमारी के बाद पहाड़ के बच्चे समय-समय पर साबुन से हाथ धो रहे हैं। मास्क तो सभी के पास है। पर मास्क को सब गले में लटका रहे हैं। आजकल सब बच्चों का ध्यान मोबाइल पर है या सब क्रिकेट खेलने में लगे हैं। बांकी फिर लिखूंगा।

तुम्हारा दोस्त,
प. गुसाईराम आचार्य

पुस्तक समीक्षा :

माशी की जीत

बाल कहानी संग्रह में 16 कहानियां संग्रहीत हैं। कहानियां जहां बच्चों का मनोरंजन करती हैं वहीं बच्चों को आगे बढ़ने तथा कभी भी हार न मानने की प्रेरणा देती हैं।बच्चों को सामाजिक सरोकारों तथा मानवीय मूल्यों से जोड़ने तथा वैज्ञानिक सोच जाग्रत करने में भी कहानियां सक्षम हैं। आकर्षक चित्रों के साथ पुस्तक की साज-सज्जा भी अच्छी है।

पृष्ठ संख्या : 88 मूल्य- 200/- रुपए
रचनाकार : डॉ. शील कौशिक
प्रकाशक: साहित्यागार,धामाणी मार्किट की गली,चौड़ा रास्ता,जयपुर-302003

संस्कारित बाल कहानियां

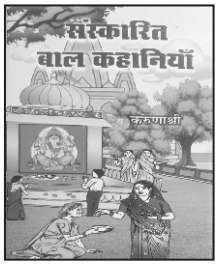

बाल कहानी संग्रह में 29 कहानियां दी गई हैं। कहानियां जहां बच्चों को आध्यात्म की ओर ले जाती हैं वहीं उनके मन में दया, प्रेम, संघर्ष, साहस, ईमानदारी आदि मानवीय मूल्यों का बीजारोपण करने में सक्षम हैं। चित्रों ने जहां पुस्तक को आकर्षक बनाया है, वहीं मुखपृष्ठ भी बहुत सुंदर है।

पृष्ठ संख्या : 144 मूल्य- 250/- रुपए
रचनाकार : करूणाश्री
प्रकाशक:साहित्यागार,धामाणी मार्किट की गली,चौड़ा रास्ता, जयपुर 302003

महीयसी पन्ना

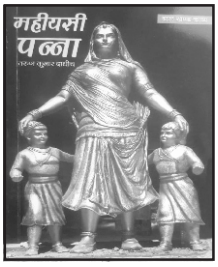

बाल खंड काव्य में वीरांगना पन्ना के त्याग तथा बलिदान को खंड काव्य के नियमानुसार सात खंडों में सरसी छंद में सरल भाषा में दिया गया है। बच्चों के मन में देश प्रेम जाग्रत करने तथा देश के लिए त्याग तथा वलिदान करने वाले व्यक्तित्व को विस्तार से बच्चे जानेंगे। मुखपृष्ठ बहुत आकर्षक बनाया गया है।

पृष्ठ संख्या : 64 मूल्य- 60/- रुपए
रचनाकार : तरूणकुमार दाधीच
संपर्क : अनुपम, 36 सर्वरितु विलास, मेन रोड,उदयपुर, राजस्थान-313001

श्री रामकथामृतम

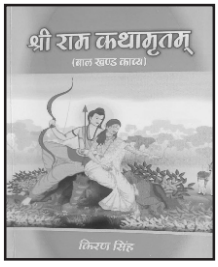

बाल खंड काव्य में लोक महानायक पात्र राम की कहानी को 16 अलग-अलग सर्गों में बहुत ही सरल भाषा में पद्य कथा के माध्यम से बच्चों के लिए कहने का प्रयास किया गया है। स्थान-स्थान पर पौराणिक चित्र भी दिए गए हैं। निषाद तथा शबरी जैसे प्रसंग आज के संदर्भ में बच्चों के लिए उपयोगी ही नहीं जरूरी भी हैं।

पृष्ठ संख्या : 72 मूल्य- 150/- रुपए
रचनाकार : किरण सिंह
प्रकाशक : अखार, थाना दुबहर,बलिया,उ.प्र.-277001

पुस्तक समीक्षा :

सही दिशा की ओर

बाल कहानी संग्रह में 26 कहानियां संग्रहीत हैं। कहानियां बाल मनोविज्ञान पर खरी उतरती हैं। कहानियां मनोरंजक होने के साथ ही बच्चों को सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों से जोड़ने के साथ उन्हें रचनात्मक कार्यो के लिए प्रेरित करती हैं। रंगीन मुखपृष्ठ तथा अंदर कहानी के साथ दिए चित्र बच्चों को आकर्षित करने में सक्षम हैं।

पृष्ठ संख्या : 116 मूल्य- 150/- रुपए
रचनाकार : श्रीमती सुशीला शर्मा
संपर्क : 64-65 विवेक विहार, न्यू सांगानेर रोड, सोडाला,जयपुर-302019

आओ सब स्कूल चलें हम

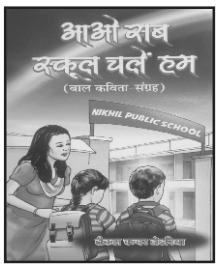

बाल कविता संग्रह में 37 कविताएं प्रकृति, पर्यावरण, संस्कृति, देश प्रेम आदि विषयों पर दी गई हैं। कविताएं जहां बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन करेंगी, वहीं उन्हें रचनात्मक कार्यो के लिए प्रेरित करने तथा उनके अंदर आत्म विश्वास पैदा करने में भी सक्षम हैं। बच्चों के मनोविज्ञान को समझते हुए चित्र भी दिए गए हैं।

पृष्ठ संख्या : 48 मूल्य- 60/- रुपए
रचनाकार : टीकम चंदर ढोडरिया
संपर्क : काव्यांजलि, पंचायत समिति के पास, छबड़ा, बारा, राजस्थान- 325220

बाल मनोविज्ञान की लघु कथाएं

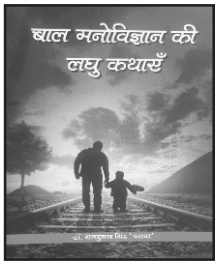

इस पुस्तक में लघु कथाओं के केंद्र में बच्चे हैं। बच्चों की गतिविधियों से ही रचनाकार ने कथावस्तु को लघुकथा में पिरोने का प्रयास किया है। लघु कथा के माध्यम से पुस्तक में बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखा गया है। बगैर अतिरिक्त पृष्ठ जोड़े हुए इस पुस्तक में चित्र भी होते तो पुस्तक और अधिक आकर्षक बनती।

पृष्ठ संख्या : 48 मूल्य- 35/- रुपए
रचनाकार : डॉ. रामदुलार सिंह 'पराया'
संपर्क : उदितनगर,कुसुम्ही,चुनार,मिर्जापुर,उ.प्र.-231304

कोई गीत सुनाओ न

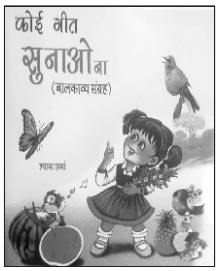

बाल कविता संग्रह में 40 कविताएं संग्रहीत हैं। रचनाएं बच्चों को प्रकृति, स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण तथा सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों से जोड़ती हैं। बाल मनोविज्ञान को समझते हुए रचनाकार ने बच्चों के मनोरंजन के साथ ही उन्हें प्रेरणा देने का प्रयास भी किया है। मुखपृष्ठ बहुत आकर्षक है।

पृष्ठ संख्या : 48 मूल्य- 110/- रुपए
रचनाकार : श्यामा शर्मा
संपर्क : बी- 422 आर के पुरम, कोटा, राजस्थान-324010

समीक्षक : रतनसिंह किरमोलिया : 7534007179

कहानी :

गिरगिट और चार चक्र

• पूर्णिमा पांडे

हलो, इतने गुमसुम क्यों हो, अकेले बोर हो रहे हो। यहां आओ, मैं कुछ मजेदार बातें सुनाता हूं। मुझे, देख नहीं पा रहे हो, अरे, मैं यहां गेट के ऊपर बैठा हूं। तुम जुगनू हो न, कहानी पढ़ने-सुनने के शौकीन, मैं ठीक कह रहा हूं न।

चलो, मैं कौन हूं यह भी बता दूं। मैं गिरगिट हूं। मेरा नाम है गिरगिट। मजेदार है, सुनते ही हंस पड़े न तुम। मैं अक्सर ऊंघते-ऊंघते गिर पड़ता हूं इसी से मेरा यह नाम पड़ गया है।

गिरगिट की तरह रंग बदलने का मुहावरा तुमने अपनी किताब में जरूर पढ़ा होगा पर मैं वैसा बदलू नहीं एक सीधा-सादा प्राणी हूं।

अपने बारे में अधिक बातें करना मुझे पसंद नहीं। इसलिए तुम्हें कुछ और सुनाता हूं। न ... न ...कहानी नहीं, एकदम सच्ची घटना। वह भी एकदम ताजा। सुनोगे?

तो शुरू करूं अपनी बात। कल सुंदर सा धूपछांही दिन था। बारिश के बाद खिली धूप में बगिया झिलमिला रही थी। छोटे-बडे पक्षी चौपाये गणी, कीट-पतंग सभी मौसम का मजा ले रहे थे। मैं भी पत्तों से छनती धूप में, सबकी नजरों से ओझल, अपनी खास जगह पर बैठा झपकी लेने की तैयारी में था। उधर, छत को सीढ़ी के पास अंगूर की बेल के नीचे चार दोस्त सिर जोड़े बातें कर रहे थे। तुम उनको नहीं जानते। इसलिए पहले उनका परिचय दे दूं। बगिया में सब उन्हें चार-चक्रम बुलाते हैं। चारों पक्के दोस्त हैं। एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। फिर भी कमाल का तालमेल है उनके बीच में।

एक है गोल मटोल, चलते-चलते उलट जाता है। फिर देर तक पीठ के बल पड़ा हुआ हवा में अपनी टांगे चलाता रहता है। दूसरा हमेशा उछलता रहता है। ऊंची कूद लगाते समय कभी अचानक, उसकी लंबी सींकिया टांगें आपस में ही उलझ जाती हैं। तीसरा है बहुत कोमल, बिल्कुल छुईमुई सा। आसपास जरा सी हलचल होते ही अपने नरम सींगों को माथे में समेट कर पीठ के खोल में छिप जाता है। अब चौथे का तो कहना ही क्या है। उसे हवा के साथ यहां-वहां भागना पसंद है। फूलों के बीच उसकी लुकाछिपी भी दिन भर चलती रहती है।

चारों की खासियत जान कर तुम इन्हें पहचान गए होगे। नहीं तो चलो इनके नाम भी सुन लो-ये हैं बीटल, टिड्डा, घोंघा और प्यारी सी तितली, हमारी बगिया के चार-चक्रम।

इनकी दोस्ती कैसे हुई वह भी एक मजेदार किस्सा है। लेकिन अभी तो कल की घटना सुनो। तो चारों दोस्त बातें करने में व्यस्त थे। वे बहुत परेशान लग रहे थे। क्या हुआ यह जानने के लिए मैं चुपचाप उनके पीछे पहुंच गया। वे बगिया की दीवार के पास रखे गत्ते के एक छोटे से डिब्बे को लेकर बातें कर रहे थे। जानते हो जुगनू! डिब्बे में क्या था।

अखबार कुतर कर बनाए ढेर पर चार नन्हे से चूहे थे। नरम गुलाबी पोटलियों जैसे वे बच्चे बस जरा सा हिल डुल सकते थे। उनकी आंखें भी नहीं खुली थी। मैंने तितली को यह कहते हुए सुना कि चौकीदार रामू ने कुछ देर पहले घर से बाहर लाकर डिब्बा वहां डाल दिया था। बेचारे बच्चे डिब्बे में थे परंतु उनकी मां कहां थी? दोस्तों को परेशान देख मैंने मदद का हाथ बढ़ाया। मेरे पास भी कुछ जानकारी थी।

सुबह के समय रामू चूहेदानी में फंसे चूहे को घर से बाहर ले गया था। वह उसे दूर कूड़ेदान में छोड़कर आने की बात कहता जा रहा था। इससे यह बात साफ हो गई कि बच्चों की मां घर से बाहर पहुंच गई है। अब हमें यह सोचना था कि बच्चों को उनके हाल पर छोड़ दें या उन्हें बचाने की कोशिश करें। काम कठिन था पर हम मुंह नहीं मोड़ सकते थे। हमें तीन काम करने थे बच्चों को सुरक्षित रखना, उनकी मां को खोजना, उसे बच्चों के पास ले आना। हमारे पास समय बहुत कम था। सब कुछ जल्दी से जल्दी हो जाए यह बहुत जरूरी था।

तुम्हारी बिल्ली डॉली की पहुंच से दूर रखने के लिए बच्चों को खुली जगह से हटाना था। मैंने किसी प्रकार डिब्बे को खिसका कर सीढ़ियों के नीचे सुरक्षित रख दिया। हमने तय किया कि बगिया में और आसपास की जगहों पर चूहों के बिल खोजें और उनसे मदद मांगें। घोंघे ने एक अच्छा सुझाव दिया कि तितली सड़क के पार उड़कर कूड़ादान तलाश करे। बच्चों की मां के मिलने की सबसे निश्चित जगह वहीं हो सकती थी।

तितली तुरंत उड़ चली। हम चारों भी चूहों को खोजने लगे। हमारा बिल खोजो कार्यक्रम दोपहर भर चला पर काम नहीं बना। हमें अब तितली की प्रतीक्षा थी। शायद वह अच्छा समाचार ले आए। समय बहुत बीत चुका था। भूखे बच्चे मां के लिए बेचैन हो रहे थे। हम चुपचाप बैठे थे। बिना मां के बच्चे कब तक जी सकेंगे यह चिंता बढ़ती जा रही थी। हम सब हताश होने लगे थे। अचानक दौड़ने की आवाज आई और कोई हमारे ऊपर से छलांग लगाकर बच्चों के डिब्बे में कूद गया। डर से हम लोग भी उछल पड़े। ऐसा लगा कि नन्हें चूहों की गंध बिल्ली को वहां खींच लाई है। और मौका पाकर उसने दांव लगा दिया।

हम कुछ सोच पाते इससे पहले पांवों की फड़फड़ाहट सुनाई दी। तितली हमारे ऊपर गोलाई में उड़ रही थी। यह खुशी का संकेत था। हमें यह समझने में अब देर नहीं लगी कि डिब्बे में बिल्ली नहीं बच्चों की मां कूदी थी। अपने बच्चों को पाकर मां की आंखें खुशी से चमक उठी थी। हम सब भी खुशी से पागल हो रहे थे। अपने अपने तरीके से उछल थक गए। तब

शेष पृष्ठ 26 पर.....

उत्तराखण्ड शासन
गणतंत्र दिवस
की सभी प्रदेशवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं

प्रिय प्रदेशवासियों,

गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूँ। बाबा साहब डॉ. भीमराव आम्बेड़कर सहित उन सभी महान संविधान निर्माताओं को भी शत-शत नमन करता हूँ , जिन्होंने विभिन्न जातियों, धर्मों व क्षेत्रीय विभिन्नताओं के होते हुए भी हम सभी को एकता के सूत्र में पिरोने वाला संविधान दिया।

मैं अपने स्वतंत्रता संग्राम के नायकों, देश की सीमाओं व देश की आन्तरिक सुरक्षा में शहीद हुए सैनिकों की स्मृति को भी नमन करता हूँ। प्रदेशवासियों की ओर से राज्य आन्दोलन के अमर शहीदों को भी शत-शत नमन करता हूँ।

आईये, गणतंत्र दिवस की इस पावन बेला पर हम सभी संविधान के मूलभूत आदर्शों की रक्षा एवं राज्य तथा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए संकल्पबद्ध हों।

जय हिन्द-जय उत्तराखण्ड

त्रिवेंद्र सिंह रावत
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

बातें कम... काम ज्यादा

- गैरसैण राजधानी परिक्षेत्र के अवस्थापना विकास के लिए अगले 10 वर्ष में ₹25 हजार करोड़ किये जायेंगे खर्च
- श्रद्धालुओं की सुविधाओं और चारधाम के विकास की दृष्टि से चारधाम देवस्थानम् बोर्ड का गठन
- ई-कैबिनेट, ई-ऑफिस, सी.एम. डैश बोर्ड उत्कर्ष, सी.एम. हेल्पलाईन 1905, पारदर्शी ट्रांसफर एक्ट के तहत कार्य संस्कृति में गुणात्मक सुधार
- आत्मनिर्भर उत्तराखण्ड और 'वोकल फॉर लोकल' के लिए सरकार ने की बड़ी पहल। मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना से युवा बन रहे आत्मनिर्भर
- '13 डिस्ट्रिक्ट - 13 न्यू डेस्टीनेशन ' से नए पर्यटन केन्द्रों का हो रहा विकास
- फिल्मकारों के लिये बेस्ट शूटिंग डेस्टिनेशन बना उत्तराखण्ड, साढ़े तीन साल में 300 से अधिक फिल्मों एवं सीरियलों की शूटिंग
- सभी जिलों में आई.सी.यू. स्थापित, पिछले साढे तीन साल में चिकित्सकों की संख्या दोगुनी से अधिक
- किसान सम्मान निधि के अन्तर्गत 8.57 लाख किसान हुए लाभान्वित
- सौभाग्य योजना के तहत 2 लाख 50 हजार से अधिक घर किये गये रोशन। अंधेरे में रह रहे 94 गाँवों में पहुँचाई बिजली
- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में मार्च 2017 से अभी तक 6409 किलोमीटर लम्बाई का निर्माण कार्य पूर्ण व 657 बसावटों को सड़क से जोड़ा गया

कोविड-19

दवाई भी, कड़ाई भी

अपना मास्क पहनना ना भूलें, अपनी नाक व मुंह को अच्छी तरह से ढकें

हाथों को सेनेटाइज करते रहें

हमेशा 2 गज की दूरी बनाकर रखें

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी

www.uttarainformation.gov.in | UttarakhandDIPR | DIPR_UK | Trivendra Singh Rawat

सूरज दादा

● मीरा सिंह 'मीरा'

सूरज बाबा आओ जल्दी जी,
सता रही हमें सरदी जी।
रजाई तान कर सोए हैं,
किन सपनों में खोए हैं।
इंतजार कर रही दुनिया,
पहनो अपना वर्दी जी ...।
कुहासों ने चादर तानी,
कर रहे अपनी मनमानी।
बंद हुए खिड़की दरवाजे,
आपने तो हद कर दी जी ...।
थर-थर कांप रही नानी,
यूं ही गर आप रूठे रहे।
बन जाएंगे हम कुल्फी जी ...।
सुनहरी किरणें बिखरा दो,
हम सब की मुस्कान लौटा दो।
इतना गुस्सा नहीं भला,
बात सच्ची कह दी जी।
सूरज बाबा आओ जल्दी जी ...।
सता रही हमें सर्दी जी।

- डुमरांव टेक्सटाइल डुमरांव, बक्सर, बिहार
मोबाइल- 9304674258

मेरा भाई

● घनानंद पांडेय 'मेघ'

स्वप्न सजाता मेरा भाई,
सबको भाता मेरा भाई।
मेरा भाई वीर सिपाही,
सीमा में है डटा खड़ा।
मातृभूमि की रक्षा में वह,
फर्ज निभाता बहुत बड़ा।
रुष्ट न होता मेरा भाई,
कष्ट उठाता मेरा भाई।
पाठ पढ़ाता सच्चाई का,
इसी लिए है सबका प्यारा।
अपनी कर्मठता के कारण,
करतब दिखलाता है न्यारा।
राह बताता मेरा भाई,
नित मुस्काता मेरा भाई।
प्यार करे जो मातृभूमि से,
भाई हो तो ऐसा ही हो।
वीर सुभाष सा भगत चंद्र सा,
वीर शिवा राणा जैसा हो।
वीर भगत सा मेरा भाई,
गीत सुनाता मेरा भाई।

- लखनऊ, उ.प्र.
मोबाइल- 9415426034

पर्यावरण

● हंसा बिष्ट

आओ भाई आओ बहनो,
पर्यावरण संवारें हम।
पेड़ लगाएं इन्हें बचाएं,
करें धरा की रक्षा हम।
वाहन कम से कम चलाएं,
जिससे धूल-धुआं हो कम।
उचित जगह हों कल कारखाने,
जिससे हो प्रदूषण कम।
जल ही है जीवन हम सबका,
जल को हमें बचाना है।
इसको दूषित करें नहीं हम,
यही हमारा खजाना है।
महानगरों का शोर शराबा,
जो करता है शांति भंग।
सुनने में भी कष्ट बहुत है,
इससे बिगड़े सारे ढंग।
सारा जगत रहे सुख पूर्वक,
इसका रखना हमको ध्यान।
रहे धरा यह हरी-भरी,
करने होंगे ऐसे काम।

- खुर्पाताल, नैनीताल
मोबाइल- 9411596004

.....पृष्ठ 23 का शेष (गिरगिट ओर चार चक्र)

हमने तितली की कहानी सुनी। तितली ने कूड़ेदान तलाश कर किसी प्रकार बच्चों की मां को खोज लिया। वह परेशान थी और उसके पंजों में चोट भी लगी थी। तितली ने उसे हौसला दिया। बच्चों के सुरक्षित होने का समाचार जान कर उसमें जैसे नई जान आ गई।

तितली के साथ घर पहुंचकर वह इतनी उत्साहित थी कि ऊंची छलांग से हम सबको चौंका दिया। मां और बच्चों को एक साथ देखकर हम सब कितने खुश थे यह बताना मुश्किल है।

तो जुगनू, इस तरह कल का दिन बहुत से रोमांच और एक अच्छी कोशिश के साथ बीत गया। मेरे लिए तो और भी अच्छा हुआ चार नए दोस्त मिल गए। आज हमसे जी भर कर बातें करना भी मजेदार रहा। पर अब बातें बंद, मुझे जोरों की भूख लगी है। मैं खाने की तलाश में निकलता हूं। तुम्हें जब भी बातें करने या मुझसे कुछ सुनने का मन करे चले आना। मैं यहीं पर मिलूंगा। अच्छा दोस्त चलता हूं। फिर मिलने तक बॉय ... बॉय।

- 'आम्रकुंज' उनियाल भवन, बुधानी मार्ग, श्रीनगर (गढ़वाल)
मोबा. - 9412061239

इंजीनियर होती है दीमक

दीमक की संरचना चींटी से मिलती है। इसलिए इसे सफेद चींटी भी कहा जाता है। दीमक की अधिकतर प्रजातियां लकड़ी खाकर अपना जीवन यापन करती हैं। पता भी नहीं चलता कि कब इसने पूरे घर पर अपना साम्राज्य फैला दिया हैं। तुमने किसी दीवार में मिट्टी की लंबी उभरी लाईन जरूर देखी होगी। बस ये दीमक का कमाल ही है। दीपक मिट्टी के साथ अपने मुंह में राल मिलाकर तैयार करती है अपना घर। इनके घर को बॉबी (Termitary) कहा जाता है। ये सब समूह में मिलकर चौड़ी बस्तियां बनाती हैं। ये एक राजसी कक्ष भी तैयार करते हैं। जिसमें इनकी महारानी जो एक दिन में हजारों अंडे देती है, वह निवास करती है। इनका घर इन्हें सूरज की गरमी एवं धूप से बचाता है। सुरक्षा की दृष्टि से बने डिजाइनदार इनके घर बनाना हर किसी के बस की बात नहीं हैं। एक इंजीनियर की तरह दीमक अपनी बांबी का निर्माण करती हैं। इसलिए दीपक को इंजीनियर तक कहा जाता है।

● कृपालसिंह शीला, सरपट्टा, बासोट, अल्मोड़ा

कहानी :

यही मुझे दे दो

● डॉ. शकुंतला कालरा

दीनू बारह वर्ष का एक अनाथ बालक है। जो माता-पिता की मृत्यु के बाद अकेला ही अपनी झोपड़ी में रहता है। उसकी पढ़ाई छूट गई। छठी कक्षा में ही उसने स्कूल छोड़ दिया। कचरा बीनकर फिर उसे बेचकर अपना गुजारा करता है। थोड़े-थोड़े पैसे बचाकर उसने 500 रुपए इकट्ठे किए हैं। उसे कुत्ता रखने का बहुत शौक है। एक दिन वह कुत्तों की दुकान पर जाता है। जहां खुली खाली जगह में कई कुत्ते बंधे हुए हैं। उनकी रस्सी इतनी बड़ी है कि वे अपने खूंटे से बंधे होने पर भी घूम सकते हैं। बहुत सुंदर, बलिष्ठ, बड़े-बड़े और महंगे-महंगे कुत्ते हैं। हर कुत्ते के खूंटे के उपर उसके साथ एक स्लिप टंगी है 20,000/-, 10,000/-, 5,000/-। वह बड़ी देर तक कुत्तों को देखता रहता और फिर अपने पोटली में रखे 500 रुपए। वह कई दिनों तक लगातार रोज दुकान पर आता पर बिना खरीदे लौट जाता। पांच हजार से कम कोई कुत्ता ही नहीं था। इतने पैसे कबाड़ के धंधे में इकट्ठा करने में तो उसे पूरा जन्म लग जाता। यह सोचकर वह दुःखी मन से लौट आता।

एक दिन वह बहुत देर तक खड़ा रहा। कुत्तों को देखकर ही वह खुश हो जाता। उन्हें दौड़ता देखता, खेलता देखता। एक दूसरे के पीछे जाते हर कुत्ते को देर-देर तक निहारता रहता। किसी-किसी की काली-भूरी आंखों में खो जाता तो किसी की बालों से भी घनी पूंछ को देखता रहता। तो किसी की छोटी-छोटी पूंछ को। कोई चितकबरा उसे भा जाता तो कोई मोती की तरह सफेद। किसी-किसी का काला रंग तो इतना चमकीला होता कि उसे लैकरेडार, जर्मन शैफर्ड, पॉमेरिन कई किस्म के कुत्ते थे। कोई भी खरीददार आता। दुकानदार उसकी नस्ल और कीमत बताता। बेचारा दीनू अपनी औकात सोचकर चुप रह जाता। उसने तो कभी यह जाना ही न था कि इनकी तरह-तरह की नस्लें होती हैं। न इनके अंगरेजी नामों से परिचित था और न ही यह जानता था कि ये इतने महेंगे होते हैं। अमीर लोग ले जाकर बड़े-बड़े या छोटे खूबसूरत कुत्तों को अपने घरों में शान-शौकत से रखते हैं। हां इतना वह जानता था कि इनके लिए अलग कमरा होता है। वे लोग इन्हें पलंग पर सुलाते हैं और गाड़ियों में घुमाते हैं। अचानक उसकी निगाह एक ऐसे कुत्ते पर पड़ी जो अपनी जगह चुपचाप बैठा था। वह नहीं दौड़ रहा था। हिलडुल भी नहीं रहा था। दीनू बड़ी देर तक उसके पास खड़ा रहा पर वह दौड़ने के लिए तो क्या खड़ा होने के लिए भी नहीं उठा।

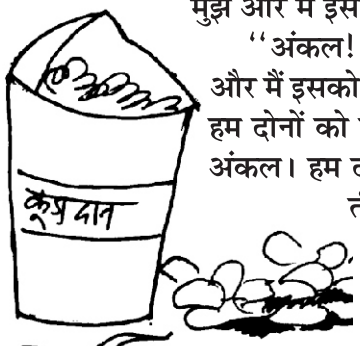

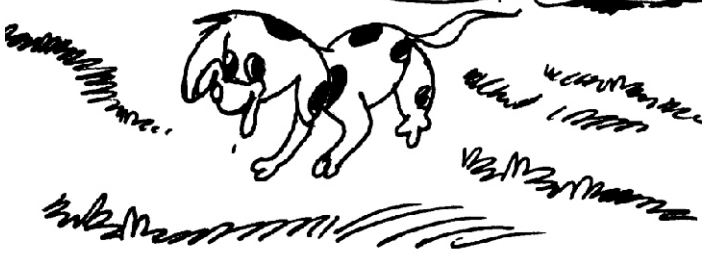

''अंकल मैंने एक कुत्ता देखा। वह नहीं दौड़ रहा। बांकी सब दौड़ रहे हैं। अंकल वह कुत्ता हिलता-डुलता नहीं। मैं कई दिनों से आता हूं। इसे ऐसे ही उदास और गुमसुम बैठे हुए देखता हूं। यह किसी के काम नहीं आएगा। मेरे पास कुल 500 रुपए हैं। इसे आप मुझे 500 रुपए में दे दीजिए।''

''बेटा! मेरी दुकान में कोई कुत्ता पांच सौ का नहीं है। इनकी कीमत हजारों में है। थोड़े पैसे और इकट्ठे कर बेटा। फिर ले जाना''। दुकानदार ने उसे उपर से नीचे तक देखते हुए कहा।

''पर इतने पैसे तो मेरे पास कभी भी इकट्ठे नहीं होंगे अंकल।'' उसने बड़ी मासूमियत से कहा और हसरत भरी निगाहों से उसी कुत्ते की ओर देखने लगा।

''अच्छा बेटा यह तो बताओ! इसे तुम क्यों लेना चाहते हो? यह तो दौड़ नहीं सकता। और बेटा इसकी तीन टागें हैं। यह तो ठीक से चल भी नहीं सकता। ज्यादा समय यह ऐसे ही बैठा रहता है।''

''अंकल! आप मुझे इसे 500 रुपए में दे दीजिए। यह किसी और के काम नहीं आएगा। पर मुझे इसकी जरूरत है। जब यह तीन टांगों से सरकेगा। धीरे-धीरे सरकता मेरे पास आएगा। मेरे पैर सूंघेगा-चाटेगा। इसका प्यार मुझे खुशी देगा। फिर मैं इसके बदन पर हाथ फिराऊंगा। पुचकारूंगा तो यह पूंछ हिला-हिलाकर अपनी खुशी जाहिर करेगा। इस तरह यह मुझे और मैं इसको देख-देखकर खुश होंगे।''

''अंकल! मैं सच कह रहा हूं। यह मुझे और मैं इसको देख-देखकर बहुत खुश होंगे। हम दोनों को एक दूसरे दोस्त की जरूरत है अंकल। हम दोनों अकेले हैं। जब ये अपनी तीन टांगों से मेरी ओर चलकर आएगा तो मैं इसी में खुश हो जाउंगा।''

''तुम जानते हो इसकी चौथी टांग काफी कमजोर हो चुकी है।''

''मैं इसकी रोज मालिश करूंगा। ईश्वर ने चाहा तो शायद एक दिन कमजोर टांग में ताकत आ जाए और वह

चलने लगे।''

''पर तुम्हारी क्या मजबूरी है? तुम इसे क्यों खरीदना चाहते हो? मैं तो सोचता हूं इसे कहीं सड़क पर छोड़ आऊं। क्योंकि इससे मेरी दुकान की शोभा घटती है कि यहां पर इस तरह के कुत्ते मिलते हैं। इसे कौन खरीदेगा?''

''इसे मैं खरीदूगां अंकल। जिसे कोई लेने वाला नहीं होता उसे भी कोई अपनाने वाला होता है।'' यह कहते हुए बच्चे ने अपनी पेंट उपर की। दुकानदार की आंखें खुली की खुली रह गई। उसे हैरान देखकर दीनू ने कहा, ''मैं भी एक टांग वाला हूं। कचरा बीनते समय एक जंग लगे लोहे से मेरा पैर कट गया था। तब मां-बापू थे। समय पर ईलाज न होने के कारण मेरा दायां पैर घुटनों के नीचे तक काट दिया गया। अंकल अब तो आप समझ गए होगें कि इसको मैं क्यों लेना चाहता हूं। इसके दर्द को मैं समझता हूं। हम दोनों का दर्द एक है। मैं इसको पार्क में घुमाने अपने साथ ले जाउंगा। हम दोनों धीरे-धीरे चलेंगे। हम पार्क में बांकियों की तरह भागकर खुश नही होंगे वरन् एक-दूसरे के साथ चलकर खुश होंगे।''

दुकानदार ने सोचा आज यह सूक्ति पूरी तरह से चरितार्थ होती देखी कि सुंदरता देखने वाले की आंखों में होती है।

''मां कहती थी किसी का दर्द खरीद लोगे तो तुम्हारा दर्द कम हो जाएगा। हम दोनों एक-दूसरे का दर्द समझेंगे। मैं खुश रहूंगा। मां यह भी कहती थी जिसका कोई सहारा नहीं उसका सहारा बनना। तब जो तसल्ली मिलेगी उसका कोई मुकाबला नहीं।'' दीनू ने कहा।

''अंकल मैं एक अनाथ बालक हूं। उम्र में मैं बहुत छोटा हूं। ज्यादा बातें नहीं जानता। पर जो मां-बाप ने समझाया वे बातें समझ आ गई हैं। मेरे पिता कहते थे जब हम किसी को थोड़ी मुस्कुराहट देकर खुश होते हैं तो उपर वाला इतना बड़ा आशीर्वाद देता है। अंकल आप मुझे इस कुत्ते को दे दोगे तो हम दोनों के ही जीवन में खुशियां आ जाएगी।'' दीनू ने बड़ी सरलता से सब कह दिया। उसकी बातों में सच्चाई थी। मूक बधिरों के प्रति प्यार और सहानुभूति थी। दुकानदार को उसकी बात जंच गई।

दीनू की बात सुनकर दुकानदार दीनू का चेहरा देखता रह गया। उसका हृदय द्रवित हो उठा। उसे लगा उसके सामने कोई बच्चा नहीं, किसी दूसरे लोक का फरिश्ता खड़ा है। लोग अपनी खुशी के लिए कुत्तों को पालते हैं। फैशन के लिए कुत्ते पालते हैं। अपने स्टेटस के लिए पालते हैं। एक से बढ़कर एक बढ़िया नस्ल का कुत्ता खरीदते हैं। चाहे उसके लिए उन्हें कितनी भी कीमत क्यों न देनी पड़े। कीमत देकर उसे जंजीरों में बांध लेते हैं। उसकी आजादी छीन लेते हैं। और एक यह बच्चा सबसे कमजोर बीमार कुत्ते को इसलिए खरीदना चाहता है कि वह उसको थोड़ी खुशी दे सके।

''ले जा बेटा तू इसे ले जा। खुशी-खुशी ले जा बेटा।''

''लो अंकल 500 रुपए'' दीनू ने पैसे देते हुए कहा।

''अरे बेटा! पैसे भी तू रख और इसे भी ले जा। तूने जो इस छोटी उम्र में बड़ी समझ दी है, वह अमूल्य है।''

''नहीं अंकल! मैं इसे खरीदकर लूंगा। अपनी मेहनत की कमाई से। हां मेरी औकात इतनी है। मेरे पास बस इतने ही पैसे हैं। वैसे यह बहुत कीमती है। मेरे लिए अनमोल है।''

''जाओ शीबू''। दुकानदार ने लड़के से कहा, ''उस कुत्ते को खूंटे से खोलकर ले आओ।'' लड़का गया और उसे ले आया। दीनू ने देखा वह धीरे-धीरे सरककर आता है। दुकानदार ने उसके गले में एक अच्छा से पट्टा भी डाल दिया और एक अच्छी सी रस्सी भी बांध दी। इसका नाम रखा है शीबू। अब तुम इसे जो चाहो नया नाम दे सकते हो। दुकानदार ने दीनू से कहा।

''अभी तो शीबू नाम ही ठीक है। अपने घर जाकर इसका नाम भी रख दूंगा। क्यों शीबू हमारे साथ चलोगे? हमारे पास कोई बड़ा घर नहीं है। एक ईट गारे की माता-पिता की दी हुई झोपड़ी है। तुम्हें उसमें ही मेरे साथ रहना होगा। क्यों दोस्त हमारे साथ चलोगे।'' कहते हुए दीनू ने उसकी पीठ पर जैसे ही हाथ फेरा उसने जोर-जोर से पूंछ हिला-हिलाकर मानो अपनी सहर्ष स्वीकृती दे दी।

अपने छोटे नए मालिक को पाकर टॉमी कितना खुश था। हां टॉमी ही। अब दीनू का दिया हुआ नया नाम था। वह बहुत खुश था। जिसे कोई नहीं पूछता था उसका भी कोई खरीददार आ गया। उसके गले में उसके मालिक का पट्टा डालेंगे। यह सोच-सोचकर उसकी पूंछ अपने आप ही तेजी से हिलने लगी। जब वह दीनू के साथ बाहर जाता तो अपनी तीन टांगों से भी तेज-तेज भागने की कोशिश कर रहा था अपने नए घर की ओर। उसे भी आज किसी ने कीमत देकर खरीद लिया था। जो केवल उसका घर होगा। अब दुकान पर उसकी नुमाइश नहीं लगेगी। लोग उसे देखकर मुंह दूसरी तरफ नहीं फेर लेंगे।

यहां आकर उसमें नई फुर्ती आ गई थी। दीनू रोज उसकी टांग की मालिश करता। वह चुपचाप अपनी कमजोर टांग ऊपर करके लेट जाता था। धीरे-धीरे शरीर के साथ-साथ उसका मन फुर्तीला हो गया था। अब अपनी झुग्गी के बाहर थोड़ी सी खुली जगह में चलता रहता था। अब उसे अंदर बैठना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। सारा दिन अपनी झुग्गी के आसपास बैठा हर आने-जाने वाले को देखता रहता। बच्चे आते-जाते उसका नाम लेकर उसे पुचकारते और वह पूंछ हिलाकर सबको उनके प्यार का जवाब देता।

दीनू बहुत खुश था। उसे साथ खेलने वाला साथी ही नहीं सुख-दुःख बांटने वाला साथी मिल गया था। उसके मन में खुशियों के कई मोर नाचने लगे।

- एन.डी.-57, पीतमपुरा, दिल्ली, मोबाइल-9625999798

कहानी:

गुड़िया की समझ

● मोतीप्रसाद साहू

गुड़िया आज बहुत खुश थी। क्योंकि उसके घर में भी बिजली से चलने वाला जल पंप जिसे गांव में समरसेबुल कहते हैं, की बोरिंग हो रही थी। अब उसे पानी के लिए हैंड पंप का बटन ऑन करना पड़ेगा। दीवाल की ओर बैठ जाएंगे पंप के नीचे। पानी गिरता रहेगा सिर पर। अब तो गाय भैंस को नहलाने में भी खूब मजा आएगा। उसे खुशी हजम नहीं हुई। अपनी सहेलियों को बताने के वास्ते घर से निकल भी गई। कइयों को बुला-बुला के लाई। देखो मेरे घर भी अब समरसेबुल लग रहा है। आज उसके सहेलियों में उसकी खूब रौनक है। कितनों ने तो उससे वचन ले लिया है कि हमें भी अपने पंप से पानी चला कर दोगे। उसने 'हां' कहने में देर भी नहीं लगाई।

"मुझे भी नहाने के लिए बुलाएगी न गुड़िया?" उसके सबसे नजदीकी दोस्त शालू ने पूछा। ''हम तुम साथ-साथ नहाएंगे।''

"तुम लोगों की एक साथ नहाते हुए फोटो मैं बनाऊंगी मोबाइल से ।" उन दोनों की दोस्त रश्मि ने कहा।

वह अपने पड़ोसी मित्रों को बहुत पहले से ही इस आधुनिक जल पंप से नहाते हुए देखती आ रही थी। कई बार उसने अपने दादी से कहा भी था। दादी को भी उसने फुसलाया था कि दादी अम्मा इस पंप को चलाने में हाथ का कोई काम नहीं होता। जब पानी चाहिए बटन दबा देंगे। खूब पानी गिरेगा हर हर ...

मम्मी को भी घर के काम में आसानी हो जाएगी। पशुओं को पानी पिलाना व नहलाना सब आसान हो जाएगा। पंप चलाने में कितनी मेहनत होती है। गर्मी में तो चलाते चलाते हाथ लाल हो जाते हैं।

अब घर में एक लोटा पानी चाहिए। कुल्ला करना हो एक-एक कर नहाना हो पंप ही चलाया जाने लगा। घर वाले पंप चलाकर ही नहाते। साबुन लगाते मैल छुड़ाते तब भी पानी गिरता ही रहता। गुड़िया का बड़ा भाई तो स्कूटर भी धोता। सब मन ही मन खुश थे।

गुड़िया गांव के सरकारी स्कूल में कक्षा 6 में पढ़ती थी। एक दिन गुरू जी ने भूगोल की कक्षा में बताया, ''धरती का जलस्तर दिन-प्रतिदिन घटता जा रहा है। इसका कारण वर्षा का अभाव है। वर्षा का अभाव इस वजह से है कि जंगल घट रहे हैं। अत: हमें भू-जल को अनायास नहीं बहाना चाहिए। भू-जल अमृत के समान है। इसलिए सरकार ने 'सेव वाटर' का नारा दिया है। जल ही जीवन है। अत: हमें लोगों को यह प्रचार-प्रसार करना चाहिए कि पानी को बर्बाद न करें न करने दें।''

सांय स्कूल की छुट्टी हुई। सभी बच्चे चहकते हुए स्कूल से घर को धमा चौकड़ी मचाते हुए दौड़ पडे। पर गुड़िया आज उदास थी। साथियों के पूछने पर भी कुछ नहीं बोली। झोला रख कर गुमसुम सी ही बनी रही। आज उसने हाथ पैर धोने के लिए पंप भी नहीं चलाया। उसकी दादी को गुड़िया का इस तरह चुप रहना अजीब लगा।

दादी ने पूछा, "क्या बात है गुड़िया! आज न पंप चला कर हाथ मुंह धो रही हो ....रही हो। क्या बात आज स्कूल में मार तो नहीं खाई?" गुड़िया ने कहा,"दादी ! पैर धोने के लिए बाल्टी का पानी लाओ। पंप नहीं चलाते।''

"क्यों क्या बात है, रोज तो मेरे मना करने पर भी नहीं मानती थी।"

शेष पृष्ठ 48 पर...

संवादः

बोलो देवीदा

● देवेंद्र मेवाड़ी

विज्ञान व वैज्ञानिक सोच को जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत बच्चों के प्रिय लेखक आदरणीय देवेंद्र मेवाड़ी जी ने बालप्रहरी के बच्चों द्वारा पूछे गए सवालों का जबाब हर अंक में देने की सहमति प्रदान की है। आप भी कोई सवाल पूछ सकते हैं। आपका उत्तर अगले अंक में आपके नाम/प्रश्न के साथ प्रकाशित किया जाएगा। आदरणीय मेवाड़ी जी का पता व फोन अंत में दिया है। आप उनसे सीधे भी संपर्क कर सकते हैं।

प्रश्न 1. जब शाम होती है तो आसमान में बिखरे बादल लाल क्यों हो जाते हैं? (नवमी, चमियारी, उत्तराखण्ड)

उत्तरः इस प्रश्न से तो नवमी मुझे प्रसिद्ध कवि अयोध्यासिंह उपायाय 'हरिऔध' के काव्य ग्रंथ 'प्रिय-प्रवास' की यह पंक्तियां याद आ गई : **"दिवस का अवसान समीप था,**
गगन था कुछ लोहित हो चला,
तरु शिखा पर थी राजती कमलिनी
कुल वल्लभ की प्रभा!" **मतलब, सूर्यास्त होने को था और आसमान लाल हो गया था। आपको पता है, सूर्य का प्रकाश सात अलग-अलग रंग की रश्मियों से बना है। मैं इन्हें 'बैजनीहपीनाला' कहता हूं। यानी, बैंगनी, जामुनी, नीला, हरा, पीला, नारंगी और लाल। सूर्य का प्रकाश दिन में ऊंचाई से हमारी धरती पर आता है तो वायुमंडल में फैले धूल-कणों के कारण उसकी रश्मियां बिखरती हैं। नीली रश्मि की तरंग की लंबाई सबसे कम होती है। इसलिए वह सबसे अधिक बिखरती है। वह नीला प्रकाश हमें दिखाई देता है जिसके कारण हमें आसमान नीला दिखाई देता है। लेकिन, सुबह और शाम को सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय सूर्य की किरणें हमारी पृथ्वी के निकट के घने वायुमंडल की परतों को पार करके हमारी आंखों तक पहुंचती हैं। उस घने वायुमंडल में धुएं और धूल कणों की अधिकता के कारण उनकी रश्मियां बिखर जाती हैं। लाल रश्मियों की तरंग सबसे लंबी होने के कारण वे उतनी दूर से हमारी आंखों तक पहुंच जाती हैं। बांकी रश्मियां नहीं पहुंच पातीं। यही कारण है कि हमें तब सूर्य भी लाल दिखाई देता है और क्षितिज के आसपास फैले बादल भी लाल रंग के दिखाई देते हैं।**

प्रश्न 2. : देवीदा! पानी पारदर्शी होता है लेकिन बारिश में शीशे पर पानी की बूंदें जम जाने पर स्पष्ट क्यों नहीं दिखाई देता है? एक बात और जानना चाहती हूं, गैस की लौ की तुलना में मोमबत्ती की लौ से रोशनी अधिक क्यों होती है? (अर्जरागिनी सारस्वत, आगरा, उ.प्र.)

उत्तर : बात यह है अर्ज रागिनी कि पानी भी पारदर्शी होता है और शीशा भी। जब बारिश या ओस की बूंदें हमारी खिड़कियों के शीशे पर जम जाती हैं तो दोनों पारदर्शी होने पर भी साफ नहीं दिखाई देता। जानती हो क्यों? क्योंकि हवा में धूल वगैरह के सूक्ष्म कण होते हैं। वे खिड़की के शीशों पर भी चिपक सकते हैं। उन कणों के कारण रोशनी की किरणें सीधे शीशे के पार नहीं जा पाती हैं। इसलिए हमें बाहर का दृश्य धुंधला दिखाई देता है या नहीं दिखाई देता। रही बात गैस और मोमबत्ती की लौ की, तो होता यह है कि मोमबत्ती की लौ में मोम के जलने से कार्बन के कण बनते हैं। उन कणों पर रोशनी टकराती है और लौट कर हमारी आंखों तक पहुंचती है। इसलिए मोमबत्ती की लौ से उजाला फैल जाता है। गैस की लौ में कार्बन के कण नहीं होते। इसलिए रोशनी की किरणें परावर्तित नहीं होती। इस कारण हमें गैस की लौ नीली और पारदर्शी दिखाई देती है।

प्रश्न 3. : कुत्ते के पिल्लों की आंखें जन्म के समय बंद क्यों होती है? (शिवशरण, चिन्यालीसौड़, उत्तराखंड)

उत्तर : बात यह है शिवशरण कि प्रकृति ने नवजात बच्चों के लिए कुछ नियम बनाए हैं। जो जानवर जंगल में रहते हैं उनके बच्चों को दुश्मनों का खतरा रहता है इसलिए प्रकृति उन्हें इस लायक बना देती है कि वे जन्म लेते ही अपने माता-पिता के साथ चल पड़ें। उनकी आंखें जन्म लेते समय भी खुली रहती हैं। जो जानवर सुरक्षित जगहों पर रहते हैं, उनके बच्चे जन्म के समय पूरी तरह विकसित नहीं होते। उन बच्चों की आंखें बंद रहती हैं क्योंकि वे भीतर-भीतर विकसित हो रही होतीं हैं। इसी कारण कुत्ते के पिल्लों की आंखें भी जन्म के समय बंद रहती हैं। जब वे पूरी तरह विकसित हो जाती हैं तो उसके बाद खुल जाती हैं। एक बात और, उन छोटे पिल्लों के कान भी भीतर से बन रहे होते हैं। इसलिए बहुत छोटे पिल्लों को अधिक सुनाई भी नहीं देता। अच्छा, यह भी याद रखना कि हमारे कुत्तों के पूर्वज भेड़िए थे। वे गुफाओं या मादों में सुरक्षित जगहों पर रहते थे। इसलिए उनके पिल्लों की आंखें भी शुरू में बंद ही रहती थीं।

प्रश्न 4. : बरसात में बादल इतनी बारिश करते हैं। गर्मियों में वे कहां चले जाते हैं? (अनुभव, पौड़ी, उत्तराखंड़)

उत्तरः ऐसा है अनुभव, कि गर्मियों में जब धरती बहुत तप जाती है तो जमीन से, नदी-तालाबों से और विशाल समुद्रों से बहुत पानी भाप बन कर आसमान में उड़ जाता है। ऊपर उड़ते-उड़ते वह ठंडा होने लगता है क्योंकि आसमान में जितना ऊपर जाते हैं, उतना ही अधिक ठंडा होने लगता है। इस तरह भाप आसमान में पहुंच जाती है, ठंडी होती है और वहां धूल वगैरह के छोटे-छोटे

नई सोच

● डॉ. सुरेंद्रदत्त सेमल्टी

सिर्फ कविता और कहानी,
नहीं पढ़ूगी अब मैं नानी।
नाटक उपन्यास आत्मकथाएं,
इनमें रहती बहुत शिक्षाएं।
यात्रावृत्त एकांकी पहेली,
संस्मरण पढ़ेगी सभी सहेली।
पापा बाल पत्रिकाएं लाओ,
उन्हें खरीदने शहर हो आओ।
पढ़कर फिर स्वयं लिखेंगे,
श्रेष्ठजनों से कुछ और सीखेंगे।
बनाएंगे चुटकले और रेखाचित्र,
ये काम करेंगे हम सब मित्र।
प्रतिभा निखरेगी यह सब कर,
खुश होंगे देख तब सारे सर।
इन्हें पढ़-लिख बढ़ता ज्ञान,
इन बातों पर हम देंगे ध्यान।
पत्र-साहित्य और रिपोर्ताज,
लोकप्रिय हो रहे हैं आज।
सीखेंगे रंगमंचीय अभिनय,
दूर करेंगे तन-मन के भय।

- पुजारगांव,चंद्रवदनी, हिंडोलाखाल, टिहरी
मोबाइल-9690450659

सूरज दादा

● श्यामपलट पांडेय

भोले भाले सूरज दादा,
चढ़ गए नील पहाड़ी पर।
लगे फेंकने आग के गोले,
किसी बात पर गुस्सा होकर।
जाड़ों में कितने प्यारे तुम,
देते हमको धूप गुनगुनी।
दांत हमारे बजते कट-कट,
बहती ठंडी हवा सनसनी।
बारिश में तुम सदा खेलते,
छुपम-छुपाई का है खेल।
कभी दिखाते इंद्रधनुष हो,
सतरंगी किरणों का मेल।
गुस्सा छोड़ो, नीचे आओ,
हम सब साथ चलें स्कूल।
होमवर्क हम साथ करेंगे,
मिलकर खेलेंगे सब खेल।
तभी आ गई काली आंधी,
काले-भूरे बादल लेकर।
सूरजदादा झटपट छिप गए,
जाकर नील पहाड़ी के घर।

- 907 पंचतीर्थ अपार्टमेंट, जोधपुर चार रास्ता,
सेटेलाइट,अहमदाबाद, गुजरात
मोबाइल- 9638430340

एक पहेली

● राजपाल सिंह गुलिया

बच्चो आओ पास हमारे,
एक पहेली सुन लो सारे।
सुन इसको ना देर लगाओ,
समझ पड़े तो झट बतलाओ।
चंद दिनों का ये मेहमान,
भाता इसे केवल सुनसान।
ना खाता ना खाने देता,
ना कोई ये वेतन लेता।
फटे पुराने कपड़े इसके,
जाने पहन खड़ा है किसके।
सभी जानवर डर-डर जावें,
खग-विहग भी निकट ना आवें।
चाहे दिन हो या फिर राती,
नींद कभी ना इसको आती।
खड़ा वो बीच खेत में मौन,
सोच कर बोलो वो है कौन।
अवसर को रामू ना चूका,
हम तो कहते उसे बिजूका।

- राजकीय प्राथमिक पाठशाला,
भटेड़ा, झज्जर (हरियाणा)
मोबाइल- 9416272973

कणों पर जमा हो जाती है। इस तरह पानी की नन्हीं बूंदें बन जाती हैं। इन बूंदों से बादल बन जाते हैं। जब कुछ बूंदें आपस में मिल जाती हैं तो बड़ी बूंदें बनती हैं। अपने वजन के कारण वे हवा में नहीं टिक पाती और नीचे टपक जाती है। जब बहुत सारी बूंदें इस तरह आसमान से टपकने लगती हैं तो रिमझिम वर्षा हो जाती है। तुम यह भी जानना चाहते हो कि गर्मियों में बादल कहां चले जाते हैं। अथाह गर्मी के कारण पानी की भाप से इतनी बूंदें नहीं बनती कि उनसे बादल बन जाएं। लेकिन, एक और जगह है जहां से बादल आ जाते हैं। जानते हो कहां से? विशाल हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी से पानी की बूंदों से भरी हुई हवाएं हमारे आसमान में आ जाती हैं। इन पानी से भरी हवाओं को मानसून कहते हैं। इनसे खूब काले, भूरे बादल बन कर आसमान में उमड़ने लगते हैं। वे खूब गरज कर बरसने लगते हैं और झमाझम बारिश होने लगती है। लेकिन, एक बात याद रखना, गर्मियों में जितनी ही ज्यादा गर्मी पड़ती है और धरती तपती है, उतनी ही, ठंडी और पानी की बूंदों से भरी हवाएं आसमान में जमा हो जाती हैं। उनसे इतने सारे बादल बन जाते हैं कि आसमान उनसे भर जाता है। एक बादल को तो अनुभव तुमने भी छू रखा है। वह तुम्हारे साथ आसपास टहल भी चुका है! जानते हो, वह बादल कौन सा है? वह बादल है- कोहरा। जब वह तुम को छू कर निकलता है तो तुम्हारे हाथ-मुंह पर उसकी नन्हीं बूंदे चिपक जाती हैं। आसमान के बादल ऐसी ही बूंदों से बनते हैं और बहुत घने होते हैं।

प्रश्न 5. : बुढ़ापे में बाल सफेद क्यों हो जाते हैं?

(आयुश, उत्तरकाशी, उत्तराखंड)

उत्तर : आयुश बुढ़ापे में बाल सफेद होने का कारण यह है कि उनमें काला रंग भरने वाला रंग द्रव्य यानी पिंगमेंट मैलानिंन कम हो जाता है। असल में बचपन और युवा अवस्था में जब बाल बढ़ते रहते हैं तो उनकी जड़ में मैलानिन पिगमेंट की कोशिकाएं होती हैं जो बाल के भीतर जाकर उसे काला रंग प्रदान करती हैं ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती है तो बालों की जड़ में ये कोशिकाएं नष्ट होने लगती हैं। जब काला रंग देने वाला मैलानिन ही नहीं रहता है तो फिर बाल सफेद या चांदी जैसे चमकीले हो जाते हैं।

- सी-22, शिव भोले अपार्टमेंट्स ,प्लाट नं. 20, सैक्टर 7, द्वारका
फेज-1, नई दिल्ली-110075 मोबाइल-9818346064

लाल टमाटर

● लक्ष्मी खन्ना 'सुमन'

फूले-फूले गाल टमाटर,
बिकने आए लाल टमाटर।
घुल मिल कर हर इक सब्ज़ी,
से करते खूब कमाल टमाटर।
'सूप' 'सौस' चटनी में बुनते,
स्वादों का इक जाल टमाटर।
तड़के में रच कर महकाते,
ढाबे वाली दाल टमाटर।
फल सब्ज़ी के ठेलों बैठे,
कर के ऊंचा भाल टमाटर।
नन्हे-मुन्ने के लगते हैं,
प्यारे-प्यारे गाल टमाटर।
ढेरों मिनरल एक विटामिन,
कितने मालामाल टमाटर।
बता रहे हैं गलियों-गलियों,
महंगाई का हाल टमाटर।
ख़ास स्वाद से हर सलाद को,
करते बहुत निहाल टमाटर।
पीत 'सुमन' पर आते बच्चो,
कितने सुंदर लाल टमाटर।

- नैनी आचर्ड, नैनी बैंड, भीमताल रोड,
भवाली, नैनीताल
मोबाइल-9719097992

सरकस

● शकुंतला शर्मा

मुझे दिखा दो सरकस मम्मी,
अच्छे-अच्छे करतब मम्मी।
चुन्नू, मुन्नू, रतन, मनीषा,
आए सभी देख कर मम्मी।
मोटर साईकिल पर भालू जी,
बैठे खूब अकड़कर मम्मी।
नाच दिखाते हाथी दादा,
सबको ठुमक-ठुमक कर मम्मी।
शेर नमस्ते करता सबको,
टाटा हाथ हिलाकर मम्मी।
बंदर जी भी दौड़ लगाते,
तार के ऊपर चढ़कर मम्मी।
ऊंचे से झूले पर चढ़कर,
उछले कूदे जोकर मम्मी।
दौड़ लगाता एक आदमी,
घोड़े कई बदलकर मम्मी।
शेर के ऊपर चढ़ती बिल्ली,
दागे तोप कबूतर मम्मी।
एक साथ देखेंगे चल कर,
बंदर और कलंदर मम्मी।
कुत्ते बिल्ली करें दोस्ती,
लड़ना सभी भूलकर मम्मी।
टिकट मंगा लो पापाजी से,
देखेंगे सब चल कर मम्मी।

- 86, तिलक नगर, दाल मील वाली गली
फिरोजाबाद, उ.प्र. मोबाइल-9412316779

बंदर राजा

● प्रेमसिंह पापड़ा

बंदर राजा बड़े शैतान,
हमको करते नित परेशान।
धमा-चौकड़ी खेतों में,
शोर मचाए बस्ती में।
हम बच्चे छोटे नादान,
हमें डराते ये बेईमान।
लाल रंग में पुते हुए हैं,
हरदम चेहरा भिंचे हुए हैं।
एक पैर पर नाचे थैया,
हमको याद दिलाते मैया।
कभी कूदते, कभी फांदते,
पेड़ों पर ये खूब झूलते।
बैंगन, खीरा, मकई, कद्दू,
खूब छकाते बनाते बुद्धू।
एक नहीं हर कोई नकलची,
पहले छेड़ते फिर हंसते जी।
कभी हंसाते कभी रूलाते,
राह खड़े ये हमें डराते।
बंदर राजा तुमको प्रणाम,
कुछ तो समझो आत्म सम्मान।
नटखट शैतानी ठीक नहीं,
सब जन जाने तुमसा कोई नहीं,
अब सुधरो तुम बनो महान।
उन्नत, उर्वर हो खेत खलिहान।

- रा.इ.का. डीडीहाट, पिथौरागढ
मोबाइल-7351394730

नगरपालिका परिषद अल्मोड़ा

नव वर्ष एवं गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

अल्मोड़ा नगर की जनता से विनम्र अनुरोध है कि अल्मोड़ा नगर को साफ और सुंदर बनाए रखने में सहयोग प्रदान करें। कृपया निम्न बातों पर अवश्य ध्यान दें। 1. पॉलीथीन बैग्स एवं डिस्पोजल आइटम्स का कतई प्रयोग न करें। पकड़े जाने पर रुपए 5,000/- तक जुर्माना वसूला जाएगा। 2. कूड़ा केवल नियत स्थानों पर ही डालें तथा सूखा व गीले कूड़े के लिए अलग-अलग डस्टबिन रखें। 3. कूड़ा कतई न जलाएं। 4. सार्वजनिक मार्गो पर कूड़ा न फेंकें। कूड़ा फेंकते हुए पाए जाने पर जुर्माना वसूला जाएगा। 5. पालिका करों का समय से भुगतान करें। 6. शहर में अपने जानवरों को अवारा न छोड़ें। 7. बाजार मार्गो, गलियों व मुहल्लों एवं नाले व नालियों के ऊपर कहीं भी अतिक्रमण न करें। 8. पालिका का यूजर चार्जेज का नियमित रूप से भुगतान करें।

(स्वच्छ अल्मोड़ा सुंदर अल्मोड़ा)

(श्याम सुंदर प्रसाद)
अधिशाषी अधिकारी, नगरपालिका परिषद अल्मोड़ा

(प्रकाशचंद्र जोशी)
अध्यक्ष नगरपालिका परिषद

अल्मोड़ा सभासदगण: (1)श्रीमती दीपा साह, सेलाखोला वार्ड (2)श्रीमती तरन्नुम बी, रामशिला वार्ड (3) श्री मनोज जोशी, बद्रेश्वर वार्ड (4)श्री सौरभ वर्मा एन.टी.डी.वार्ड (5) श्री विजय पांडे, त्रिपुरासुंदरी वार्ड (6) श्री अमित साह, लक्ष्मेश्वर वार्ड (7) श्रीमती दीप्ती सोनकर, मुरली मनोहर वार्ड, (8)श्री जगमोहन बिष्ट, बालेश्वर वार्ड (9)श्री हेमचंद्र तिवारी, विवेकानंदपुरी वार्ड (10) श्री सचिन आर्या, राजपुर वार्ड (11) श्री राजेंद्र तिवारी नंदादेवी वार्ड (12)श्रीमती रेखा अल्मियां, रैलापाली वार्ड (13) श्रीमती आशा रावत, दुगालखोला वार्ड (14) श्री दीपक वर्मा (शासन द्वारा नामित (15)श्री अर्जुन बिष्ट,शासन द्वारा नामित सदस्य एवं समस्त कर्मचारीगण नगरपालिका परिषद अल्मोड़ा

कहानी :

कक्षा में प्रथम

● हरदान हर्ष

इंडियन अकेडमी स्कूल की अपनी प्रतिष्ठा है। वहां अंगरेजी माध्यम से पढ़ने वाले छात्र ही प्रवेश पा सकते हैं। वहां प्रवेश पाना आसान नहीं है। छात्र मेधावी हो, मां-बाप दोनों शिक्षित हों, तभी कोई छात्र प्रवेश के लिए वहां आवेदन पत्र भर सकता है। फिर प्रवेश से पूर्व साक्षात्कार होता है-छात्र का और उसके संरक्षक अभिभावक का भी। साक्षात्कार में दोनों उत्तीर्ण हों, तभी वहां प्रवेश मिल पाता है।

यह प्रतिष्ठा की बात थी कि ऐश्वर्य का प्रवेश इंडियन, अकेडमी स्कूल की प्रथम कक्षा में प्रवेश हो गया था। प्रथम प्रवेश सूची में प्रथम नंबर था ऐश्वर्य का। ऐश्वर्य की मम्मी सरला मानती है कि उसका साक्षात्कार सर्वश्रेष्ठ होने से ही ऐश्वर्य का प्रथम सूची में प्रथम स्थान था।

ऐश्वर्य के पापा सुधीर ने शंका व्यक्त करते हुए कहा, "हो सकता है, प्रवेश सूची के नाम वर्णक्रम में दिए गए हों और ऐश्वर्य का नाम इस कारण प्रथम रहा हो।"

"नहीं, ऐसा नहीं हैं। प्रवेश सूची में दूसरा नाम मालती वर्मा का था और तीसरा आलोक का। यदि प्रवेश सूची के नाम वर्णक्रम में होते तो ऐसा संभव नहीं था।" सरला ने प्रतिवाद किया।

"तब मुझे तुम दोनों पर गर्व है। दोनों को सफलता की शुभकामनाएं।" सुधीर ने हर्षित भाव से कहा।

यह ऐश्वर्य की शिक्षा का प्रारंभ था-प्रथम कक्षा प्रवेश से। प्रवेश के दो माह बाद प्रथम टेस्ट हुआ। ऐश्वर्य का कक्षा में प्रथम स्थान रहा और दूसरा स्थान मालती वर्मा का। सरला बहुत खुश थी। शाम को आफिस से सुधीर लौटा तो चाय नाश्ते के साथ उसने यह खुशखबरी भी उसके सामने परोस दी। उसने कहा, "जानते हो, प्रथम टेस्ट में अपना ऐश्वर्य प्रथम रहा है।"

"खुशी की बात है, बेटा ठीक चल रहा है।" सुधीर ने साधारण भाव से कहा।

"तो,क्या आपको विशेष प्रसन्नता नहीं हुई?" सरला ने अपनी भौंहे सिकोड़ते हुए पूछा। "सरला ठीक है तुम बेटे की पढ़ाई-लिखाई और उसके संस्कारों के प्रति सजग हो। मगर, आवश्यकता से अधिक उत्साही मत बनो। बेटा अभी छोटी कक्षा में है। उसके बचपन पर स्पर्धा भावना को भार बनाकर हावी मत होने दो।" सुधीर ने सुझाव देते हुए कहा।

कुछ दिनों बाद द्वितीय टेस्ट हुआ। कक्षा में ऐश्वर्य का इस बार भी प्रथम स्थान रहा था। अर्द्धवार्षिक परीक्षा हुई। परिणाम आया। मालती वर्मा प्रथम थी और ऐश्वर्य द्वितीय। यह परिणाम सरला को हिला गया। उसने सारे जोड़ बांकी किए। पहले टेस्ट में ऐश्वर्य के मालती से 2 अंक ज्यादा थे। दूसरे टेस्ट में वह मात्र एक अंक से आगे था। अर्द्धवार्षिक परीक्षा में मालती वर्मा ऐश्वर्य से दो अंक की बढ़त पाकर आगे रही थी। कुल मिलाकर एक अंक की बढ़त से ऐश्वर्य अब तक कक्षा में प्रथम स्थान बनाए हुए था। सरला सजग हो गई।

अर्द्धवार्षिक परीक्षा के परिणाम वाले दिन से ही सरला ने ऐश्वर्य को समझा दिया था कि अब वह जी जान से मेहनत करे। उसे कक्षा में प्रथम आना ही है।

बाल सुलभ सरलता से ऐश्वर्य ने हां में सिर हिला दिया था। सरला ने प्रतिबंध लगाते हुए कहा था, "बेटा! आज शाम से तुम एक घंटे की जगह केवल आधा घंटा ही खेला करोगे।"

प्रतिस्पर्धा को समझते हुए ऐश्वर्य ने कहा, मम्मी! छुट्टी वाले दिन भी मैं खूब पढ़ा करूंगा।"

सरला ने ऐश्वर्य को तो समझा दिया था। मगर वह नहीं समझ पा रही थी कि सुधीर को इस परिणाम के बारे में कैसे बताएं।

शाम को सुधीर घर आया। सरला चुपचाप थी। उसने चाय-नाश्ता लाकर उसके सामने रखा। लंबी चुप्पी से वातावरण भारी हो रहा था। चुप्पी को तोड़ते हुए सुधीर ने कहा, "सरला जानती हो, मालती वर्मा कौन है?"

सरला ने अनभिज्ञता दर्शाते हुए कहा, "मालती वर्मा कौन?"

"मालती वर्मा जिसका ऐश्वर्य की जगह अर्द्धवार्षिक में प्रथम स्थान रहा है।" सुधीर ने कचोटते हुए कहा।

"मालती वर्मा?" सरला ने प्रश्न के अंदाज में दोहराया। "मालती वर्मा माणिक वर्मा की पुत्री। वर्मा जो कभी मेरा सहपाठी था और जिसने कभी मुझे द्वितीय स्थान पर छोड़ा था। अब वह आफिस में मेरा सीनियर बन बैठा है।"

सरला ने अनुभव किया। सुधीर की वाणी में दर्द है। हमदर्दी में वह तरल हो उठी। वह सुधीर के पास आकर बैठ गई। वह कहने लगी, "आप निश्चित रहें। मैं जी जान लगा दूंगी। आप देखना वार्षिक परीक्षा में ऐश्वर्य का ही कक्षा में प्रथम स्थान रहेगा।"

सुधीर और सरला चुपचाप बैठे थे। धीरे-धीरे सुधीर का हीन भाव जाग्रत होकर प्रबल होता जा रहा था। सरला के आश्वासन के बाद भी उसका हीनभाव विलुप्त नहीं हो पाया था। उसे लगा माणिक वर्मा मालती में और सुधीर ऐश्वर्य के रूप में बदल गए हैं। वह इस आशंका से कांप गया कि माणिक वर्मा अपने बदले हुए रूप में मुझे फिर मात दे जाएगा।

सुधीर ने अपना ब्रीफकेस खोला। उसमें से एक लड्डू निकालकर तश्तरी में रखा और सरला को इंगित करते हुए कहा, "क्या तुम इस लड्डू की कडुवाहट अनुभव कर सकती हो?"

सरला सुधीर के रहस्यमय कथन को समझ चुकी थी। वातावरण को सरल बनाने के लिए उसने कहा, "क्या कभी लड्डू भी कडुवे होते हैं।"

"होते हैं सरला, लड्डू कडुवे भी होते हैं। आज आफिस में माणिक वर्मा लड्डू बांट रहा था। मालती के अर्द्धवार्षिक परीक्षा में प्रथम रहने के उपलक्ष्य में।"

"तो इसमें कडुवाहट की बात तो नहीं। कोई भी मां-बाप अपने बच्चे-बच्ची की सफलता पर प्रसन्न होकर लड्डू बांट सकता है। इसमें बुरा मानने की तो कोई बात नहीं है।" सरला ने सुधीर को बीच में टोकते हुए कहा।"

"मिठाई बांटने तक तो ठीक है सरला। परंतु इस अवसर पर पिछले 21 वर्षो के इतिहास को दोहराना। पीढ़ियों की बात करना। किसी को नीचा दिखाने का प्रयत्न करना तो उचित नहीं।"

एक दु:ख भरी आह लेकर सुधीर ने फिर कहना प्रारंभ किया, "सरला! माणिक वर्मा मेरे केबिन में आया था। लड्डुओं की ट्रे मेरे सामने रखते हुए उसने कहा, ''मेरी बिटिया अब मेरे पदचिह्नों पर चल पड़ी है और यह सुखद संयोग है कि उसने दूसरे स्थान पर छोड़ा है तुम्हारे बेटे ऐश्वर्य को।" सुधीर के मन की पीड़ा को समझते हुए सरला ने सुझाव दिया, "रोजाना शाम के समय बेटे को मैं संभाल लूंगी। सुबह-सुबह एक आध घंटा आप संभाल लिया करो। वैसे एक बात कहूं। अपना ऐश्वर्य किसी से पीछे रहने वाला नहीं।"

"तुम ठीक कह रही हो सरला! कल से मैं सुबह पांच बजे उठकर बेटे को पढ़ाने बैठ जाया करूंगा।" सुधीर ने आश्वस्त करते हुए कहा। तीसरा टेस्ट हुआ परिणाम आया ऐश्वर्य और मालती वर्मा दोनों 99 प्रतिशत अंक पाकर बराबर थे। माणिक वर्मा और सुधीर दोनों मालती और ऐश्वर्य का युद्ध लड़ रहे थे। अपने-अपने मम्मी-पापा से पिछले 21 वर्षो का इतिहास मालती ने भी सुन लिया था और ऐश्वर्य ने भी। फिर भी उनके बाल मन कक्षा में प्रथम आने से अधिक कुछ नहीं समझ पाए थे। बस, दोनों प्रथम आने की होड़ में लग गए थे।

वार्षिक परीक्षा का अंतिम पेपर था। मालती और ऐश्वर्य दोनों के सभी पेपर ठीक हो रहे थे। माणिक वर्मा, मिसेज वर्मा, सुधीर,सरला और प्रथम कक्षा की अध्यापिकाएं सभी सजग थी। प्रथम कौन रहेगा? अंतिम पेपर के आते ही इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट हो चला था। आखिरी पेपर में ऐसा कोई प्रश्न नहीं था जो ऐश्वर्य नहीं जानता हो। यही सोचकर मालती वर्मा रो पड़ी।

ऐश्वर्य ने पीछे मुड़कर देखा। मालती रो रही है। उसके पास जाकर ऐश्वर्य ने पूछा, "मालती तुम क्यों रो रही हो?"

"ऐश्वर्य! मेरे पापा मुझे बहुत मारेंगे।" रोते-रोते मालती ने कहा।

सिसकते हुए वह बताने लगी, "आजकल मेरे पापा मुझे सुबह चार बजे पढ़ने के लिए जगा दते हैं। वे मुझे दिन में भी नहीं खेलने देते। आज स्कूल आते वक्त उन्होंने मुझसे कहा था कि यदि इस बार कक्षा में प्रथम नहीं आई तो उसकी खैर नहीं।"

ऐश्वर्य मालती की व्यथा समझ गया था। उसने अपनी उत्तर पुस्तिका उठाई और एक प्रश्न के उत्तर के सामने बीएएलएल की जगह लिख दिया - बीओएलएल।

मालती और ऐश्वर्य दोनों मुस्कुराने लगे। मालती के मन से भय का भूत भाग चुका था। दोनों बच्चे खुश थे।

- ए-306, महेश नगर, जयपुर, राजस्थान
मोबाइल - 9735807115

कार्यालय जिला पंचायत अल्मोड़ा

72 वें गणतंत्र दिवस राष्ट्रीय पर्व के अवसर पर समस्त जनपदवासियों को जिला पंचायत अल्मोड़ा की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं

जनपद वासियों से अनुरोध है कि गणतंत्र दिवस को कोरोना महामारी के दृष्टिगत भारत सरकार द्वारा जारी गाइड लाइन को ध्यान में रखते हुए मनाएं। राष्ट्रीय ध्वज तथा राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करें। अपने जनपद को स्वच्छ बनाए रखने में अपना सहयोग प्रदान करें तथा एक जिम्मेदार नागरिक बनें।

जगदीश प्रसाद
अभियंता
जिला पंचायत अल्मोड़ा

राजेंद्रसिंह कठैत
अपर मुख्य अधिकारी
जिला पंचायत अल्मोड़ा

कांता रावत
उपाध्यक्ष
जिला पंचायत अल्मोड़ा

उमा सिंह
अध्यक्ष
जिला पंचायत अल्मोड़ा

एवं समस्त सम्मानित सदस्यगण एवं जिला पंचायत परिवार अल्मोड़ा

युग पुरुष, उत्तराखण्ड के प्रणेता, जनप्रिय पूर्व प्रधानमंत्री

"भारत रत्न"

स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी

की जयंती पर

उत्तराखण्ड वासियों की ओर से

शत-शत नमन

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी www.uttarainformation.gov.in | UttarakhandDIPR | DIPR_UK

महिला हेल्पलाइन नं. 1090 | किसान कॉल सेंटर नं. 1551 | सी.एम.हेल्पलाइन नं. 1905 | चाइल्ड हेल्पलाइन नं. 1098 | आयुष्मान उत्तराखण्ड हेल्पलाइन नं. 104 | आपदा कॉल सेन्टर नं. 1070

कहानी :

रागिनी की बुद्धिमानी

● डॉ. हरीसिंह पाल

श्यामपुर गांव में एक कोने पर मंदिर था। एक दिन एक चोर मंदिर में आया। उसने सोचा मंदिर के देवता की मूर्ति ठोस चांदी की है। इनके आभूषण सोने के हैं। दान पेटी में चढ़ावा भी अच्छा-खासा ही होगा। चोर ने मंदिर के दरवाजे पर जोर से धक्का दिया। दरवाजा बंद था। काफी प्रयास करने पर भी दरवाजा नहीं खुला तो उसने देखा दरवाजे पर भारी-सी घंटी लटकी हुई है। घंटी तांबे की थी। उसकी ही अच्छी कीमत मिल जाएगी। यह सोचकर चोर ने चुपके से घंटी खोल ली और कपड़े में दबाकर दौड़ लिया। ताकि घंटी की आवाज न आ हो सके। मंदिर के पुजारी ने चोर को घंटी चुराते देख लिया था। उसने उसे पकड़ना का प्रयास किया। परंतु वह दौड़ लगाकर जंगल की ओर भाग गया। जल्दबाजी में वह रास्ता भूल गया और घने जंगल में पहुंच गया।

जंगल में चोर को चीता मिल गया। चोर भय से कांप उठा। डर के मारे उसके हाथ से घंटी छूट गई। चीते ने चोर को मार कर खा लिया। चीता भूख मिटाकर गुफा की ओर चला गया। रात में कुछ बंदर उधर आ गए। उन्हें वहां घंटी पड़ी मिली। बूढ़े बंदर ने जब घंटी हाथ में लेकर बजाई तो वह बज उठी। बंदरों को घंटी की आवाज बड़ी प्यारी लगी। एक-एक कर सभी बंदरों ने घंटी बजाई। घंटी की आवाज दूर-दूर तक गूंजी। अगले दिन शहद निकालने एक गांववासी जंगल में आया तो उसने चोर की खोपड़ी और हड्डियां देखीं। उसके गांव लौटकर सभी को बताया कि जंगल में किसी राक्षस ने एक आदमी को मार खाया है। गांव वाले डर के मारे कांपने लगे। अगले दिन भी बंदर एक-एक घंटी बजाने लगे। गांव वालों ने घंटी की आवाज सुनकर सोचा के किसी राक्षस ने आज फिर आदमी को मार खाया होगा। तभी वह खुशी से घंटी बजा रहा है। गांव वाले डर के मारे घर से बाहर ही नहीं निकले।

अब तो रोज लगातार घंटी बजने की आवाज सुनाई देने लगी। गांव वाले घबरा उठे। सभी ने मिलकर अब गांव छोड़ने का निश्चय कर लिया। गांव में रागिनी नाम की महिला रहती थी। रागिनी ने मन ही मन सोचा। आखिर घंटी बजाने वाला कौन होगा? चलकर देखना चाहिए।'

रागिनी ने गांववालों से अपने मन की बात कही। गांव वालों ने रागिनी के साथ चलने को मना कर दिया। रागिनी अकेले ही चल दी।

रागिनी को बचपन में उसकी मां ने बताया था कि धरती पर राक्षस तो होता नहीं। फिर राक्षस से क्या डरना। वह कुछ केले व खाने का सामान लेकर अकेले ही जंगल की ओर चली। एक जगह उसने देखा। काफी बंदर हैं। उनके हाथ में घंटी है। रागिनी को सब कुछ आ गया। उसने केले बंदरों की ओर फेंक दिए। सारे बंदर केलों की ओर दौड़ गए। रागिनी ने तुरंत ही मौका पाकर घंटी हाथ में ली। घंटी पकड़कर वह वापस गांव की ओर चल दी। रागिनी ने घंटी गांव में मुखिया को सौंप दी। रागिनी को उसने शाबासी दी। घंटी मंदिर में दोबारा लगा दी गई। सारे गांव इलाके में रागिनी के साहस की चर्चा हो रही थी।

- 684 गली 9, इंद्रा पार्क, नई दिल्ली-110045
मोबाइल - 9717434643

अंक पहेली

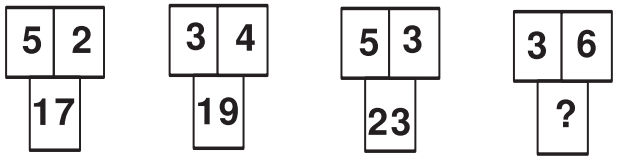

ऊपर के चित्र में गुणा व जोड़ के आधार पर अंक भरे गए हैं। खाली स्थान में अंक भरिए।

''हमारा उद्देश्य'' ''आपकी उन्नति''

अल्मोड़ा अर्बन को-आपरेटिव बैंक लि.

(उत्तर भारत का सबसे बड़ा नगर सहकारी बैंक)

प्रधान कार्यालय:- लाला बाजार अल्मोड़ा (उत्तराखंड)
फोन- 05962-230743, 231947,
फैक्स- 05962-237703

E-Mail: info@almoraurbanbank.com
Visit us:www.almoraurbanbank.com

अल्मोड़ा अर्बन को-आपरेटिव बैंक लि.
गणतंत्र दिवस के अवसर पर अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता है।

पी. सी. तिवारी, सचिव/महाप्रबंधक
सुनील कुमार अग्रवाल, उपाध्यक्ष
आनंदसिंह बगड्वाल, अध्यक्ष

कहानी :

ईमानदारी का इनाम

● राम लखन प्रजापति 'प्रतापगढ़ी'

मनोरमा चाची को आभूषणों से बड़ा प्रेम था। पति नागेश्वर जो एक निजी विद्यालय में अध्यापक थे। उनकी आमदनी सीमित थी फिर भी मनोरमा चाची किसी तरह इस बार कान के झुमके बनवाने में सफल हो गई थी।

झुमके की बनावट और कारीगरी को देखकर मुहल्ले की सभी औरतें निहाल थी। लल्ली बुआ ने टिप्पणी करते हुए कहा, "चाची ये झुमके कहां से बनवाए? बहुत सुंदर हैं।"

"तुम्हारे चाचाजी इसे शहर से बनवाकर लाए हैं। इसमें पूरे तीस हजार लगे हैं।" मनोरमा ने लल्ली बुआ को बताया।

"इतना लगना तो लाजिमी है चाची! शुद्ध सोने का जो है । इस समय सोने का भाव भी तो आसमान छू रहा है। अब तो गहना-गुरिया बनवाना बहुत ही कठिन हो गया है।" मंजीता भाभी ने अपने विचार दिए। सभी औरतों ने हां में हां मिलाया।

देश में बढ़ रहीं महंगाई पर चर्चा चल ही रही थी कि मनोरमा चाची ने प्रस्ताव रखा, "चलो खेत की ओर टहल आते हैं। वैसे भी अब शाम हो गई है। यह हमारे टहलने का समय है। दिन भर तो हम चौका बरतन में ही लगे रहते हैं।"

मनोरमा, मंजिता और लल्ली बुआ खेत की पगडंडी पर टहलने लगी। बीच में बनी टयूबेल की पौदर पर सुस्ता रही थी। वहां से उठी तो सीधे घर आ गई। नागेश्वर जी भी अब बाजार से आ चुके थे। उनकी निगाह मनोरमा के कानों पर पड़ी। उन्होंने देखा कि मनोरमा के दाहिने कान में झुमका नहीं था। उन्हें तुरंत शंका हुई और वे मनोरमा से बोले, "तुम एक ही कान का झुमका पहनकर घुमने गई थी क्या?"

"लगता है आज आपको मजाक करने के लिए कोई नहीं मिला। झुमके तो मैं दोनों कानों में पहने हूं।" इतना कह कर मनोरमा अपने हाथ से कानों को टटोली तो दाहिने कान का झुमका नदारत था। उसका जी धक्क हो गया। वह सीधे खेतों की ओर भाग कर गई। अब अंधेरा भी हो चला था। गांव के लड़कों ने मोबाइल की टार्च जलाकर उसको ढूढने में चाची की मदद की। पूरे रास्ते को ध्यान से देखा लेकिन झुमके का कहीं अता-पता न चला।

मनोरमा चाची निराश होकर लौट आई। उसका हृदय दुःखी हो गया। मानो जन्मों की पूजा चली गई है। बड़ी मेहनत से इसके लिए पैसा इक्ट्ठा हो सका था। नागेश्वर का भी मन खिन्न था। उस रात दोनों बिना खाना खाए सो गए। मनोरमा को नींद नहीं आई। वह आंखें मूंदती तो झुमके का सुंदर स्वरूप उसके सामने आ जाता। वह सोचने लगी, "मैं कितनी अभागन हूं। वर्षो बाद झुमका ही हाथ आया तो वह खो गया। लगता है किसी की बुरी नजर लग गई।" मनोरमा यह सब सोच ही रही थी कि न जाने कब आंख लग गई और सवेरा हो गया।

अगले दिन नागेश्वर और मनोरमा अपने घर के बारामदे में बैठे झुमके के बारे में सोच ही रहे थे कि उनके स्कूल का एक छात्र जीतू दौड़ते हुए आया। उसने नागेश्वर जी से कहा, "गुरूजी! मां जी का झुमका मिल गया। सुबह अपने दोस्तों के साथ घूमने गया था तो यह मुझे ट्यूब बेल के पास गिरा हुआ मिला।"

इतना कहकर जीतू ने झुमका नागेश्वर जी के हाथ पर रख दिया। मनोरमा के खुशी का ठिकाना न था। उसका मुरझाया चेहरा खिल उठा।

नागेश्वर जी को उतनी खुशी झुमका मिलने की नहीं थी जितनी जीतू की ईमानदारी पर। उन्होंने जीतू की प्रशंसा की और कहा, "बेटा! तुम चाहते तो यह झुमका अपने पास रख सकते थे। किंतु ऐसा न करके तुमने आज सच्ची ईमानदारी दिखाई है। यह ईमानदारी तुमने कहां से सीखी।"

इस पर जीतू ने विनम्रता से कहा, "गुरू जी! आप ने ही तो बताया था कि ईमानदारी से बढ़ कर दुनिया में और कुछ भी नहीं है। बेइमानी से मिला धन

प्रेरक प्रसंग:

चंद्रशेखर आजाद

● संतोष किरौला

27 फरवरी,1931 को चंद्रशेखर आजाद शहीद हुए थे। भारत की आजादी की लड़ाई में चद्रशेखर आजाद का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। शहीद भगतसिंह तथा रामप्रसाद विस्मिल जैसे क्रांतिकारियों के साथ उनका नाम आदर के साथ लिया जाता है। उनका जन्म 23 जुलाई,1906 को भाबरा गांव में हुआ था। उन्हें आजाद उपनाम से अधिक जाना जाता है। उन्होंने अपना नाम 'आजाद', पिता का नाम 'स्वतंत्रता' तथा 'जेल' को अपना आवास बताया। उनकी पुण्य तिथि पर उनसे जुड़े प्रसंग यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद ने देश के लिए अपने आप को न्यौछावर कर दिया। आजादी के आंदोलन में वे कई बार भूमिगत रहे। वे साधु के वेश में जंगल में भी रहे। एक दिन जंगल में पुलिस उनकी खोज में आ गई। वे बिल्कुल भी नहीं घबराए। पुलिस ने साधु के वेश में रह रहे आजाद से पूछा, "साधु महाराज! आपने इधर चंद्रशेखर आजाद को देखा है क्या?" साधु का वेश बनाए आजाद ने पुलिस से कहा, "बच्चा! आजाद को क्या देखना। हम तो हमेशा आजाद रहते हैं। हम भी तो आजाद ही हैं।" कहीं न कहीं उन्होंने अपनी सच्चाई भी पुलिस को बता दी। "जय हो साधु महाराज की! कहकर पुलिस ने हाथ जोड़कर साधु बने आजाद से माफी मांगी। एक अन्य घटना में चंद्रशेखर आजाद कानपुर में एक देशभक्त मित्र के घर एक समारोह में शामिल हुए। इतने में पता चला कि चंद्रशेखर आजाद को पकड़ने के लिए पुलिस ने मित्र के घर को घेर लिया है। इस पर उनके मित्र बहुत परेशान हुए। चंद्रशेखर आजाद ने अपने मित्र से कहा, "आप घबराइए नहीं। मैं सभी मित्रों को अपने हाथ से मिठाई खिलाकर ही जाऊंगा। आप परेशान न हों।" ऐसा कहकर उन्होंने अपना पतला तौलिया सिर पर बांधते हुए अपने मित्र की पत्नी से कहा, "आइए भाभी जी! बाहर चलकर सभी का मुंह मीठा किया जाए।" कहकर उन्होंने मिठाई की टोकरी अपने सिर पर रख ली। बाहर आंगन में सभी लोगों को मिठाई खिलाई। पुलिस के जवानों को भी मिठाई दी। मिठाई खिलाते-खिलाते वे पुलिस की आंखों के सामने मिठाईवाला बनकर हवेली के बाहर चले गए।

– दरबारीनगर,अल्मोड़ा

थोड़े ही दिन का मेहमान रहता है। हमारे बहुत से दोस्तों ने मुझे इसे छिपा देने के लिए कहा। किंतु जब मुझे आप की बातें याद आई तो मैं सीधे आप के पास आ गया।" इतना कह कर जीतू ने नागेश्वर और मनोरमा के पैर छुए और सीधे घर आ गया।

दूसरे दिन विद्यालय की प्रार्थना सभा में जीतू को मंच पर बुलाया गया। प्रधानाचार्य जी ने उसे माला पहनाई। उसे 'आनेस्ट बॉय आफ द ईयर' सम्मान से विभूषित किया गया। सभी बच्चे तालियां बजाने लगे। नागेश्वर जी ने घोषणा करते हुए कहा कि विद्यालय में जीतू की पढ़ाई का खर्च अब से मैं उठाऊंगा। सभी ने जीतू की ईमानदारी की प्रशंसा की। यही जीतू के लिए ईमानदारी का इनाम था।

– मां वीणापाणि सदन, विश्वनाथ नगर, प्रयागराज, उ.प्र.
मोबाइल-9452143429

पक्षी जो उड़ नहीं सकता

तुमने ऐसे पक्षी का नाम सुना है जो उड़ ही नहीं सकता। यह पक्षी लंबे-लंबे पैरों से चलते हुए एक घंटे में 80 से 90 किलोमीटर तक चल सकता है। पर उड़ नहीं सकता है। जी हां उस पक्षी का नाम है-शतुरमुर्ग। शतुरमुर्ग मुर्गी जैसा गोलमटोल दिखता है। इसके शरीर पर बड़े-बड़े पंख होते हैं। अपने बचाव के लिए यह खतरा भांपते हुए शरीर को गोल मटोलकर अपनी लंबी गर्दन को मिट्टी या बालू में छिपा लेता है। यह किसी भी वस्तु को हजम कर सकता है। इसके पंख बहुत सुंदर होते हैं। इस कारण कई लोग इसका शिकार करते हैं। अब शतुरमुर्ग केवल चिड़ियाघरों में ही देखने को मिलते हैं।

– डॉ. महेंद्रप्रताप पांडेय 'नंद', खटीमा, ऊधमसिंहनगर

कहानी :

शानदार पैंटिंग

● भगवतप्रसाद पांडेय

सुंदर वन की बबली गरमी की छुट्टियों में अपने मामा-मामी से मिलने के लिए शहर गई। उसका नैनिहाल जंगल से दूर, शहर के एक बहुत बड़े पार्क के कोने वाले घने पेड़ में था। उसी पर बने एक घोंसले में उसके मामा-मामी भी रहते थे।

अगली सुबह बबली ने घोंसले से झांक कर नीचे देखा। पार्क में चहल-पहल देख कर वह बड़ी हैरान थी। वहां तरह-तरह के खूबसूरत कपड़े पहने छोटे-छोटे बच्चे इकट्ठे हो गए थे। जो अपने-अपने कागजों पर अलग-अलग रंग भर कर तरह-तरह के चित्र बना रहे थे।

इस सब के बारे में पूछने पर उसकी मामी ने कहा, "ये अलग-अलग स्कूल के बच्चे हैं। जो एक चित्रकला प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं। शहर में एक सांस्कृतिक संस्था है। उसी की ओर से इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। इससे बच्चों को तरह-तरह के रचनात्मक कार्य करने और सीखने का मौका मिलता है।"

छुट्टियां बीतने पर बबली सुंदर वन लौटी। उसने अपने करीबी दोस्तों को शहर की तमाम बातों के साथ चित्रकला प्रतियोगिता वाली बात भी बताई। यह बात वन के महामंत्री गज्जू हाथी के बेटे ने अपने पिता को बताई। जो बातों-बातों में जंगल के महाराज के कानों तक जा पहुंची।

महाराज ने सोचा कि हमारे वन में भी होनहार बच्चों की कमी नहीं है। बच्चों के हुनर को बढ़ावा मिलना ही चाहिए। ऐसा अध्ययन हम भी करें तो जंगलवासियों को खुशी मिलेगी। महाराज ने शिक्षामंत्री से चर्चा की तो उन्हें बड़ी खुशी हुई। शिक्षा मंत्री ने बिना कोई बिलंब किए प्रतियोगिता करने का आदेश कर दिया।

ड्राइंग-पैंटिंग कंप्टिशन का दिन तय हुआ। शेरवुड ऐकेडमी के हरे-भरे मैदान में पशु-पक्षियों के बच्चे आमंत्रित किए गए। आयोजन को ले कर बच्चों के चेहरों में खुशी छाने लगी। बबली ने औरों के अलावा अपने गूंगे दोस्त हरियल तोते को भी प्रतियोगिता की खबर सुनाई।

हरियल बचपन में बहुत शरारती था। वह शरीर से जरूर छोटा, लेकिन साहसी था। उसकी उम्र कम थी, किंतु बुद्धिमान बहुत था। उसे खुली डाल पर बैठकर खाना खाने की आदत थी। एक बार वह पेड़ की कोटर से बाहर आ कर गुनगुनी धूप में आम के रस का स्वाद ले रहा था। अचानक उस पर आसमान में उड़ते हुए बाज की पैनी नजर पड़ी। उसने झपट्टा मार कर हरियल को उठा लिया ओर अपने साथ ले गया। हरियल ने अपनी जान बचाने के लिए लगातार हाथ-पैर छटपटाए और बाज से संघर्ष भी किया।

छोटे से परिंदे को बाज से जूझते देख बूढ़ा चील उड़ा। वह सीधा बाज के घोंसले तक जा पहुंचा और किसी तरह लड़-झगड़ कर घायल हरियल को घर ले आया। बूढ़ा चील हरियल के पापा मिट्ठू का जिगरी दोस्त था। बाज के पंजों की मजबूत पकड़ से हरियल के गले में गहरा घाव हो गया था। इलाज के बाद जख्म तो भर गया, लेकिन इस हादसे में हरियल की आवाज चली गई।

हरियल बेजुबान जरूर हो गया लेकिन बहरा नहीं था। उसके न बोल पाने के कारण आसपास के छोटे-छोटे चिड़े-चिड़ी उसका मजाक बनाते थे। जब उन्हें पता चला कि हरियल भी चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेना चाहता है, तो उन्होंने एक साथ बड़ी जोर का ठहाका लगाया और कहने लगे कि बोल तो पाता नहीं, चित्र क्या खाक बनाएगा?

यह सुनकर बबली ने हरियल को हताश होने से रोका। उसने बच्चों को भी प्रेमपूर्वक समझाते हुए कहा, "यह बोल नहीं पाता तो क्या हुआ? चित्र तो बना ही सकता है। चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए तुम्हें हरियल का उत्साहवर्धन करना चाहिए।"

नियत तिथि को प्रतियोगिता शुरू हुई। जंगल में रहने वाले नन्हें-मुन्ने बच्चे पहली बार इस तरह की प्रतियोगिता में हिस्सा ले रहे थे। प्रतिभागियों को कलर करने की सामग्री और कागज सब कुछ शिक्षा विभाग की ओर से दिया गया।

प्रतियोगिता के बाद निर्णायकों ने बच्चों की पैंटिंग देखी और परिणाम महामंत्री को दिए। वनराज ने सभी बच्चों की कलाकारी और कल्पनाशीलता देख कर तारीफ की। एक-एक कर उन्हें प्रमाण पत्र भी दिया और सुंदर कैप पहनाई।

विजेताओं में अपना नाम न सुन कर हरियल तो उदास हुआ ही बबली को भी हैरानी हुई। यह बात केवल वह जानती थी कि हरियल गजब का कलाकार है। साथी बच्चे भी खुसर-फुसर करने लगे कि शायद हरियल अपनी कमजोरी की वजह से कोई चित्र नहीं बना पाया होगा।

कार्यक्रम के अंत में महाराज शेर सिंह ने एक पैंटिंग उठाई और सभी को दिखाते हुए कहा, ''यह है हरियल की शानदार पैंटिंग। इसे नन्हें हरियल ने बनाया है। उसे हम अपनी ओर से विशेष पुरस्कार में यह लैपटाप देते हैं। सभी बच्चों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उसकी कलाकृति का सम्मान किया। शिक्षा मंत्री ने बच्चों को धन्यवाद दिया और उनकी अभिरुचि देखते हुए आगे भी ऐसी प्रतियोगिताएं करवाने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम के बाद सभी अपने-अपने घरों को चले गए।

-पाटन, लोहाघाट, चंपावत, मोबाइल-9458130723

टेलीविजन

● अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'

एक अजूबा जादू बक्सा,
बड़े अनोखे इसके काम।
टी.वी., टी.वी. कहते हैं सब,
टेलीविजन पूरा नाम।
दादा, दादी, मम्मी, पापा,
गुड्डू, मन्नू और मुनियां।
बिस्तर में लेटे-लेटे,
देखा करते सारी दुनियां।
भांति-भांति के खेल तमाशे,
नाच, गीत, सरकस, ड्रामा।
देश-देश की ताजा खबरें,
लोकसभा का हंगामा।
हिंदी, तेलगू, तमिल, बंगाली,
कभी पुरानी, कभी नई।
बिना टिकट ही पिक्चर देखो,
एक हफ्ते में कई-कई।
सब कुछ देखो बंटी भैया,
पर यह रखो ध्यान जरूर।
लेट के टी.वी. कभी न देखो,
देखो बैठ के दूरी पर।

- सी-2, एच-पार्क, महानगर, लखनऊ
मोबाइल-9415215139

फूल

● सुरेशचंद्र सर्वहारा

देखो! कितने खिले बाग में,
रंग रंग के फूल निराले।
लाल गुलाबी नीले-पीले,
श्वेत बैंगनी कुछ मटियाले।
आपस में ये मिलकर रहते,
सबको अपनी गंध लुटाते।
सर्दी गर्मी वर्षा में भी,
रहते हैं हंसते मुस्काते।
दूर-दूर से आ मधुमक्खी,
इन फूलों का रस ले जाती।
तितली भंवरे आ मंडराते,
कोयल मीठा गीत सुनाती।
जब तक जीते खुश रहते हैं,
औरों का भी मन बहलाते।
जो फूलों से महका करते,
वे अच्छे मानष कहलाते।

- 3 फ 22, विज्ञान नगर, कोटा (राज.)
मोबाइल-9928539446

सूरज

● मनमोहन अभिलाषी

कहां गए तुम हमको बापू,
यहां धरा पर छोड़कर।
कहां अनंत में चले गए तुम,
हम से नाता तोड़कर।
दो अक्टूबर, तीस जनवरी,
दिवस याद हैं सब करते।
सुना है तुम तो अमर हो गए,
अमर कभी नहीं हैं मरते।
जाते हैं जब राजघाट हम,
क्यों नहीं हमसे बोलते।
सुखी नहीं हो स्वर्ग में क्या तुम,
व्यथा को क्यों नहीं खोलते।
विड़ला-मंदिर भी अब सूना,
तुमको अब है खोकर।
बिन प्रवचन रोती दीवारें,
हिचकी ले-ले रोकर।
विड़ला-मंदिर के ईश्वर भी,
हम सबसे यह कहते हैं।
आंसू भर कर रोना छोड़ो,
राष्ट्रपिता नहीं मरते हैं।
सब्र करो अविलंब ही भारत,
रामराज्य बन जाएगा।
गांव कोई भी बिन बिजली के,
आगे नहीं रह पाएगा।
स्वच्छ और स्वस्थ रहेगा भारत,
कृषि के साथ मंत्रालय,
कृषक जुड जाएगा।
सभी नीतियां कृषक के हित बन,
नूतन सूरज उग आएगा।

- मंडी अटलबंद, भरतपुर (राजस्थान)
मोबाइल-9983409454

किसान

● कौशल पांडेय

मन से उजले तन से दुबले,
मेहनत की हैं मूर्ति किसान।
सरदी-गरमी इनसे हारी,
तूफानों के मित्र किसान।
अन्न उगाकर जीवन देते,
हम सबके हैं प्राण किसान।
गाय-बैल हैं इनको प्यारे,
श्वेत क्रांति के जनक किसान।
इनका जीवन सीधा-सादा,
सुख-सुविधा से दूर किसान।
हमें खिला खुद भूखे रहते,
ऐसे भोले संत किसान।
कर्म की गीता रखें अनोखी,
नवयुग के ये कृष्ण किसान।
शहरी भैया इन्हें न छलना,
जनम-जनम के दुखी किसान।

-1310ए,बसंत बिहार,कानपुर,उ.प्र.-208081
मोबाइल-9532455570

मेरी मां

● प्रदीप बहराइची

सच है धरती पर स्वर्ग यहीं है,
सच है मां की गोद वह जमीं है।
मां की लोरी, झिड़की का नहीं जवाब,
मेरी मां सबसे प्यारी लाजवाब।
मैं भी मां हूं पर सच तो यही है,
मेरी मां ही मुझसे भी भली है।
मेरी मां तू जिए साल हजार,
तुम बिन मेरा जीना ही बेकार।
मां ही मंदिर मां ही भगवान,
मां ही घर है मां ही जहीन।

- बड़कागांव, पयागपुर,बहराइच, उ.प्र.
मोबाइल- 8931015684

भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा जन सहयोग से प्रकाशित

ज्ञान विज्ञान बुलेटिन

3 वर्ष का शुल्क एक सौ साठ रुपए भिजवाकर सहयोग करें। विज्ञान एवं जन विज्ञान आधारित तथा समसामयिक रचनाएं सादर आमंत्रित हैं।

संपादक, ज्ञान विज्ञान बुलेटिन मासिक,
मोहल्ला खोल्टा, अल्मोड़ा (उत्तराखंड)
मो. : 9412928498, 9412162950

कहानी :

लौट आई हरियाली

● डॉ. दर्शनसिंह आशट

सिमरन अपने नैनिहाल आया हुआ था। उसे स्कूल से एक सप्ताह की छुट्टियां हो चुकी थीं। उसे अपने मामाजी के साथ बहुत स्नेह था। मामा-भांजा में एक दूसरे के साथ हंसी-मजाक चलता रहता। जब कभी सारा परिवार इक्ट्ठा बैठा बातें कर रहा होता तो मामाजी चुपके से उसके सिर पर ठोला मार देते। जब सिमरन एकदम पीछे मुड़कर देखता तो मामाजी दूसरी तरफ देखने लगते मानो उन्हें कुछ पता ही न हो। सिमरन झट बोलता, "सब पता चल गया है। कोई बात नहीं ... कोई बात नहीं।"

सिमरन भी चुपके से मामाजी के कुरते के पीछे एक लंबी रस्सी लेकर बांध देता। जब मामाजी चलने लगते तो घर परिवार के लोग देखकर हंसने लगते। मामाजी सिमरन की तरफ तिरछी नजर से देखते हुए बोलते, "कोई बात नहीं कोई बात नहीं। देख लूगा ...।"

सिमरन मामाजी के साथ हर रोज सुबह सैर को निकल जाता था। दोनों लंबी सैर करके लौटते।

एक दिन सिमरन मामाजी के साथ सैर के लिए जा रहा था। रास्ते में सड़क के किनारे पर लगे एक छोटे से जामुन के पेड़ पर सिमरन की दृष्टि पड़ी। उसका तना अजीब सा था। मानो किसी ने पूरे तने पर मिट्टी का लेप किया हो। वह पेड़ के पास आया और ध्यानपूर्वक उसे देखने लगा। दीमक ने जामुन के पेड़ पर बुरी तरह से हमला

किया हुआ था। पेड़ सूखता जा रहा था। उसकी टहनियां और पत्ते बेहद उदास लग रहे थे। मानो कह रहे हों, ''कोई हमें बचा लो हमें बचा लो।''

मामाजी सैर करते थोड़ा आगे निकले। उन्होंने रूक कर सिमरन को आवाज देते हुए कहा, "अरे क्या जाकर देख रहे हो? जल्दी आओ। तुम्हारी सैर पूरी नहीं होगी। और मैं भी अपनी दुकान के लिए लेट हो जाऊंगा।''

सिमरन ने कहा, "मामाजी! आप जाइए। मैं बाद में आता हूं।''

मामाजी बोले, "अरे तुमने इस सूखे पेड़ से क्या लेना देना है? मुझे मालूम है। इसको दीमक लगी हुई है। चलो जल्दी आओ।''

सिमरन बोला, "लेकिन मामाजी! दीमक के कारण देखिए यह छोटा सा पेड़ सूखता जा रहा है। इसकी टहनियों और पत्तों का भी हाल देखिए।"

मामाजी सकते में आ गए। वे बोले, "चलो तुम करते रहे परोपकार। बचाते रहे इस सूखे पेड़ को, मैं चला सैर को।"

यह कहकर मामाजी आगे बढ़ गए।

सिमरन ने आसपास देखा। उसे कुछ दूर एक सूखी टहनी दिखाई दी। उसने टहनी उठाई और सबसे पहले उस पेड़ की जड़ से तने के इर्द गिर्द की मिट्टी को झाड़ा। वह यह देखकर दंग रहा कि दीमक अंदर से पेड़ के तने को बुरी तरह खा चुकी थी। वह खोखला हो रहा था। ऐसे लगा रहा था मानो किसी ने तलवार के साथ उस छोटे से पेड़ के तने पर निरंतर वार करके उसका छिलका उतार दिया हो। सिमरन यह देखकर और भी हैरान हुआ कि दीमक ने अंदर ही अंदर तने के उपर तक जाने के लिए अपने गहरे रास्ते बनाए हुए थे। दीमक की ऐसी कारीगरी को देखकर सिमरन हैरान रह गया।

सिमरन निरंतर तने के साथ चिपकी हुई मिट्टी को सूखी टहनी के साथ उतारता रहा। कितनी ही दीमक नीचे गिर चुकी थी। कुछ देर बाद सिमरन के मामाजी के दोस्त बलदेव भी सैर करते हुए वहां से निकले। उन्होंने सिमरन को पहचान लिया। वह भी उनके पास आ गए। उन्होंने ने भी एक टहनी उठाई और जहां तक सिमरन का हाथ नहीं पहुंचता था। वहां तक तने पर चिपकी मिट्टी और दीमक को साफ किया।

इतने में मामाजी सैर करके वापिस लौटे। उन्होंने देखा कि सिमरन के साथ उनके दोस्त बलदेव भी दीमक को उतारने में व्यस्त थे। सिमरन के मामाजी व्यंग्य से अपने दोस्त बलदेव से बोले, "बलदेव जी! तुम भी सिमरन की तरह फिजूल काम में पड़ गए। सैर करना भूल गए हो क्या?"

मामाजी के दोस्त उनसे हाथ मिलाते हुए बोले, "प्रकाश जी! प्रकृति को बचाना बहुत बड़ा पुण्य है। हम हर रोज यहां से सैर करते हुए गुजरते हैं। लेकिन हमने कभी सोचा है कि इस पेड़ के कारण ही हम जिंदा हैं। जो काम हमें करना चाहिए था। वह इस लड़के ने कर दिया है। तुम्हारे भांजे ने अपनी सैर छोड़कर आज इस नन्हे पेड़ को जिंदगी प्रदान की है। मैं इसे शाबाशी देता हूं।'' मामाजी अपने दोस्त की बात सुनकर शर्मिंदा सा हो गए। क्योंकि अब तक सारा तना साफ किया जा चुका था।

कल से स्कूल खुल रहा था। इसलिए सिमरन वापिस अपने घर लौट गया था। अगले दिन सिमरन के मामाजी बाजार से दीमक की दवा ले आए और पानी में मिलाकर जामुन के पेड़ की जड़ में डाल दी।

दो महीने बाद जब सिमरन फिर नैनिहाल आया तो यह देखकर खुश हो गया कि जामुन के पेड़ पर हरियाली छाई हुई थी। उसकी टहनियां और पत्ते हवा में झूम रहे थे। सिमरन जामुन के पास खड़ा पेड़ को निहार रहा था। उसे लगा जैसे झूमती हुई टहनियां और पत्ते सिमरन को कह रहे हों। धन्यवाद सिमरन!'' सिमरन के चेहरे पर अनोखी मुस्कान थी।

- पंजाबी विश्वविद्यालय
कैंपस पटियाला (पंजाब)
मोबाइल 9814423703

रंग भरो

चॉद मोहम्मद घोसी, नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी (राज.)
मोबा. : 09252738427

जानकारी:

ऐसा क्यों होता है?

● घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान की तीन शाखाएं हैं - भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं जीवन विज्ञान। विज्ञान की इन्हीं शाखाओं से संबंधित कुछ रोचक प्रश्नोत्तर नीचे दिए जा रहे हैं जो तुम्हारा ज्ञानवर्धन करेंगे।

✦ हाथ से कूटे अथवा सेला चावल अधिक पौष्टिक क्यों माने जाते हैं?

हाथ से कूटे अथवा सेला चावल में लौह तत्व तथा विटामिन अधिक मात्रा में पाए जाते हैं जो स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहते हैं। मिल में छिलका उतारने, भूसा निकालने तथा पालिस करने से चावल के पोषक तत्वों में कमी आ जाती है जिससे इनकी पौष्टिकता कम हो जाती है। अत: हाथ से कूटे अथवा सेला चावल ही प्रयोग करने चाहिए।

✦ अधिक समय तक भोजन पकाना हानिकारक क्यों है?

अधिक समय तक भोजन पकाने से खाद्य-पदार्थों में उपस्थित विटामिनों एवं प्रोटीनों की कमी तो आती ही है, साथ ही साथ भोजन भी अनुपयुक्त हो जाता है। अत: अधिक समय तक भोजन नहीं पकाया चाहिए क्योंकि ऐसा करने से सामान्य रूप से प्रयोग किया जाने वाला सोडियम बाईकार्बोनेट, विटामिन 'बी' तथा विटामिन 'सी' नष्ट होता है। प्रोटीन भी कड़े तथा संकरित हो जाते हैं। जिसकी वजह से ऐसा भोजन प्रयोग करने पर शरीर में इसका अवशोषण नहीं हो पाता है।

✦ आयु बढ़ने के साथ-साथ बहुत से व्यक्ति मोटे क्यों हो जाते हैं?

आयु बढ़ने के साथ-साथ मनुष्य की ऊर्जा व्यय करने की क्षमता भी कम हो जाती है। इस अवस्था में शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के लिए भोजन की अल्प मात्रा में ही आवश्यकता पड़ती है। इसके विपरीत, मनुष्य यदि पहले की ही भांति भोजन ग्रहण करता रहे तो फालतू भोजन वसा के रूप में बदलकर शरीर में एकत्रित होने लगता है। अत: व्यक्ति मोटे हो जाते हैं।

✦ धूप से अचानक कमरे में आने पर चीजें साफ क्यों नहीं दिखती हैं?

अब तुम धूप से अचानक कमरे में प्रवेश करते हो तो तुम्हें चीजें साफ नहीं दिखती हैं। दरअसल, धूप के कारण आंखों की पुतलियां सिकुड़ जाती हैं। कमरे में कुछ देर रहने पर ही ये दुबारा अपनी पूर्व अवस्था में आ पाती हैं। यही वजह है कि चीजों को साफ-साफ देखने में थोड़ा समय लगता है।

✦ दौड़ने अथवा व्यायाम करने पर हृदय तेजी से क्यों धड़कता है?

दौड़ते अथवा व्यायाम करते समय तुम्हारी हृदय की गति तीव्र हो जाती है। क्योंकि उस समय तुम अधिक ऊर्जा का उपयोग करते हो। शरीर में अधिक ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त ऑक्सीजन जरूरी होती है। शरीर के जो भाग अधिक कार्य करते हैं, उन तक जल्दी-जल्दी ऑक्सीजन पहुंचाने के लिए शरीर में रक्त की गति तेज हो जाती है जिससे हृदय तेजी से धड़कता है। यों तो हृदय एक मिनट में 72 बार धड़कता है किंतु दौड़ने या व्यायाम करने पर इसकी धड़कन बढ़ जाती है।

✦ शौच के बाद हाथों को भली भांति धोना जरूरी क्यों है?

शौच के बाद हाथों को साबुन या अन्य पदार्थों (मिट्टी, राख आदि) से भली-भांति धोना जरूरी है ताकि तुम स्वस्थ रह सको। शौच के बाद तुम्हारे हाथों में हानिकारक कीटाणु चिपके रहते हैं। यदि इन्हें साफ न करें तो ये पेट में पहुंचकर बीमारियां फैला देते हैं। कभी-कभी दूसरे व्यक्तियों से हाथ मिलाने पर उनमें भी ये चले जाते हैं। इसलिए लापरवाही बरतनी हानिकारक सिद्ध होती है।

✦ तकिया लगाकर सोना नुकसानदेह क्यों होता है?

तकिया लगाकर सोना तो तुम्हें अच्छा लगता है। लेकिन ज्यादातर बीमारियों की जड़ सिरहाने पड़ा रहने वाला यही तकिया माना गया है। तकिये की वजह से व्यक्ति को दिल (हृदय) तथा आंखों की बीमारियों के अलावा दमा जैसे खतरनाक रोग जकड़ लेते हैं। दरअसल, तकिये पर सिर रखकर सोते समय मनुष्य के शरीर की सभी गतिविधियों को नियंत्रित करने वाली रक्त संचार प्रणाली में अवरोध उत्पन्न हो जाता है। परिणाम स्वरूप, शरीर को पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन नहीं मिल पाती है।

✦ भोजन अदल-बदलकर क्यों खाना चाहिए?

तुम्हारे शरीर को जिन पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है, वे एक ही प्रकार के भोजन से कदापि नहीं मिलते हैं। इन्हें प्राप्त करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार का भोजन लेना जरूरी है। भरपूर पोषक तत्वों की प्राप्ति में भोजन को अदल-बदलकर लेना तुम्हें अपनी आदत बनाने में ही समझदारी है। जिससे स्वास्थ्य की पूंजी कदापि कम न हो। सिर्फ जीभ के स्वाद के लिए भोजन ग्रहण करना कोई अक्लमंदी नहीं होती है।

✦ ब्रेड और डबलरोटी में छेद क्यों होते हैं?

ब्रेड और डबलरोटी आटे या मैदा से तैयार की जाती है जिन्हें गूंथते समय थोड़ा सा खमीर (फफूंद) भी मिला दिया जाता है। आटे की गरमी और पानी की कमी के कारण फंफूद तेजी से बढ़ने लगती है जिससे बुलबुले उठते हैं। परिणाम यह निकलता है कि मैदे का आयतन बढ़ जाता है। जब इसको पकाने के लिए भट्टी पर रखते हैं तो बुलबुले फुट जाते हैं। ब्रेड या डबलरोटी में असंख्य छोटे-छोटे छेद हो जाते हैं।

✦ जम्हाई क्यों आती है?

तुम सोच रहे होगे कि अधिक काम से थकान उत्पन्न होने अथवा पूरी तरह नींद न लेने पर जम्हाई आती है। लेकिन ऐसा कदापि नहीं है। दरअसल, काफी देर तक एक ही स्थिति में बैठे रहने अथवा कठोर परिश्रम करने से एवं लंबे समय के बाद तुम्हारे शरीर की श्वसन गति धीमी पड़ जाती है। जिससे शरीर में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है। हां, यही कारण होता है जम्हाई आने का। जम्हाई से छुटकारा पाने के लिए शरीर में अधिक से अधिक ऑक्सीजन का बनाए रखना जरूरी होता हैं।

- 785/8, अशोक विहार, गुरुग्राम (हरियाणा)
मोबाइल-9210456666

ऐतिहासिक निर्णय

- भराड़ीसैंण (गैरसैंण) बनी उत्तराखण्ड की ग्रीष्मकालीन राजधानी।
- श्रद्धालुओं की सुविधाओं और चारधाम के विकास की दृष्टि से "चारधाम देवस्थानम् बोर्ड" का गठन।

डबल इंजन की सौगात : एक लाख करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न परियोजनाएं प्रदेश के लिए स्वीकृत

- ऋषिकेश–कर्णप्रयाग रेल परियोजना, चारधाम ऑलवेदर रोड परियोजना, भारतमाला परियोजना, केदारनाथ धाम पुनर्निर्माण तथा देहरादून स्मार्ट सिटी परियोजना का कार्य निर्माणाधीन।
- बदरीनाथ महानिर्माण के लिए ₹424 करोड़ की धनराशि।
- जमरानी बांध बहुद्देशीय परियोजना एवं टिहरी झील परियोजना स्वीकृत।
- एनआईटी के लिए ₹910 करोड़ की स्वीकृति।
- नमामि गंगे के लिए ₹1370 करोड़ स्वीकृत, ₹873 करोड़ के 62 कार्य पूर्ण।

रिवर्स पलायन, स्वरोजगार

- 6 लाख से अधिक लौटे प्रवासियों एवं प्रदेश के युवाओं के लिए 150 से अधिक कार्यों के लिए मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना में आर्थिक सहायता का प्रावधान।
- मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना में 8302 आवेदनों के सापेक्ष जिलास्तर पर स्वीकृत 4963 परियोजनाओं में से 1529 परियोजनाओं को बैंकों द्वारा वित्तपोषण।
- इन्वेस्टर्स समिट के बाद अभी तक ₹25 हजार करोड़ से अधिक के निवेश की ग्राउंडिंग तथा 57 हजार को मिलेगा रोजगार।
- 10 हजार युवाओं को सौर ऊर्जा क्षेत्र में मिलेगा रोजगार।
- 10 हजार वनाग्नि रक्षक से रोजगार।
- 104 ग्रोथ सेन्टर की स्थापना, 30 हजार को मिलेगा रोजगार।
- वर्तमान सरकार के कार्यकाल में 14450 औद्योगिक इकाईयों की स्थापना तथा 1 लाख से अधिक को रोजगार।

सड़क एवं पुल

- प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में मार्च 2017 से अभी तक ₹2888 करोड़ का व्यय तथा 6409 किलोमीटर लम्बाई की सड़कों का निर्माण कार्य पूर्ण व 657 बसावटों को सड़क से जोड़ा गया।
- वर्तमान सरकार के कार्यकाल में लोक निर्माण विभाग द्वारा बनाई गई 3500 किलोमीटर की 1160 नई सड़कें तथा 3900 किलोमीटर सड़कों का पुनर्निर्माण एवं चौड़ीकरण।
- 274 पुलों का निर्माण।
- 7000 मीटर टनल व फ्लाईओवर का निमार्ण/निर्माणाधीन।
- 14 साल के लम्बे इंतजार के बाद टिहरी को प्रतापनगर से जोड़ने हेतु डोबराचांठी पुल आवागमन के लिये खोला गया।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य कल्याण

- 750 से अधिक चिकित्सकों की नियुक्ति व पर्वतीय जनपदों में आवश्यकता अनुसार तैनाती।
- देहरादून, श्रीनगर, अल्मोड़ा, हल्द्वानी, रुद्रपुर के बाद अब हरिद्वार और पिथौरागढ़ में भी होगा मेडिकल कॉलेज।
- राज्य के सभी जनपदों में आई0सी0यू0 स्थापित।
- अटल आयुष्मान उत्तराखण्ड योजना मे राज्य के सभी परिवारों को ₹5 लाख वार्षिक की निःशुल्क चिकित्सा सुविधा।
- अटल आयुष्मान उत्तराखण्ड योजना में 39 लाख से अधिक लोगों के गोल्डन कार्ड बनाए गए। अभी तक 2 लाख 17 हजार मरीजों का निःशुल्क उपचार तथा ₹211 करोड़ इलाज पर व्यय।
- राज्य के सरकारी कार्मिकों और पेंशनरों को भी अटल आयुष्मान उत्तराखण्ड योजना में किया गया शामिल। देशभर के 22 हजार से अधिक अस्पताल इलाज हेतु सूचीबद्ध।

किसान कल्याण

- किसानों को ₹3 लाख और महिला स्वयं सहायता समूह को ₹5 लाख तक का ऋण बिना ब्याज के उपलब्ध।
- किसान सम्मान निधि के अन्तर्गत 8.57 लाख किसानों को ₹852.04 करोड़ का भुगतान।
- जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए 3900 जैविक क्लस्टरों में कार्य प्रगति पर।
- 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने हेतु ₹3340 करोड़।

खाद्य एवं आपूर्ति

- प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के अन्तर्गत उत्तराखण्ड राज्य के 62 लाख लाभार्थियों को प्रतिमाह प्रति यूनिट 5 किलो चावल और 13.49 लाख प्रति परिवार को 1 किलो दाल निःशुल्क।
- मुख्यमंत्री दाल पोषित योजना के अन्तर्गत 24 लाख राशनकार्ड धारकों को 02 किलो दाल प्रतिमाह सस्ती दरों पर।
- प्रत्येक राशनकार्ड आधार से लिंक।

समाज कल्याण

- वृद्धावस्था, विधवा और दिव्यांगजन पेंशन की राशि तथा ग्राम प्रहरियों के मानदेय में की गई बढ़ोतरी।
- आंगनबाड़ी कार्यकत्री, आंगनबाड़ी सहायिका, मिनी आंगनबाड़ी कार्यकत्री के मानदेय में बढ़ोतरी।
- प्रदेश के लोक कलाकारों का मानदेय किया दोगुना।

पर्यटन एवं फिल्म

- 13 डिस्ट्रिक्ट 13 न्यू डेस्टीनेशन का कार्य गतिमान।
- ₹375 करोड़ के रोप–वे का निर्माण पी.पी.पी. मोड़ पर।
- 2200 से अधिक होमस्टे पंजीकरण से युवाओं को रोजगार।
- राज्य में 27 हेलीपोर्ट विकसित किये जाने का निर्णय।
- फिल्मकारों के लिये बेस्ट शूटिंग डेस्टिनेशन बना उत्तराखण्ड, साढ़े तीन साल में 300 से अधिक फिल्मों एवं सीरियल की शूटिंग।

अन्य महत्वपूर्ण निर्णय

- घोषणा पत्र के 85 फीसदी वायदे पूरे।
- हर घर को नल से जल योजना में केवल 1 रूपये में पानी का कनेक्शन। कोरोना काल में 50 हजार परिवारों को कनेक्शन ।
- सौभाग्य योजना में शत्–प्रतिशत विद्युतीकरण।

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी | www.uttarainformation.gov.in UttarakhandDIPR DIPR_UK
महिला हेल्पलाइन नं. 1090 | किसान कॉल सेंटर नं. 1551 | सी.एम.हेल्पलाइन नं. 1905 | चाइल्ड हेल्पलाइन नं. 1098 | आयुष्मान उत्तराखण्ड हेल्पलाइन नं. 104 | आपदा कॉल सेन्टर नं. 1070

कहानी :

नन्हा वैज्ञानिक

● डॉ. रमेश आनंद

स्वतंत्र पब्लिक स्कूल का देवांश कक्षा 8 का छात्र है। वह बड़ा परिश्रमी, लगनशील बालक है। वह सदैव पढ़ने में अब्बल आता है। उसके शिक्षक उसे बहुत प्यार करते हैं। देवांश सदैव विज्ञान शिक्षक से तरह-तरह के प्रश्न किया करता है। शिक्षक भी उसके प्रश्नों का उत्तर देकर बाल आकांक्षा को शांत करते हैं। उसके शिक्षक विज्ञान पर आधारित प्रश्नों को सुनकर कहते हैं कि एक दिन देवांश बड़ा वैज्ञानिक बनेगा।

बरसात के दिन थे जगह-जगह गड्ढ़ों में पानी भरा हुआ था। देवांश ने एक कागज की नाव बनाकर पानी से भरे गड्ढे में डाल दी। नाव पानी में तैरने लगी। यह देखकर देवांश ताली बजा बजाकर बहुत खुश हो रहा था। देवांश ने सोचा कि क्या नाव कुछ सामान भी रखकर ले जा सकती है। इस जिज्ञासा को शांत करने के लिए उसने नाव पर अपने पैंसिल और रबड़ रख दिए। निरंतर नाव तैरती रही। इसके पश्चात् उसने उसी नाव पर कुछ सिक्खे रखे। परिणाम स्वरूप नाव पानी में डूब गई। यह देखकर देवांश बहुत दु:खी हुआ।

दूसरे दिन विद्यालय में देवांश ने यह घटना अपने शिक्षकों को बताई। इस घटना को सुनकर विज्ञान शिक्षक ने कहा कि क्षमता से अधिक वजन नाव में रखने के कारण नाव पानी में डूब गई। अगले दिन देवांश ने अपने शिक्षक से प्रश्न किया क्या लकड़ी से बनी नाव भी डूब जाएगी?

शिक्षक ने उत्तर देते हुए देवांश से कहा, ''लकड़ी पानी से हल्की होती है। लकड़ी की बनी नाव पानी पर तैरती रहेगी। परंतु क्षमता से अधिक भार होने पर नाव डूब जाएगी। यकायक देवांश ने अपने शिक्षक से पूछा, ''क्या लकड़ी की नाव तैरने के साथ-साथ उड़ भी सकती है?'' शिक्षक ने उत्तर दिया कि नाव पानी पर तैर सकती है परंतु उड़ नहीं सकती है। शिक्षक का उत्तर सुनकर बाल आकांक्षा शांत नहीं हुई।

उसनी अपनी आकांक्षा को शांत करने के लिए लकड़ी के टुकड़ों से एक नाव तैयार की। पिता द्वारा मेले से लाए गए उड़ने वाले हौलिकोप्टर को रबड़ बैंडों की सहायता से नाव पर उसने कस दिया। चाबी भरकर इस नाव को पानी पर छोड़ दिया गया। कुछ देर नाव पानी पर तैरते तैरते ऊपर उठने लगी। काफी देर तक नाव हवा में उड़ती रही। चाबी खत्म होते ही फिर पानी पर तैरने लगी। यह देखकर देवांश की खुशी का ठिकाना न रहा। देवांश ने अपना यह आविष्कार अपने विज्ञान शिक्षक को दिखलाया तो वह आश्चर्य चकित रह गए। शिक्षक ने देवांश को बताया कि एक सादा मोटर दूसरी हेलिकोप्टर की छोटी मोटर और पंखा लगा कर इसे हैलीवोट बनाया जा सकता है।

विद्यालय के प्रधानाचार्य और विज्ञान शिक्षक इस आविष्कार को साकार रूप प्रदान करने हेतु एक मशहूर वैज्ञानिक से मिले। उन्होंने शिक्षकों को आश्वासन दिया कि मैं देश हित में इस आविष्कार को साकार रूप प्रदान करूंगा। विज्ञान दिवस पर इसके आविष्कारक बालक को सम्मानित कराने के लिए राष्ट्रपति महोदय से सिफारिश भी करूंगा। विज्ञान दिवस पर एक भव्य समारोह में राष्ट्रपति महोदय ने प्रशस्ति पत्र देकर देवांश को सम्मानित किया। अपने संबोधन भाषण में देवांश की प्रशंसा करते हुए कहा, ''ये नन्हें वैज्ञानिक ही अपने आविष्कारों से राष्ट्र को शिखर पर पहुंचाएंगे। मैं ऐसे वैज्ञानिक के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं। देवांश को इस आविष्कार के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं। देवांश बहुत खुश था।

- 2/305 बघेल कुंज नामनेर, आगरा
मोबाइल-9458261887

जानकारी:

टमाटर की कहानी

आज टमाटर हमारे घर में सब्जी, सलाद आदि कई रूपों में प्रयोग होता है। एक जमाना था जब टमाटर को जंगली फल यानी जहर समझकर नहीं खाया जाता था।

सन् 1820 में डेविड जॉनसन ने सार्वजनिक तौर पर घोषणा की थी कि वह टमाटर खाएगा। क्योंकि तब टमाटर को जहर माना जाता था। टमाटर यानी जहर खाने का मतलब आत्महत्या से जुड़ा था। इस कारण सरकार ने भारी संख्या में पुलिस तैनात कर दी। निश्चित दिन जॉनसन ने टमाटर खाना प्रारंभ किया। तीन चार टमाटर खाने तक पुलिस वाले उसे देखते रहे। टमाटर खाने के बाद उसके चेहरे में कोई अंतर नहीं था। वह टमाटर खाते रहा। कुछ देर में दूसरे लोग भी टमाटर खाने लगे। लोगों को इसका स्वाद भाया। तब से टमाटर का उपयोग सब्जी व दूसरी तरकारी में होने लगा। ये थी टमाटर की कहानी। आज तो बगैर टमाटर के कोई सब्जी नहीं बनती। सलाद में भी इसका उपयोग बहुतायत में होता है। आजकल टमाटर के सूप का प्रचलन बढ़ गया है। अब यह जहर नहीं है। आप जरूर टमाटर खाएं।

● डॉ. हेमंत कुमार, गोराडीह,भागलपुर, बिहार

सुनो रे भाई

● डॉ. दलजीत कौर

चिड़िया के थे बच्चे चार,
करते थे चिड़िया से प्यार।
चिड़िया सुबह-सबेरे जाती,
बच्चों के लिए खाना लाती।
अपनी चोंच से उन्हें खिलाती,
खाना चबाना उन्हें सिखाती।
एक बच्चा था बड़ा शैतान,
करता रोज़ खड़ा तूफान।
एक दिन वह पेड़ से कूदा,
जा कर वह नदिया में डूबा।
मां ने उसे बाहर निकाला,
घोंसले में लाकर डाला।
एक बात सबने समझाई,
मां की बात सुनो रे भाई।

- 257/40 सी, चंडीगढ
मोबाइल-9463743144

बंदर बोला

● हितेश कुमार शर्मा

बंदर बोला अरी बंदरिया,
चल जल्दी से ओढ़ चुनरिया।
हम दोनों की शादी होगी,
मस्ती की आजादी होगी।
फिर हम नैनीताल चलेंगे,
नैना मां के पग छू लेंगे।
मन इच्छा धागा बांधेंगे,
उनसे बसे इतना मांगेंगे।
हम किसी से बैर रहे न,
हम से कोई बैर करे न।
झील नाव में भी बैठेंगे,
कहीं धूप में भी लेटेंगे।
इक दूजे में खोए-खोए,
कुछ जागे कुछ सोए-सोऐ।
नहीं किसी को दुखी करेंगे,
हम दोनों भी सुखी रहेंगे।

- सिविल लाईन, बिजनौर,उ.प्र.
मोबाइल- 9319935979

बारिश

● प्रज्ञा गुप्ता

देखो! बारिश की लगी झड़ी,
आए बच्चे ले अपनी छतरी।
छतरियां तो हैं रंग-बिरंगी,
नीली, पीली और सतरंगी।
दौड़ रहा सड़कों पर पानी,
मस्ती करने की बच्चों ने ठानी।
छतरी लेकर दौड़े बच्चे,
उचक-उचक कर, कूद-कूद कर।
नहा रहे पानी में बच्चे,
नाना-नानी, दादा-दादी।
देख रहे थे हक्के-बक्के,
नानी, दादी, चाची चिल्लाई।
फिर भी बात समझ न आई,
दादा लाए एक छड़ी।
दिन में आये तारे आये नगर,
भाग गये सब अपने-अपने घर।

- 14 श्री माधव विलाज कॉलोनी,
लोधा,बांसवाड़ा, राजस्थान
मोबाइल- 9414397789

मेरे दादाजी

● डॉ. राजेंद्र प्रसाद 'मधुवन'

दादा रहते सदा गांव में,
गतिविधि उनकी अजब निराली।
खूब सबेरे उठ जाते हैं,
छूते नहीं चाय की प्याली।
जब दादा मेरे घर आते,
गाजर आम बहुत सा लाते।
दूध, दही, पेड़ा भी लाते,
उनके प्यार मुझे हैं भाते।
वे अनेक थैले भी लाते,
चावल-दाल देख मन भाते।
ओल सहित नीबू भी लाते,
चटनी हम सब जमकर खाते।
जब-जब घर आते दादाजी,
दिखती आंगन पर खुशहाली।
बनते भोजन रंग-बिरंगे,
आती ज्यों होली मतवाली।

- मधुबनी, बिहार
मोबाइल-7870280808

गणतंत्र

● अरशद परवेज 'भावुक'

फिर आया गणतंत्र हमारा,
महकी देश की गलियां।
लाल किले की किस्मत चमकी,
खिलीं फूल और कलियां।
सड़कें बन गई मंच जहां पर,
आई जवानों की टोलियां।
एक जगह फिर हुई इकट्ठा,
विभिन्न प्रांतों की बोलियां।
अलग-अलग बेषभूषा है सबकी,
साड़ी घाघरा चोलियां।
आओ हम भी दुआ करें सब,
बना-बना कर टोलियां।
प्रेम से मनाएं भारत में,
ईद, दीवाली, होलियां।

- रा.इ.का. पव्वाधार, पिथौरागढ़
मोबाइल-9837544181

आया बसंत

● डॉ. रामनिवास 'मानव'

आया बसंत,
गुनगुनी-सी धूप,
शीत का अंत।
खिले हैं फूल,
जैसे सुंदर बच्चे
सने हैं धूल।
देखो तितली!
बादल में बिजली
जैसे मचली।
गाती कोयल,
दुल्हन बनी बैठी,
है बुलबुल।
नाचता मोर,
पंख इंद्रधनुषी
ज्यों चितचोर।
छाई है मस्ती,
झूम रहा मोगरा,
बेल हंसती।

- 571, सैक्टर-1, पार्ट-2, नारनौल (हरियाणा)
मोबाइल- 8053545632

बालप्रहरी समाचार

बासोट(भिकियासैण)। बालप्रहरी,बालसाहित्य संस्थान तथा भारत ज्ञान विज्ञान समिति के संयुक्त तत्वावधान में 10 से 14 जनवरी, 2021 तक आर. सी.एम. पब्लिक स्कूल बासोट में आयोजित बच्चों की अभिव्यक्ति कार्यशाला को संबोधित करते हुए भिक्यिासैण के खंड शिक्षा अधिकारी श्री हिमांशु नौगाई ने कहा कि बच्चों को यदि अवसर दिया जाए तो वे काफी आगे बढ़ सकते हैं। उन्होंने कहा कि बच्चे क्या,क्यों कैसे जैसे सवाल करना सीखें इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है। कार्यशाला में शामिल विभिन्न स्कूलों के 70 बच्चों ने बालप्रहरी, बाल मुस्कान, बाल वाणी, बाल भारती, ज्योति,नई किरण, बुरांस आदि नामों से अपनी-अपनी हस्तलिखित पुस्तकें तैयार की। समापन समारोह में बच्चों ने नुक्कड़, नाटक, कवि सम्मेलन, समूह गीत तथा कुमाऊनी लोकनृत्य तथा झोड़े प्रस्तुत किए। बालप्रहरी संपादक उदय किरौला, गिरै कौतिक एवं सांस्कृतिक विकास समिति के अध्यक्ष एवं कार्यशाला संयोजक कृपालसिंह शीला, किशनसिंह भंडारी, ललित मोहन सिंह बिष्ट,संदीप खुल्बे, महमूद रजा, नंदकिशोर उप्रेती, मोहनचंद्र गड़कोटी, दीवानसिंह, कविता बिष्ट, ज्योतिष चंद्र उप्रेती, हेमंत कुमार आदि ने संदर्भ व्यक्ति बतौर भागीदारी की। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्रीमती पूनम सिसोदिया क्षेत्रीय उप राजस्व निरीक्षक ने सभी बच्चों को अपनी ओर से पुरस्कार दिए। समापन समारोह में कृपालसिंह शीला द्वारा संपादित हस्तलिखित पत्रिका 'बासोट दर्पण' का लोकार्पण किया गया। समापन समारोह में उदय किरौला द्वारा बच्चों को 'टोपी लाल की कहानी' सुनाई गई। संचालन आर.सी.एम.पब्लिक स्कूल की कक्षा 7 की खुशी कड़ाकोटी ने किया।

11 वां राष्ट्रीय बालसाहित्यकार वेबीनार 2020

सलूंबर (राजस्थान)। साहित्यिक संस्था 'सलिला' तथा बालप्रहरी के सयुंक्त तत्वावधान में आयोजित 'वर्चुअल शोध पत्र वाचन एवं कवि दरबार' कार्यक्रम में हरसन मेधवाल ने बालसाहित्य पर अपना शोध पत्र पढ़ा। कार्यक्रम में डॉ. रामनिवास 'मानव', गौरव बाजपेयी 'स्वप्निल', उषा सोमानी, प्रभुदयाल श्रीवास्तव, राकेश चक्र, बलदाऊराम साहू, डॉ. फहीम अहमद तथा तरूणकुमार दाधीच की कविताओं का पाठ जाहनवी शर्मा, इशिता श्रीवास्तव, आराधना गौरव, अरना गौरव, अदिति चोकड़ा, आरोही माहेश्वरी, आस्था, आयुष, काव्या चौधरी, अथर्व साहू, अब्दुल हादी, शिबा शबनम, मृगांक दाधीच व भव्यांशी आदि बच्चों ने किया। मुख्य अतिथि प्रख्यात साहित्यकार तथा सिघानिया विश्वविद्याालय पचेरी बड़ी, राजस्थान के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ.राम निवास 'मानव' ने बालसाहित्य के विभिन्न पक्षों को रखा। सलिला संस्था सलूंबर की अध्यक्ष डॉ. विमला भंडारी ने संस्था की गतिविधियों की जानकारी देते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। अध्यक्षता उदय किरौला तथा संचालन कोटा की साहित्यकार रेनू श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में पूर्वी पोरवाल ने सरस्वती वंदना के साथ स्वरचित कविता प्रस्तुत की।

बालप्रहरी की ऑनलाइन गतिविधियां

अल्मोड़ा। बालप्रहरी तथा बालसाहित्य अल्मोड़ा द्वारा दूसरे चरण में आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम में सर्वश्री ललित शौर्य,कुसमु अग्रवाल, समीर गांगुली, डॉ. मंजरी शुक्ला, सीमा जैन, डॉ. अर्चना सेंथिया गौड़, डॉ. शील कौशिक, कमलेश चौधरी, हरदान हर्ष, डॉ. देशबंधु शाहजहांपुरी, संगीता सेठी, करूणा पांडेय ने बच्चों को कहानी सुनाई, जिस पर बच्चों ने अपनी प्रतिक्रिया दी। सर्वश्री डॉ. नागेश पांडेय, डॉ. शील कौशिक, रजनीकांत शुक्ल, नंदकिशोर हटवाल,डॉ. संजीव जायसवाल, विमला भंडारी, डॉ. शशिभूषण बड़ौनी,डॉ.नीलम राकेश, लक्ष्मी खन्ना 'सुमन',गोविंद शर्मा, मोहम्मद अरशद खान, डॉ. दर्शनसिंह आशट,डॉ.महावीर रवांल्टा, गोविंद भारद्वाज, सुधा भार्गव, मनोहर चमोली, डॉ. कुसुम नैथानी, डॉ. भगवतीप्रसाद द्विवेदी, करूणा पांडेय, रमेशचंद्र पंत, राजेंद्रप्रसाद श्रीवास्तव, ओमप्रकाश क्षत्रिय, इंजी. आशा शर्मा, रावेंद्र कुमार 'रवि', संगीता सेठी ने अलग-अलग सत्रों में बच्चों को कहानी लेखन की बारीकियां बताई। त्वरित भाषण, कवि सम्मेलन, आंचलिक लोकगीत, देश भक्ति गीत गायन, पहेली वाचन, पत्र वाचन तथा खुली चर्चा तथा कवि सम्मेलन आदि कार्यक्रमों में डॉ. प्रभा किरण जैन, हरदेव धीमान,श्याम पलट पांडेय,डॉ. अशोक गुलशन, डॉ. सूरजसिंह नेगी, तपेश भौमिक, प्रकाश तातेड़,डॉ. दिविक रमेश,आकाश सारस्वत,विजय भट्ट,एस.पी. सेमवाल,डॉ.हरिसिंह पाल,डॉ. हयातसिंह रावत, नीरज पंत,डॉ. रामनिवास 'मानव', संचय जैन, श्री उद्धव भयवाल, डॉ.शेषपाल 'शेष', राजा चौरसिया, रावेंद्रकुमार 'रवि',श्यामनारायण श्रीवास्तव, डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता', ओमप्रकाश प्रजापति, डॉ. प्रीतम अपछ्याण,के.पी.एस.अधिकारी, रविकांत खंडेलवाल, कमला मेनन, गौरीशंकर वैश्य, डॉ. प्रभजोत कुलकर्णी, प्रमोद दीक्षित 'मलय', देवेंद्रकुमार सिंह,डॉ.आर.सी.रस्तोगी,गोवर्धन यादव, डॉ. जीवनसिंह खर्कवाल, शशि ओझा, निश्चल, चंद्रप्रकाश पटसारिया, टीकम बोहरा 'अंजाना',प्रदीप शरण भट्ट,लखन प्रतापगढ़ी तथा ओम बधाणी ने बालसाहित्य पर अपनी बात रखी। बालप्रहरी के संरक्षक सेवानिवृत्त आयकर आयुक्त श्यामपलट पांडेय ने ऑनलाइन कार्यक्रमों को बच्चों की प्रतिभा निखारने के लिए उपयोगी बताया।

प्रविष्टियां आमंत्रित

गंगा अधिकारी स्मृति बाल कहानी प्रतियोगिता 2020 तथा 2021 के लिए (किशोर न्याय बोर्ड अल्मोड़ा के सदस्य, शिक्षाविद् तथा बालप्रहरी के संरक्षक सदस्य श्री के.पी.एस.अधिकारी निवासी पूजाखेत, द्वाराहाट द्वारा अपनी पत्नी स्व. गंगा अधिकारी की स्मृति में प्रायोजित)अखिल भारतीय स्तर पर प्रविष्टियां आमंत्रित की जाती हैं। प्रविष्टि के तहत बच्चों के मन में वैज्ञानिक सोच जाग्रत करने विषयक एक सर्वश्रेष्ठ बाल कहानी तीन प्रतियों में साफ-साफ लिखावट अथवा टाइप करवाकर भेजी जानी है। चयनित प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय कहानी पर क्रमश- 2500, 1500 तथा 1100 रुपए की धनराशि दी जाएगी। पांच अन्य श्रेष्ठ कहानियों पर एक-एक हजार रुपए की धनराशि दी/भेजी जाएगी।

पुष्पलता जोशी स्मृति बाल कहानी प्रतियोगिता 2020 तथा 2021(सेवानिवृत्त उप शिक्षा निदेशक विपिनचंद्र जोशी, त. जोशीखोला, अल्मोड़ा द्वारा अपनी पत्नी स्व. पुष्पलता जोशी की स्मृति में स्थापित) के लिए अखिल भारतीय स्तर पर महिला रचनाकारों से प्रविष्टियां आमंत्रित की जाती हैं। इसके लिए महिला रचनाकारों को बालिका शिक्षा अथवा वैज्ञानिक सोच पर आधारित अपनी एक मौलिक एवं अप्रकाशित बाल कहानी तीन प्रतियों में भेजनी है। चयनित तीन कहानियों में से प्रत्येक को 1000 रुपए की धनराशि दी/भेजी जाएगी।

बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा, बालसाहित्य सम्मान 2021 के लिए अखिल भारतीय स्तर पर प्रविष्टियों के तहत लोरी गीत, शिशु गीत, बाल गीत, बाल कविता, बाल कहानी, बाल उपन्यास, बाल जीवनी, यात्रा वृतांत,संस्मरण, बाल एकांकी आदि विधाओं की 2016 से 2020 तक प्रकाशित पुस्तकों की 3-3 प्रतियां भेजनी हैं। सम्मान हेतु चयनित 10 साहित्यकारों को मई/जून, 2021 में उत्तराखंड में आयोजित राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठी में उपस्थित होने पर 2100/ रुपए नकद, प्रशस्ति पत्र, शॉल तथा स्मृति चिह्न भेंट किया जाएगा। यह सम्मान समारोह में उपस्थित होने पर ही दिया जाना है।

प्रविष्टि के साथ अपना फोटो तथा बॉयोडाटा 1अप्रैल,2021 तक सचिव बालसाहित्य संस्थान, दरबारीनगर,अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601 के पते पर भेजा जाना है। जिन साहित्यकारों ने विगत वर्ष में अपनी पुस्तकें/कहानियां भेजी हैं । कोरोना में उन पर विचार नहीं हो पाया। उनकी पुस्तकें /कहानियां इस बार शामिल की जाएंगी। दोनों कहानियों के पुरस्कार की धनराशि समारोह में दी जाएगी अथवा चैक से भेज दी जाएगी।

अलग-अलग प्रविष्टि की विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाइड **www.balprahri.com** देखे। अथवा मोबाइल नंबर 9412162950 पर संपर्क कर सकते हैं।

.....पृष्ठ 29 का शेष (गुड़िया की समझ)

"दादी! स्कूल में गुरू जी कह रहे थे कि धरती में पानी दिन प्रति दिन कम हो रहा है। हमें फालतू पानी गिराने से बचना चाहिए।"

"दादी! आज से हम एक बार बर्तन भर लेंगे। उसी पानी का उपयोग दिन भर करेंगे।"

''तू इतनी सी बात को लेकर बैठ गई। हवा पानी सब ईश्वर के हाथ है वह बरसेगा। धरती पर पानी ही पानी हो जाएगा। वैसे भी धरती मां के पास पानी की कमी नहीं है। .... कभी पानी खत्म नहीं हुआ अब क्या होगा? धरती मैया आज की थोड़े ही हैं? धरती ..... ऐसा नहीं बोलते।'' दादी ने कहा।

"नहीं दादी! पानी तो वृक्षों से होता है। अब वृक्ष भी तो कम हो रहे हैं? फिर धरती मां पानी कहां से देगी। पानी के लिए तो पेड़ भी लगाना पड़ेगा।"

''चल पहले खाना खा। देख तेरी सहेली घर से खा कर आ भी गई खेलने के वास्ते। और तू ज्ञान बांटने में लगी है।'' दादी ने गुड़िया को बीच में रोकते हुए कहा।

''पूछ लो दादी! इसी से गुरू जी ने कहा या नहीं।'' क्यों शालू? शालू की ओर इशारा करते हुए गुड़िया ने कहा।

"हां आज गुरू जी ने ऐसा ही पढ़ाया।" शालू ने दादी को बताया। "कोई बात नहीं आज से फालतू पानी नहीं बहाएंगे। समरसेबुल पंप के लिए जिद भी तो तूने ..... ही की थी ना।"

"हां दादी! मैं ने ही कहा था पर अब हम पानी को संभालकर रखेंगे तथा दूसरों को भी समझाएंगे।

चलो शालू आज गांव में घूम-घूम ऐसा ही करते हैं। 22 मार्च भी आने वाला है इस दिन जल सरंक्षण दिवस होता है। गुरू जी ने ये भी बताया था। इस दिन हम जल जागरूकता रैली भी निकालेंगे। ताकि लोग समझ सकें ओर पानी बचा सकें।

- राजकीय इंटर कालेज हवलबाग, अल्मोड़ा
मोबाइल- 9411703669

खोजबीन

नीचे दिए गए शब्दों में कम से कम 8 फलों के नाम छिपे हैं। उन्हें ढूंढिए

ता सं ना से अं ला
आ गू रा पी हा अ
प के म र त ब डू

पुस्तक प्राप्ति

पुस्तक : जय भारत जय भारती
रचनाकार : हितेशकुमार शर्मा
संपर्क : गणपति भवन, सिविल लाइंस, बिजनौर, उ.प्र. 246701

पुस्तक : यादों मोरि बै
रचनाकार : आनंदबल्लभ जोशी
संपर्क : ढूंगाधारा,अल्मोड़ा

पुस्तक : प्रीतम सतसई
रचनाकार : डॉ. प्रीतम अपछ्याण
संपर्क : राजकीय इंटर कालेज अमस्यारी, बागेश्वर

पुस्तक : सुचिता
रचनाकार : गणेशदत्त भट्ट 'परिजन'
संपर्क : लोअर माल रोड, खत्याड़ी, अल्मोड़ा-263601

पत्रिका : बाल तरंग..
संपादक : बृजमोहन जोशी
संपर्क : योगेश जोशी मैमोरियल शिव शक्ति पब्लिक स्कूल देवीधूरा, चंपावत

पुस्तक : अद्‌भुत संकलन
सपादक : ओमप्रकाश गुप्ता
संपर्क : जी 40 सरस्वती वाटिका, सरस्वती लोक कॉलोनी, देहली रोड, मेरठ- 250002

पुस्तक : बच्चों की दुनिया मुस्काई
रचनाकार: डॉ. रेनू सिरोया
संपर्क : पुस्तक सदन, 231 बापू बाजार, उदयपुर, राजस्थान

पुस्तक : कोराना (दोहा संग्रह)
रचनाकार : अश्वनीकुमार पाठक
संपर्क : ब्राह्मणपुरा, सिहोरा, जबलपुर, म.प्र.-483225

पुस्तक : श्वान और इंसान
रचनाकार: डॉ. गौरीशंकर श्रीवास्तव 'पथिक'
संपर्क : पथिक कुटीर, गली 5, जवाहरनगर,सतना,म.प्र.

पुस्तक : हमारे अविस्मरणीय दिवस
रचनाकार: डॉ. सुरेंद्रदत्त सेमल्टी
प्रकाशक : बिनसर हिमालय, 8 प्रथम तल, 4 डिस्पेंसरी रोड, देहरादून

पुस्तक : अंध भक्ति
रचनाकार: डॉ. रामदुलारसिंह 'पराया'
संपर्क : उदितनगर,कुसुम्ही,चुनार, मिर्जापुर, म.प्र.-231304

पुस्तक : भारतीय समाज संस्कृतिःअतीत से वर्तमान
रचनाकार : आनंदसिंह ठठोला
संपर्क : राज मार्किट, निकट एस.डी.एम. कोर्ट, नैनीताल रोड, हल्द्वानी

पत्रिका : पुरवासी
संपादक : श्री शिवचरण पांडे
संपर्क : श्री लक्ष्मी भंडार, हुक्का क्लब अल्मोड़ा

पत्रिका : जी एस के शिष्ट विनोद
संपादक : अमरेंद्रकुमार सिंह
संपर्क : पोस्ट बॉक्स 9645 बी-1 जनकपुरी डाकघर, नई दिल्ली 110058

पत्रिका : अक्षरा
संपादक : कैलाशचंद्र पंत
संपर्क : म. प्र.राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,हिंदी भवन,श्यामला हिल्स,भोपाल, म.प्र.

पत्रिका : उजाला
संपादक : लायक राम 'मानव'
प्रकाशक : साक्षरता निकेतन,मानसनगर, कानपुर रोड, लखनऊ-226023

पत्रिका : सरस्वती सुमन
संपादक : डॉ. आनंदसुमन सिंह
संपर्क : सारस्वतम्, 1 छिब्बर मार्ग, आर्यनगर, देहरादून- 248001

पत्रिका : कुमगढ़
संपादक : दामोदर जोशी 'देवांशु'
संपर्क : पश्चिमी खेड़ा, काठगोदाम, नैनीताल-263126

बालप्रहरी बाल क्लब

गरिमा जोशी
अल्मोड़ा

शिवांशी शर्मा
रायपुर, छत्तीसगढ़

आशिमा शर्मा
ज्यौड़िया, जम्मू

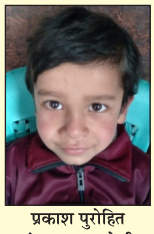
प्रकाश पुरोहित
नंदप्रयाग, चमोली

अंतरा गैड़ा
खटीमा, ऊ.सिं. नगर

अस्मिता कांडपाल
बासोट, भिकियासैण

तन्मय जोशी
डीडीहाट पिथौरागढ़

हितैषी तिवारी
हल्द्वानी

सृजन भट्ट
पौड़ी

ऋषभ जोशी
खटीमा

अदिति चोकड़ा
अहमदाबाद, गुजरात

आयरा अल्वी
खटीमा, ऊ.सिं.न.

कौस्तुभ मेनारिया
उदयपुर, राजस्थान

देवरक्षिता नेगी
चौखुटिया

स्मिता
चमोली

अंशिका फुलारा
खटीमा, ऊ.सिं.न.

सिमरन गोबाड़ी
खटीमा, ऊ.सि.न.

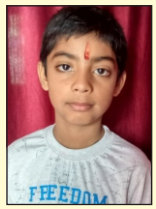
कार्तिक जोशी
खटीमा, ऊ.सिं.न.

सुमन मंडल
दिनेशपुर, ऊ.सिं.न.

इधांत जोशी
देवीधूरा, चंपावत

लक्षिका शर्मा
दुगालखोला, अल्मोड़ा

नेहा पाण्डे
अल्मोड़ा

आरना गौरव
बलरामपुर उ.प्र.

पूर्वांशी ध्यानी
धूमाकोट, पौड़ी

वेदवित ओझा
भीलवाड़ा राजस्थान

सुविज्ञा शर्मा
दतिया, म.प्र.

देवयानी जोशी
उदयपुर, राजस्थान

पंजीकरण संख्या : 072020001874

बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा,उत्तराखंड

दरबारीनगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601

Web : www.balprahri.com E mail : balprahri@gmail.com Phone : 05962-297239 मोबा.: 9412162950

✦ सन् 2004 से त्रैमासिक बाल पत्रिका बालप्रहरी का नियमित प्रकाशन (पत्रिका के प्रत्येक अंक में लगभग 12 से अधिक पृष्ठों पर लगभग 50 बच्चों की रचनाओं का प्रकाशन) ✦ बाल पुस्तकालय का संचालन। ✦ आई.एस.बी.एन. नंबर सहित 25 पुस्तकों का प्रकाशन। ✦ बाल मेले/बाल विज्ञान मेले/पर्यावरण मेले/बच्चों की लेखन कार्यशाला सहित 1987 से अभी तक बच्चों की 5 दिवसीय 280 कार्यशालाओं का जन सहयोग से आयोजन। ✦ बालसाहित्य पर स्थानीय स्तर की कार्यशालाएं। ✦ सन 2006 से प्रतिवर्ष जून माह में बालसाहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन। ✦ बालसाहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अभी तक 185 बालसाहित्यकारों का जन सहयोग से सम्मान। ✦ 'उत्तराखंड के बालसाहित्य रचनाकार एवं उनका रचना संसार' ग्रंथ प्रकाशनाधीन। ✦ हिंदी के साथ ही कुमाउनी तथा अन्य आंचलिक भाषाओं में बालसाहित्य लेखन को बढ़ावा। ✦ कोरोना काल में ऑनलाइन कविता/कहानी लेखन कार्यशाला, पत्र लेखन कार्यशाला, बाल कवि सम्मेलन, कहानी वाचन, कविता वाचन, परिचर्चा, भाषण, कुमाउनी भाषण, चित्रकला, चुटकुलों, पहेलियों की कार्यशाला में लगभग 255 बच्चों की सहभागिता।

बालप्रहरी/बालसाहित्य संस्थान को मित्रों/शुभचिंतकों से सहयोग एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा है।

(रतनसिंह किरमोलिया)	(नीरज पंत)	(प्रकाश जोशी)	(उदय किरौला)
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	सचिव

सदस्य: ✦ सर्वश्री मोहनलाल टम्टा ✦ प्रमोद तिवारी ✦ डॉ. महेंद्रप्रताप पांडेय 'नंद' ✦ गरिमा राना ✦ अनिल पुनेठा

देवरक्षिता नेगी, कक्षा - 4
चौखुटिया, अल्मोड़ा

वसुधा,
कोलंबस स्कूल, रूद्रपुर

आइसा, कक्षा - 6
राजकीय जूनियर हाईस्कूल, हरमनी, चमोली

वरूणिका गुरूरानी, कक्षा-5
ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल, अल्मोड़ा

अवंतिका ओझा, कक्षा-1
नवजीवन प. स्कूल भीलवाड़ा, राजस्थान

भाष्कर उप्रेती, कक्षा - 9
इन्टर कालेज बासोट, अल्मोड़ा

पिंकी भंडारी, कक्षा-6
रा.क.उ.मा.वि. बासोट, भिकियासैण

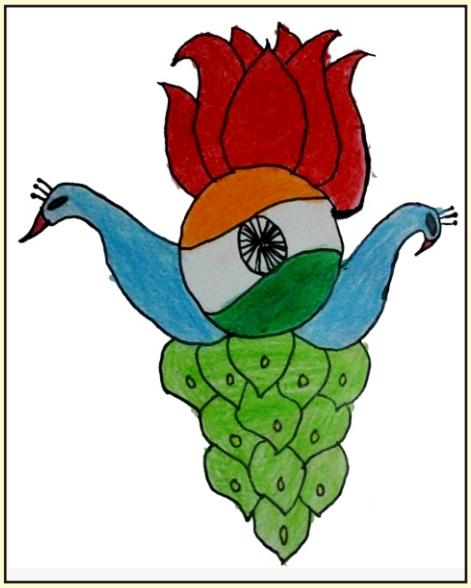

वैष्णवी नेगी, कक्षा - 5, आर.जे. पब्लिक स्कूल, दिल्ली

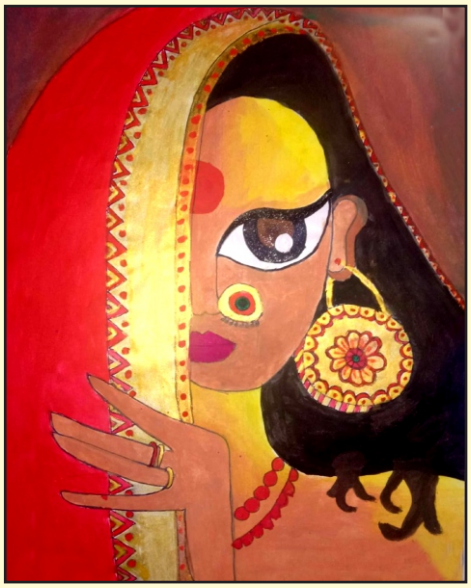

आद्या त्रिपाठी, कक्षा-9, लोहाघाट, चंपावत

प्रेषक : संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा, उत्तराखंड। मो. 9412162950

सेवा में,

RNI No. UTTHIN/2004/18604

मुद्रक : प्रकाश पब्लिकेशन, हल्द्वानी। मो. : 9412092336, 9761464264